सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
www.newsparivahan.com
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023
परिवहन विशेष
छठ पूजा
वर्ष 03, अंक 231, नई दिल्ली, मंगलवार 28 अक्टूबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

02 अपने पैरों के तलवों पर तेल लगाएँ
06 अनाज उत्पादन और कुपोषण का दायरा
08 एनसीपी बिहार में जनता की अनकही पीड़ा का संवाहक बनेगी...

2005 में समाचारों में सुनते, पढ़ते और देखते थे, यह देखिए वो देखिए ब्ल्यू लाइन का कहर क्यू की बसे पब्लिक की थी, अब पूंजीपति और नेताओ की दिल्ली में बसे चल रहीं हैं और लगातार कहर ढा रही हैं पर सब न्यूज चैनल वाले पता नहीं क्यों है चुप

परिवहन विशेष न्यूज

1. ☞ दिल्ली के बरवाला चौक पर डीटीसी बस ने 4 वाहनों को टक्कर मार दी 1 इसमें 2 कारें व अन्य वाहन शामिल है 1

2. ☞ नन्द नगरी थाना क्षेत्र स्थित गगन सिनेमा के सामने डीटीसी बस ने पीसीआर वैन को टक्कर मार दी 1 टक्कर इतनी जोरदार थी कि वैन मंदिर में जा घुसी , और मंदिर का एक बड़ा हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया , दीवारें गिर गई और अंदर सो रहे 2 शख्स गंभीर रूप से घायल हो गए 1

☞ इस हादसे की वजह से पीसीआर वैन के पुलिसकर्मी भी घायल हुए है, एक की हालत नाजुक है 1

☝ दिल्ली की सड़कों पर मौत बनकर दौड़ती ये बसें, इन बसों को डीटीसी के प्रशिक्षित व अनुभवी ड्राइवरों की बजाए निजी कंपनियों के ड्राइवरों से चलवाया जा रहा है 1 ☟

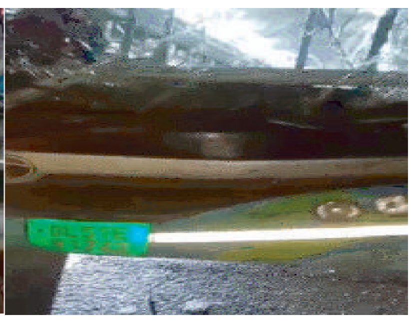

☝ दिल्ली की परिवहन व्यवस्था निजी कंपनियों के हाथ में देने का परिणाम गंभीर परिणाम सामने आने लगे है आए दिन इन बसों से एक्सीडेंट हो रहे है, और कुछ एक्सीडेंट में तो लोगों की जान तक जा रहीं है इतने अधिक एक्सीडेंट हो रहे है व दिल्ली की जनता को सुरक्षित सफर देने में ये निजी कंपनिया नाकाम हो चुकी है, इसे ध्यान में रखते हुए दिल्ली सरकार को इन बसों पर इन निजी कंपनियों के चालकों की जगह डीटीसी के अपने प्रशिक्षित व अनुभवी चालक नियुक्त करने चाहिए ,सभी बसों का परिचालन पुनः अपने अधीन लेना चाहिए

डीटीसी कर्मचारी एकता यूनियन कहना चाहती है कि दिल्ली को जानबूझकर फिर से ब्लू लाइन किलर लाइन का आतंक सरकार द्वारा दिखाया जा रहा है सरकार के लिए तो सिर्फ आंकड़े होते हैं एक मर गया ,दो मर गए, तीन मर गए, लेकिन दिल्ली की जनता के कितनों के घर के चिराग बुझ चुके हैं और न जाने कितनों के ये बुझाकर मानेगे यह आंकड़ा कहां पहुंचाना चाहती है सरकार इस पर संज्ञान क्यों नहीं ले रही प्राइवेट मालिकों को फायदा पहुंचाने के लिए इन ड्राइवर की नियुक्ति की गई है लेकिन यह दिल्ली का काल बनकर दिल्ली की जनता पर मंडरा रहे हैं जबकि प्रशिक्षित अनुभवी ड्राइवर डीटीसी के पास खाली घूम रहे हैं दिल्ली की जनता को जानबूझकर मौत के मुंह में धकेला जा रहा है और इसका फायदा प्राइवेट मालिकों को दिया जा रहा है डीसी की बस ऐसा कोई कांड अगर कर देती तो अब तक हाहाकार मच जाता सारे पत्रकार खुलकर डीसी के सारे अधिकारी दिल्ली के मंत्री सड़कों पर आ जाते लेकिन यह प्राइवेट कंपनियों की गाड़ियां हैं प्राइवेट ड्राइवर हैं अब इनके खिलाफ कोई बोलने को तैयार नहीं हो रहा क्या जनता को यह है सब चुपचाप सहन करना पड़ेगा यह तत्काल प्रभाव से बंद होना चाहिए नहीं तो यूनियन कर्मचारी और दिल्ली की पब्लिक को लेकर आंदोलन शुरू होगा।

सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय द्वारा राजपत्र में प्रकाशित प्रारूप नियमों पर सुझाव एवं आपत्तियाँ

प्रेषक:
राष्ट्रीय ड्राइवर संयुक्त मोर्चा समिति
(देश के ड्राइवरों का राष्ट्रीय संगठन)
मुख्यालय: अम्बावता पार्क, जौनापुर, नई दिल्ली
संस्थापक: सुमेर अम्बावता एवं शैलेश पाठक

प्रति
माननीय सचिव,
सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय (MoRTH)
भारत सरकार, नई दिल्ली

दिनांक 29 सितम्बर 2025 को राजपत्र में प्रकाशित केंद्रीय मोटरयान नियम, 1989 में प्रस्तावित संशोधनों पर आपत्तियाँ एवं सुझाव।

प्रस्तावना

हम सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय (MoRTH) के इस सराहनीय प्रयास की प्रशंसा करते हैं कि मंत्रालय ने दिनांक 29 सितम्बर 2025 को सड़क सुरक्षा, डिजिटल प्रवर्तन एवं पारदर्शिता को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से केंद्रीय मोटरयान नियम, 1989 में संशोधन हेतु प्रारूप नियम जारी किए हैं।

मंत्रालय के इस जनहितकारी प्रयास का स्वागत करते हुए, हम निम्नलिखित सुझाव एवं आपत्तियाँ आदरपूर्वक प्रस्तुत कर रहे हैं, ताकि प्रस्तावित नियम व्यवहारिक, न्यायसंगत एवं दुरुपयोग-मुक्त रूप में लागू हो सकें।

विचारणीय प्रस्तावित नियम

1. नियम 21(25) — पाँच या अधिक उल्लंघनों की स्थिति में कार्रवाई।
2. नियम 167 — चालान जारी करने तथा उसके भुगतान की प्रक्रिया।
3. नियम 167A (संशोधन) — ई-चालान जारी करने, नोटिस भेजने एवं रिकॉर्ड संधारण से संबंधित प्रावधान।

I. नियम 21(25): पाँच या अधिक उल्लंघनों की स्थिति में कार्रवाई

आपत्ति: सिर्फ पाँच चालानों के आधार पर वाहन स्वामी या चालक के विरुद्ध दंडात्मक अथवा प्रशासनिक कार्रवाई करना मनमाना एवं अन्यायपूर्ण है, विशेषकर तब जब किसी प्रकार की जाँच या सुनवाई का अवसर न दिया जाए।

व्यवहारिक कठिनाइयाँ:

अलग-अलग राज्यों में प्रवर्तन प्रणाली भिन्न होने से चालान डेटा असंगत रहता है।

अनेक चालान बिना सत्यापन या गलत तकनीकी आधार पर दर्ज हो जाते हैं।

चालान भुगतान के बाद भी कई बार VAHAN पोर्टल से हटाए नहीं जाते, जिससे भ्रष्टाचार की संभावना बढ़ती है।

केवल चालानों की संख्या के आधार पर दंड देना ईमानदार वाहन मालिकों के लिए अन्यायपूर्ण होगा।

सुझाव: किसी भी कार्रवाई से पूर्व संबंधित व्यक्ति को सुनवाई का अवसर दिया जाए।

केवल न्यायिक रूप से पुष्टि (finalised) चालान ही गणना में आएं।

एक स्वतंत्र अपीलीय/शिकायत निवारण प्राधिकरण गठित किया जाए।

II. नियम 167: चालान जारी करने और भुगतान की प्रक्रिया

1. नियम 167(1) एवं (2): अधिकारों का दुरुपयोग

इन उपनियमों से प्रवर्तन अधिकारियों को अत्यधिक अधिकार प्राप्त होते हैं, जिससे उत्पीड़न एवं भ्रष्टाचार की संभावना बढ़ती है।

सुझाव: प्रत्येक चालान में अधिकारी का नाम, पद, स्थान, समय और जियो-टैग साक्ष्य अनिवार्य किए जाएँ।

2. नियम 167(3)–(8): समयसीमा एवं डिजिटल समन्वय की कमी

राज्यों में पोर्टल (VAHAN/SARATHI) समन्वय के अभाव में ये प्रावधान व्यवहारिक नहीं हैं।

सुझाव: सभी राज्यों में पहले एकीकृत डिजिटल प्रणाली लागू की जाए।

जब तक यह व्यवस्था न बने, ऑनलाइन व ऑफलाइन चालान समानांतर रूप से न चलें।

3. नियम 167(9): 50% राशि जमा कराए बिना अपील नहीं

यह प्रावधान छोटे परिवहन ऑपरेटरों के लिए अन्यायपूर्ण है और न्यायिक पहुंच को सीमित करता है।

सुझाव: यह प्रावधान संवैधानिक न्याय के सिद्धांतों के विपरीत है, इसे हटाया जाए।

इसके स्थान पर ऑनलाइन विवाद निवारण प्रणाली (ODR) या वर्चुअल ट्रिब्यूनल की व्यवस्था की जाए।

4. नियम 167(12) एवं (13): "Not to be Transacted" स्थिति

लंबित चालानों के कारण वाहन या लाइसेंस से संबंधित सभी कार्य रोक देना अव्यवहारिक एवं आर्थिक रूप से हानिकारक होगा।

सुझाव: किसी भी कार्रवाई से पहले व्यक्ति को अफिडेविट/अंडरटेकिंग देने का अवसर मिले।

वाहन जब्ती केवल वरिष्ठ अधिकारी की लिखित अनुमति एवं इंटर-डिपार्टमेंट टीम की उपस्थिति में हो।

एक केंद्रीय शिकायत निवारण पोर्टल/हेल्पलाइन बनाई जाए ताकि पारदर्शिता सुनिश्चित हो।

निष्कर्ष : हम मंत्रालय के उद्देश्यों का पूर्ण सम्मान करते हैं कि वे सड़क सुरक्षा एवं पारदर्शिता को सुदृढ़ करना चाहते हैं।

परंतु, वर्तमान प्रवर्तन प्रणाली की कमियों और भ्रष्टाचार की आशंकाओं को देखते हुए यह आवश्यक है कि प्रस्तावित नियम:

1. संतुलित एवं न्यायसंगत रूप में लागू हों,
2. सभी राज्यों में एकीकृत रूप से क्रियान्वित किए जाएँ,
3. तथा हर चालक को प्राकृतिक न्याय का अवसर प्राप्त हो।

यदि उपर्युक्त आपत्तियाँ एवं सुझाव स्वीकार नहीं किए जाते, तो हमारी संस्था न्यायिक उपायों की ओर जाने हेतु बाध्य होगी।

लाइसेंस धारक/प्रतिनिधि
राष्ट्रीय ड्राइवर संयुक्त मोर्चा समिति

"टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत" सेवा ही संकल्प है!

पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट

हमारा मकसद सिर्फ मदद नहीं, बदलाव लाना है।

A voice for the voiceless, and a hand for the helpless.

हमारा उद्देश्य है समाज के उन हिस्सों तक पहुँचना जो आज भी भूख, शिक्षा और आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। हम जरूरतमंदों को बिना भेदभाव के भोजन, बच्चों को मुफ़्त शिक्षा, और समाज को जागरूकता देने का कार्य कर रहे हैं।

क्या मिलेगा हमसे जुड़कर

Ground-level food distribution,

Getting children free education,

हम मानते हैं – छोटा कदम भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

If you believe in humanity, equality, and service — then you're already a part of our family.

हमें सपोर्ट करें और एक आवाज़ बनें इस बदलाव की।

Together, let's serve. Together, let's change.

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से जुड़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें और फार्म भरकर जुड़े,

www.tolwa.com/member.html

स्कैनर को स्कैन कर के भी आप टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से फार्म भर कर जुड़ सकते हैं,

वेब साइट पर www.tolwa.com पर भी जाकर आप फार्म भर के टोलवा ट्रस्ट से जुड़ सकते हैं। www.tolwa.com

SCAN ME

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
tolwaindia@gmail.com
www.tolwa.com

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

कलौंजी (मैंग्रेल) को इस जमाने की संजीवनी भी बोल सकते हैं....

कलौंजी को अक्सर सभी लोग पहचानते होंगे, कभी ना कभी अपने किचन में देखे होंगे ।

इसका प्रयोग लोग किचन में मसाले के रूप में,खाने का स्वाद बढ़ाने के लिए करते हैं। कलौंजी को न सिर्फ स्वाद बढ़ाने के लिए किया जाता है,बल्कि यह बड़े से बड़े बीमारी को ठीक करने के लिए औषधि के रूप में इसको बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है। कलौंजी में फाइबर विटामिन प्रोटीन अमीनो एसिड फैटी एसिड के साथ-साथ अन्य कई पोषक तत्व पाए जाते हैं । कलौंजी में antiviral, anti inflammatory antioxidant, aunty fungal, antiparasite antibacterial anti microbial गुण मौजूद होते हैं ।

इस लिए कलौंजी यानी कि मंगरेल को ,,मौत के सिवा हर मर्ज की दवा,, भी कहा जाता है।

आईए जानते हैं कलौंजी के ढेर सारे औषधिय गुणों के बारे में:

गैस में फायदेमंद: - कलौंजी, जीरा, अजवाइन और बराबर मात्रा में लेकर कूट पीसकर पाउडर बनाकर आधा-आधा चम्मच खाना खाने के पश्चात सेवन करने से पेट के गैस से राहत मिलती है।

पेशाब की जलन में फायदेमंद: - एक गिलास दूध में आधा चम्मच कलौंजी का तेल और एक चम्मच शहद मिलकर पीने से पेशाब की जलन दूर होती है।

स्मरण शक्ति बढ़ाता है: - एक चौथाई चम्मच कलौंजी का पाउडर, एक चम्मच शहद में मिलकर सुबह शाम खाना खाने के बाद सेवन करने से स्मरण शक्ति बढ़ता है और भूलने की बीमारी दूर हो जाती है।

नपुंसकता दूर करें: - एक चम्मच कलौंजी का तेल और एक चम्मच जैतून का तेल दोनों को मिक्स करके सुबह खाली पेट पीने से नपुंसकता दूर होती है।

खाज खुजली में फायदेमंद: - 50 ग्राम कलौंजी को पीसकर पाउडर बना ले और इसी में 10 ग्राम हल्दी पीसकर मिला कर पेस्ट बना लें इस पेस्ट को खाज खुजली वाली स्थान पर लगाने से खाज खुजली खत्म हो जाता है।

हिचकी में फायदेमंद: -

1. आधा चम्मच कलौंजी का पाउडर दही में मिलाकर खाने से हिचकी से राहत मिलती है।
2. आधा चम्मच कलौंजी का पाउडर मक्खन में मिलाकर खाने से हिचकी से राहत मिलती है ।
3. 3 ग्राम के करीब कलौंजी का पाउडर माथे के साथ सेवन करने से हिचकी आना बंद हो जाता है।

बालों के लिए फायदेमंद: - 50 ग्राम कलौंजी को 1 लीटर पानी में उबाले और जब पानी 750ml यानी कि पवना लीटर बच्चे तो उतार कर रख दे और ठंडा होने दे इस पानी से बालों को धोने से, बालों का झड़ना बंद हो जाता है और बाल लंबे काले घने हो जाते हैं।

सूजन कम करता है: - जिन लोगों के हाथ पैरों में सूजन आ जाता है, कलौंजी के बीज को पीसकर प्रभावित स्थान पर लेप करने से कुछ ही दिनों में सूजन मिट जाते हैं।

स्तनों में दूध को बढ़ाता है: - जिन महिलाओं के स्तनों में दूध की कमी हो जाती है ऐसी महिलाएं कलौंजी 1 ग्राम सुबह शाम खाने से स्तनों में दूध आने लगता है। और दूध की कमी पूरी जाती है।

स्तनों का आकार बढ़ाता है:- 1 ग्राम सुबह 1 ग्राम शाम कलौंजी के पाउडर को खाने से महिलाओं के स्तनों की वृद्धि होती है और सुडौल हो जाते हैं।

महिलाओं के मासिक धर्म में फायदेमंद: -

1. जिन महिलाओं को मासिक धर्म कष्ट से आता है, उनके लिए कलौंजी का पाउडर 1 ग्राम सुबह शाम सेवन करने से मासिक धर्म का कष्ट नष्ट हो जाता है।
2. मासिक धर्म की अनियमितत में कलौंजी का पाउडर 1 ग्राम सुबह शाम सेवन करने से मासिक धर्म समय पर आने लगता है।
3. मासिक धर्म यदि बंद हो गया हो तो आधा चम्मच कलौंजी का तेल और एक चम्मच शहद मिलाकर सुबह शाम आधा गिलास गुनगुना पानी में मिलाकर सेवन करने से मासिक खुलकर आने लगता है और अगर दर्द भी रहता हो तो दर्द भी नष्ट हो जाता है।

नींद का ना आना: - जिन लोगों को रात में नींद नहीं आती जागते रहते हैं करवटें बदलते रहते हैं उन लोगों के लिए- रात में सोने से पहले आधा चम्मच कलौंजी का पाउडर एक चम्मच शहद में मिलाकर सेवन करने से अच्छी नींद आने लगती है।

कैंसर रोग में फायदेमंद: -

1. आंतों का कैंसर, गले का कैंसर, ब्लड कैंसर आदि में कलौंजी का सेवन लाभदायक होता है।
2. एक चम्मच कलौंजी, एक चम्मच मेथी दाना,21 शीशम के पत्ते, 1 इंच अदरक का टुकड़ा, 2 इंच कच्ची हल्दी, 1 आंवला और 2 कली लहसुन इन सभी को 6 कप पानी में पकाएं आधा पानी जल जाने के बाद यानी की तीन कप पानी बचने पर उतार कर रख लें और ठंडा होने दें।
3. एक कप में एक चम्मच जैतून का तेल मिक्स करके सुबह खाली पेट पिला दे। और एक कप दोपहर में नारियल का तेल एक चम्मच मिक्स करके पिला दें। और एक कप में एक चम्मच अरंडी का तेल मिलाकर रात में सोते समय पिला दें।
4. ऐसा नियमित मात्र 15 दिन करने से कैंसर में आश्चर्यजनक लाभ देखने को मिलता है।

पीलिया रोग में फायदेमंद: -

1. एक कप दूध में आधा चम्मच कलौंजी का तेल मिक्स करके सुबह खाली पेट और रात को सोते समय पिलाने से मात्र एक सप्ताह के अंदर पीलिया खत्म हो जाता है।
2. पीलिया रोग में गरम वस्तुओं का सेवन नहीं करना चाहिए
3. खट्टी चीज मिर्च मसाला का परहेज करें।

हर्निया में लाभदायक: - 15 से 20 ml करेले के रस में आधा चम्मच कलौंजी का तेल मिक्स करके सुबह

खाली पेट और रात को खाना खाने के 2 घंटा बाद सेवन करने से हर्निया ठीक हो जाता है।

उल्टी में फायदेमंद: - आधा चम्मच कलौंजी का तेल और आधा चम्मच अदरक का रस मिक्स करके सुबह शाम पिलाने से उल्टी का आना बंद हो जाता है।

सर दर्द में फायदेमंद:-

1. आधा चम्मच कलौंजी का तेल और एक चम्मच शहद मिक्स करके सुबह शाम सेवन करने से सर का दर्द मिट जाता है
2. कलौंजी के बीजों को भूनकर पाउडर बनाकर कपड़े में रखकर सूखने से भी सर के दर्द से आराम मिलता है।
3. कलौंजी का तेल और जैतून का तेल मिक्स करके सर पर मालिश करने से भी सर के दर्द से राहत मिलती है।

पेट दर्द में लाभदायक: -

1. एक गिलास मौसमी के जूस में आधा चम्मच कलौंजी का तेल और दो चम्मच शहद मिलाकर सेवन करने से पेट का दर्द मिट जाता है।
2. एक गिलास नींबू पानी में आधा चम्मच कलौंजी का तेल और दो चम्मच शहद मिलाकर सेवन करने से भी पेट दर्द से राहत मिलती है।

स्वप्नदोष में लाभदायक: - जिन लोगों को स्वप्नदोष की समस्या रहती है अर्थात रात में सोते समय नींद में वीर्य निकल जाता हो तो एक कप सब के जूस में आधा चम्मच कलौंजी का तेल मिलाकर सुबह शाम सेवन करने से स्वप्नदोष की समस्या से राहत मिलती है।

गांठ (सिस्ट) को गलाता है:- शरीर में कहीं भी गांठे होने पर एक चम्मच कलौंजी का तेल और एक चम्मच जैतून का तेल एक कप गुनगुने पानी में मिक्स करके और उसे पानी में नींबू निचोड़ कर सुबह खाली पेट सेवन करने से गांठे गलने लगती हैं। यदि गांठे शरीर के बाहरी हिस्से में हो तो इसके तेल में थोड़ा सा फिटकरी मिलाकर के गांठों पर लगाया जा सकता है।

जोड़ों के दर्द से राहत देता है: - एक गिलास पानी में एक चम्मच सेब का सिरका दो चम्मच शहद और आधा चम्मच कलौंजी का तेल मिक्स करके रात को सोते समय सेवन करने से धीरे-धीरे जोड़ों के दर्द और सूजन खत्म होने लगते हैं।

मुहासे में फायदेमंद: - सिरके में कलौंजी को पीसकर प्रभावित स्थान पर लेप रात में लगाने से मुंहासे ठीक हो जाते हैं।

शुगर में फायदेमंद: - प्रतिदिन 2 ग्राम कलौंजी सेवन करने से तेज हो रहा ग्लूकोज कम हो जाता है।

वजन घटाने में मदद करता है: - कलौंजी,मेथी दाना,दालचीनी, जीरा और सौंफ सबको समान मात्रा में लेकर का पाउडर बनाकर 5/5 ग्राम का काढ़ा बनाकर सुबह-शाम खाना खाने के बाद सेवन करने से मोटापा कम करके वजन को घटाता है।

किडनी के लिए फायदेमंद :- किडनी के विषाक्त पदार्थों को कलौंजी का बीज बाहर निकलने में मदद करता है। पथरी होने से बचाता है। कलौंजी में एंटी इन्फ्लेमेटरी और एंटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं जिसके वजह से किडनी के समग्र स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करते हैं।

हार्ट,बीपी में फायदेमंद :- कलौंजी में एंटी इन्फ्लेमेटरी और एंटीऑक्सीडेंट गुण होने के कारण हार्ट को स्वस्थ रखता है इसके सेवन से कोलेस्ट्रॉल लेवल को नियंत्रित रहता है। इसके लिए कलौंजी 5 ग्राम और मेथी दाना 5 ग्राम दोनों को रात में आधा गिलास पानी में भिगोकर रख दें सुबह खाली पेट पानी छानकर पी ले।

पुरुषों के लिए फायदेमंद: - कलौंजी बीज, अकरकरा धागे वाली मिश्री और तुलसी बीज सबको समान मात्रा में लेकर कोट पीस का पाउडर बनाकर एक चौथाई चम्मच सुबह शाम सेवन करने से पुरुषों के सेक्स से संबंधित सभी बीमारियां नष्ट हो जाती हैं और संभोग करने के टाइम में इजाफा होता है।

बवासीर में फायदेमंद: - कलौंजी ईसबगोल की भूसी,नरकचूर और नींबू का छिलका सब बराबर मात्रा में लेकर कूट पीस कर पाउडर बनाकर रख ले 5 ग्राम सुबह-शाम खाना खाने के बाद सेवन करने से अल्सर कब्जियत और बवासीर में लाभ होता है।

कलौंजी का सेवन कैसे करें

1. कलौंजी के बीजों का सेवन सीधा कर सकते हैं।
2. कलौंजी के बीजों का पाउडर आधा चम्मच, शहद में मिक्स करके लिया जा सकता है।
3. कलौंजी को पानी में उबालकर काढ़ा बनाकर भी सेवन किया जा सकता है।
4. कलौंजी तेल को आधा चम्मच लेकर के शहद में मिलाकर के भी इसका सेवन किया जा सकता है।
5. कलौंजी के पाउडर को दूध में मिक्स करके भी सेवन किया जा सकता है।

नोट:- इसका प्रयोग गर्भवती महिला ना करें वरना गर्भ गिरने का खतरा रहता है।

"Selenium – थकी हुई नसों और कमजोरी के लिए होम्योपैथिक एनर्जी बूस्टर!"

अगर आपको ज़रा-सी मेहनत के बाद थकान, नींद न आने, बाल झड़ने या यौन कमजोरी की शिकायत रहती है — तो समझिए शरीर को Selenium की ज़रूरत है। होम्योपैथी की यह शक्तिशाली दवा शरीर को भीतर से पुनर्जीवित (Rejuvenate) करती है और थकान को जड़ से मिटाती है।

लाभ (Benefits):

शारीरिक और मानसिक कमजोरी दूर करे - लंबे समय तक काम करने, तनाव या बीमारी के बाद आई कमजोरी में बेहद असरदार।

बाल झड़ने और झाइयों में लाभकारी Selenium बालों की जड़ को पोषण देती है और बालों का झड़ना रोकती है।

चेहरे की चमक और त्वचा का ग्लो भी लौटाती है।

यौन शक्ति में वृद्धि - पुरुषों में शीघ्रपतन (Premature Ejaculation) और नपुंसकता जैसी स्थितियों में उपयोगी।

यह दवा नसों को मज़बूती देती है और आत्मविश्वास लौटाती है।

दिमाग और नसों को आराम दे ये थकावट, चिड़चिड़ापन, याददाश्त की कमजोरी और अनिद्रा में लाभदायक।

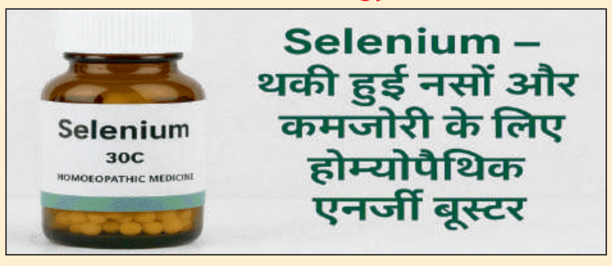

उपयोग (Use):

1. Selenium ३० या २०० पोटेंसी में ली जाती है।
२. 30C के लिए: दिन में २ बार ३ गोलियाँ।
३. २००C के लिए: हफ्ते में १ बार (Doctor की सलाह से)।
4. लंबे समय तक सुरक्षित रूप से उपयोग की जा सकती है।

इलाज / Treatment:

1. Selenium शरीर की हर नस और मांसपेशी को पोषण देती है।
२. यह थकावट, कमजोरी, और यौन दुर्बलता जैसी समस्याओं में अंदर से सुधार लाती है।
३. यह शरीर को ऊर्जा, उत्साह और संतुलन प्रदान करती है।

निष्कर्ष: Selenium एक ऐसी होम्योपैथिक दवा है जो थके हुए शरीर, कमजोर दिमाग, झड़ते बाल, और गिरती शक्ति — इन सबके लिए "Natural Energy Restorer" का काम करती है।

यह दवा आपके शरीर को दोबारा जोश और चमक से भर देती है!

"आँखों की रोशनी बढ़ाने वाली 3 अद्भुत होम्योपैथिक दवाएँ"

जब आँखों में जलन, पानी, थकान या धुंधलापन बढ़ जाए — तो समझिए आँखें मदद माँग रही हैं।

होम्योपैथी में कुछ ऐसी दवाएँ हैं जो सिर्फ लक्षण नहीं मिटातीं, बल्कि आँखों की रोशनी और नसों की ताकत को भी बढ़ाती हैं।

यहाँ ३ बेहतरीन दवाएँ दी गई हैं

1. Euphrasia Officinalis (यूफ्रेशिया ऑफिसिनालिस)

पहचान:

अगर आँखों से लगातार पानी बहता है, जलन होती है, या धूल-धुएँ से परेशानी बढ़ती है।

लाभ (Benefits):

आँखों की जलन, खुजली और लालपन में तुरंत राहत

एलर्जी, धूल या धूप से जलने पर असरदार

कंजंक्टिवाइटिस (आँख आना) में उपयोगी

उपयोग (Use):

३0C पोटेंसी में ३ बार रोज़ाना

आँखों की बूँद (Euphrasia Q, 1 बूंद + 1 कप उबला ठंडा पानी) से भी धो सकते हैं

इलाज / Treatment:

Euphrasia आँखों की नमी और सूजन दोनों को संतुलित करती है। यह उन लोगों के लिए जादुई है जिन्हें स्क्रीन देखने या धूल से आँखों में जलन होती है।

२. Ruta Graveolens (रूटा ग्रेवियोलेन्स)

पहचान:

जब आँखें थकी हुई लगें, काम करते-करते भारी महसूस हों या पढ़ने-लिखने से दर्द बढ़े।

लाभ (Benefits):

आँखों की नसों की कमजोरी दूर करती है

लगातार मोबाइल/कंप्यूटर देखने से आई थकान में उपयोगी

आंखों का तनाव और धुंधलापन कम करती है

उपयोग (Use):

30C पोटेंसी में दिन में २ बार

1 सप्ताह तक लगातार सेवन

इलाज / Treatment:

Ruta आँखों की नसों को आराम देती है और दृष्टि शक्ति में सुधार करती है। यह Eye Strain Remedy के नाम से जानी जाती है।

३. Phosphorus (फॉस्फोरस)

पहचान:

जब आँखों के आगे धुंध छाने लगे, चीजें दो-दो दिखें या रात में दिखाई कम दे।

लाभ (Benefits):

कमजोर दृष्टि और आँखों के तनाव में राहत

अंधेरे में धुंधलापन कम करती है

आँखों की नसों को मज़बूत बनाती है

उपयोग (Use):

30C या २००C पोटेंसी में

रोज़ाना 1—२ बार, 1 हफ्ते तक

इलाज / Treatment:

Phosphorus आँखों के रेटिना (Retina) और ऑप्टिक नर्व को मजबूत बनाती है। इससे धीरे-धीरे दृष्टि साफ़ और आँखें चमकदार बनने लगती हैं।

"रोशनी बढ़ाएँ, दवाएँ नहीं — आँखों को शक्ति दें"

इन तीनों दवाओं के नियमित उपयोग से —

आँखों की जलन, खुजली और पानी बहना रुकता है,

नजर साफ़ होती है,

और आँखें पहले जैसी ताज़ा व चमकदार दिखने लगती हैं।

चिकित्सा पद्धति के मिथक और तथ्य

1. मिथक - चिकित्सा पेशा एक महान पेशा है..

तथ्य- हर पेशा, चाहे वह शिक्षक का हो, सैनिक का हो, दर्जी का हो या दुकानदार का, महान है, अगर उसे ईमानदारी और निष्ठा से किया जाए।

एक लापरवाह डॉक्टर एक को मार सकता है*, एक लापरवाह ड्राइवर दर्जनों को मार सकता है, एक लापरवाह इंजीनियर सैकड़ों को मार सकता है।

२. मिथक - चूँकि यह मानवता की सेवा है, इसलिए डॉक्टरों को पैसे के पीछे नहीं भागना चाहिए।

तथ्य - पैसा सफलता का एक महत्वपूर्ण पैमाना है। इसके पीछे भागना किसी के लिए भी अच्छा नहीं है, लेकिन ज़्यादा काम करके ज़्यादा पैसा कमाना कोई नैतिक अपराध नहीं है।

और जो लोग डॉक्टरों को सलाह देते हैं, वे खुद पैसे के पीछे भाग रहे हैं, है ना?

३. मिथक - डॉक्टरों को 100% ईमानदार होना चाहिए।

तथ्य- डॉक्टर मंगल या शुक्र ग्रह से नहीं आते। अगर सुप्रीम कोर्ट के जज या सेना के जनरल भ्रष्ट हो सकते हैं, तो कुछ डॉक्टर भी भ्रष्ट हो सकते हैं। एक वर्ग के रूप में, वे राजनेताओं, नौकरशाहों, वकीलों, पुलिस या सार्वजनिक क्षेत्र के इंजीनियरों से बेहतर हैं।

4. मिथक - ज़्यादातर डॉक्टर बीमारी को समझ नहीं पाते और अनावश्यक और महंगी दवाएँ लिख देते हैं और परीक्षण के आधार पर जाँच और इलाज की सलाह देते हैं।

तथ्य - डॉक्टर-मरीज़ का रिश्ता विश्वास पर आधारित होता है, अगर आपको अपने डॉक्टर पर भरोसा नहीं है, तो किसी और के पास जाएँ। चिकित्सा विज्ञान एक आजीवन सीखने की प्रक्रिया है, और सभी उपचार, कुछ हद तक परीक्षण और त्रुटि पर आधारित होते हैं। वही दवा, जो एक मरीज़ पर काम करती है, दूसरे पर काम नहीं भी कर सकती है।

दूसरा, किफ़ायती दामों पर गुणवत्तापूर्ण दवाएँ उपलब्ध कराने की ज़िम्मेदारी डॉक्टर की नहीं, बल्कि राज्य के अधिकारियों की है, ठीक वैसे ही जैसे बेहतर सड़कें, मिलावट रहित गुणवत्तापूर्ण भोजन और डेयरी उत्पाद, निर्बाध बिजली और पानी की आपूर्ति आदि प्रदान करना।

कपड़े, कार और मोबाइल फ़ोन की तरह, महंगी दवाएँ आमतौर पर सस्ती दवाओं से बेहतर होती हैं।

हालाँकि, अगर सरकार जेनेरिक दवाएँ लिखना अनिवार्य करती है, तो उसे गुणवत्ता सुनिश्चित करनी चाहिए और खराब/अप्रभावकारिता का दोष डॉक्टरों पर नहीं मढ़ा जाना चाहिए।

तीसरा, जाँच मरीज़ की अपनी सुरक्षा के लिए की जाती है। हेलमेट या सीट बेल्ट पहनने की तरह, जाँच से सुरक्षा बढ़ती है। भारत में ज़्यादातर डॉक्टर नैदानिक अनुभव और सामान्य ज्ञान के आधार पर काम करने के लिए प्रशिक्षित होते हैं और जाँचों पर ज़्यादा निर्भर नहीं रहते, और विकसित देशों में जो लिखा होता है या किया जाता है, उससे बहुत कम जाँचों की सलाह देते हैं।

5. मिथक - इलाज की लागत बेतहाशा बढ़ रही है।

तथ्य - पश्चिमी दुनिया की तुलना में, भारत में इलाज की लागत अभी भी बहुत कम है, और इसी वजह से कई विदेशी भारत आ रहे हैं। और चिकित्सा विज्ञान जैसी तकनीक और उपकरणों में तेज़ी से प्रगति करने वाली किसी अन्य सेवा या उत्पाद के बारे में सोचना सार्थक होगा, जिसकी लागत न बढ़ रही हो।

6. मिथक - डॉक्टर भगवान के बाद दूसरे स्थान पर हैं..

तथ्य - डॉक्टर भी उतने ही इंसान हैं जितने हो सकते हैं। वे भी थक जाते हैं, बीमार पड़ जाते हैं, पारिवारिक प्रतिबद्धताएं रखते हैं, कभी-कभी परेशान और तनावग्रस्त हो जाते हैं और एक इंसान की सभी कमजोरियों से पीड़ित हो सकते हैं। अगर कोई भगवान से इलाज करवाना चाहता है तो वे पूजा स्थल पर जा सकते हैं।

ब्लड स्टेम सेल क्या होते हैं?

ब्लड स्टेम सेल्स (Hematopoietic Stem Cells) हड्डियों के मज्जा (Bone Marrow) में पाए जाने वाले विशेष कोशिकाएँ हैं।

इनका मुख्य कार्य है:

लाल रक्त कणिकाएँ (RBCs) बनाना — जो ऑक्सीजन पहुँचाती हैं

श्वेत रक्त कणिकाएँ (WBCs) बनाना — जो संक्रमण से रक्षा करती हैं

प्लेटलेट्स बनाना — जो रक्त का थक्का बनाते हैं

ये शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता और रक्त संतुलन बनाए रखने में अत्यंत आवश्यक हैं।

उम्र बढ़ने पर स्टेम सेल्स में क्या परिवर्तन होते हैं?

जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, ब्लड स्टेम सेल्स:

नई कोशिकाएँ बनाने की क्षमता खो देते हैं

DNA में बदलाव और क्षति जमा होती जाती है

रोग-प्रतिरोधक (Lymphoid) कोशिकाओं की जगह सूजन संबंधी (Myeloid) कोशिकाएँ अधिक बनने लगती हैं

ऊर्जा (Mitochondria) की कमी होने लगती है

इसका परिणाम होता है:

कमजोर इम्यून सिस्टम

संक्रमण का अधिक खतरा

एनीमिया

कैंसर (विशेषकर रक्त कैंसर) की संभावना बढ़ना

आनुवंशिक और जैव-रासायनिक कारण

टेलोमीयर (Telomeres) छोटे हो जाते हैं, जिससे कोशिकाएँ जल्दी बूढ़ी हो जाती हैं।

एपीजेनेटिक बदलाव (Epigenetic changes) DNA के कार्य को प्रभावित करते हैं।

क्रॉनिक इंफ्लेमेशन (Inflammaging) धीरे-धीरे स्टेम सेल्स को नुकसान पहुँचाती है।

ये सभी कारक मिलकर उम्र से जुड़ी बीमारियों को बढ़ाते हैं।

नई वैज्ञानिक खोजें (२०२३–२०२५)

वैज्ञानिकों ने पाया कि:

बूढ़े ब्लड स्टेम सेल्स के "जीन सिग्नेचर" बदले जा सकते हैं।

NAD^{+} जैसे अणु (molecules) स्टेम सेल की युवावस्था बनाए रखने में मदद करते हैं।

Senolytic drugs और Epigenetic Reprogramming तकनीक से पुराने स्टेम सेल्स को फिर से सक्रिय किया जा सकता है।

व्यायाम, संतुलित आहार, और कैलोरी नियंत्रण भी इन्हें सुरक्षित रखते हैं।

भविष्य की संभावनाएँ

अगर इन स्टेम सेल्स को फिर से "युवा" बनाया जा सके, तो:

बुजुर्गों की इम्यूनिटी बढ़ेगी

संक्रमण और एनीमिया कम होंगे

कैंसर का खतरा घटेगा

जीवन-शक्ति और दीर्घायु में वृद्धि होगी

यह शोध Regenerative Medicine (पुनर्जीवित चिकित्सा) का भविष्य बदल सकता है।

संभावित भविष्य की चिकित्सा पद्धतियाँ

1. स्टेम सेल पुनर्जीवन (Rejuvenation) करने वाली दवाएँ
२. DNA सुधारने वाली Gene Editing (CRISPR) तकनीक
३. प्रयोगशाला में तैयार युवा स्टेम सेल प्रत्यारोपण
4. जीवनशैली आधारित उपाय — योग, व्यायाम, उपवास, और एंटीऑक्सीडेंटयुक्त आहार।

दालचीनी Dalchini

भारतीय रसोई में कई ऐसे मसाले हैं जो सिर्फ स्वाद नहीं, बल्कि सेहत भी देते हैं। उन्हीं में से एक है — दालचीनी।

मीठी-तीखी सुगंध वाली यह छोटी-सी लकड़ी जितनी सरल दिखती है, उतनी ही चमत्कारी है। आयुर्वेद में इसे हजारों वर्षों से औषधीय गुणों के लिए पहचाना गया है। इस लेख में हम जानेंगे दालचीनी के कुछ गुप्त उपयोग, जिन्हें आप अपने किचन में अपनाकर पा सकते हैं अनगिनत लाभ — वो भी बिल्कुल प्राकृतिक तरीक़े से।

1. सुबह खाली पेट दालचीनी पानी:- एक गिलास गुनगुने पानी में आधा चम्मच दालचीनी पाउडर मिलाकर सुबह खाली पेट पीने से:

1. वजन नियंत्रित होता है
२. पाचन तंत्र दुरुस्त रहता है
३. शरीर की सूजन कम होती है
4. यह नुस्खा शरीर को दिनभर ऊर्जावान बनाता है।

२. डायबिटीज के रोगियों के लिए वरदान दालचीनी में मौजूद पॉलीफेनोल्स इंसुलिन की कार्यप्रणाली में सुधार करते हैं।

1. रोज़ाना एक चुटकी दालचीनी पाउडर दही या ओट्स में मिलाकर लेने से ब्लड शुगर लेवल संतुलित रहता है।
२. यह टाइप-२ डायबिटीज़ के रोगियों के लिए प्राकृतिक सहायता सिद्ध हो सकता है।

३. कॉफी या चाय में दालचीनी का ट्विस्ट अपने दिन की शुरुआत करें दालचीनी वाली हर्बल चाय या कॉफी से।

1. यह शरीर को गर्मी देती है
२. सूजन घटाती है
३. तनाव कम करती है
4. बस एक छोटी स्टिक या आधा चम्मच पाउडर पर्याप्त है।

4. वजन घटाने में सहायक दालचीनी मेटाबॉलिज्म को तेज करती है और भूख को नियंत्रित रखती है।

1. गुनगुने पानी में नींबू और शहद के साथ दालचीनी लेने से फैट बर्निंग की प्रक्रिया तेज होती है।
२. यह पेट की चर्बी को भी कम करती है।

5. सर्दी-जुकाम में रामबाण दालचीनी में एंटी-वायरल और एंटी-बैक्टीरियल गुण होते हैं।

1. एक कप पानी में तुलसी, अदरक और दालचीनी उबालकर पीने से गला ठीक होता है।
२. दालचीनी वाला गरारा गले की खराश में राहत देता है।

6. त्वचा के लिए गुप्त उपाय दालचीनी सिर्फ खाने में नहीं, चेहरे की सुंदरता बढ़ाने में भी सहायक है।

1. शहद और दालचीनी पाउडर का पेस्ट मुंहासों पर लगाने से बैक्टीरिया मरते हैं।

२. यह ब्लैकहेड्स हटाने और स्किन को ग्लो देने में मददगार है।
३. सावधानी: यह मिश्रण लगाकर 10 मिनट से अधिक न रखें।

7. हृदय स्वास्थ्य में सहायक दालचीनी में पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट्स कोलेस्ट्रॉल कम करने और ब्लड प्रेशर नियंत्रित करने में सहायक होते हैं।

1. यह हार्ट अटैक और स्ट्रोक के जोखिम को कम करता है।

8. बालों के लिए अमृत दालचीनी और नारियल तेल का मिश्रण बालों की जड़ों में मालिश करने से बाल मजबूत होते हैं।

1. यह रक्तसंचार बढ़ाता है, जिससे बालों की ग्रोथ में सुधार होता है।

9. किचन क्लीनर के रूप में प्रयोग दालचीनी में बैक्टीरिया मारने की क्षमता होती है। आप इसका उपयोग प्राकृतिक क्लीनर के रूप में कर सकते हैं:

1. पानी में दालचीनी का तेल मिलाकर किचन टॉप्स या फ्रिज की सफाई करें।
२. यह न सिर्फ सफाई करता है, बल्कि खुशबू भी छोड़ता है।

10. कीट भगाने में असरदार दालचीनी की खुशबू कीटों को दूर रखती है।

1. जहां चीटियाँ आती हों, वहाँ दालचीनी पाउडर छिड़क दें।
२. यह एक सुरक्षित और रसायन मुक्त उपाय है।

निष्कर्ष: दालचीनी वह मसाला है जो स्वाद, खुशबू और स्वास्थ्य — तीनों में श्रेष्ठ है। इसका प्रयोग न केवल भोजन में, बल्कि सौंदर्य, सफाई, स्वास्थ्य और रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाने के लिए भी किया जा सकता है। यह छोटे-छोटे उपाय न केवल हमें बीमारी से बचाते हैं, बल्कि एक प्राकृतिक जीवन शैली की ओर ले जाते हैं। दालचीनी को अपने दैनिक जीवन में सम्मिलित करें — लेकिन सीमित मात्रा में। अधिक सेवन से शरीर पर विपरीत प्रभाव भी हो सकता है। आयुर्वेद में भी संतुलन को सबसे अधिक महत्व दिया गया है।

अपने पैरों के तलवों पर तेल लगाएँ

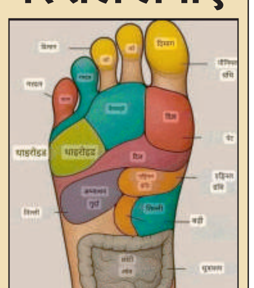

एक महिला ने लिखा कि उसके दादाजी का 87 वर्ष की आयु में निधन हो गया और उन्हें पीठ दर्द, जोड़ों का दर्द, सिरदर्द या दाँतों का नुकसान नहीं हुआ क्योंकि कलकत्ता में रहने वाले एक बुज़ुर्ग मित्र ने उन्हें सोने से पहले पैरों के तलवों पर तेल की मालिश करने की सलाह दी थी। यह उपचार और शारीरिक स्वास्थ्य लाभ का सबसे अच्छा स्रोत है। एक छात्र ने मुझसे कहा: मेरी मां ने भी इसी तरह तेल लगाने पर जोर दिया; फिर उन्होंने बताया कि बचपन से ही उनकी आंखों की रोशनी कम हो गई थी और जब उन्होंने यह प्रक्रिया जारी रखी तो धीरे-धीरे उनकी आंखों की रोशनी वापस आ गई और वे स्वस्थ हो गईं।

एक व्यापारी ने मुझे लिखा कि वह छुट्टियों में चित्राल गया था। उसने वहाँ एक होटल में रात बिताई और उसे नींद नहीं आ रही थी, इसलिए वह बाहर टहलने चला गया। रात में टहलने आई एक बुज़ुर्ग महिला ने उससे पूछा, "क्या हुआ?" उसने कहा, "मुझे नींद नहीं आ रही!" वह मुस्कुराई और बोली, "क्या तुम्हारे पास कोई तेल है?" उसने कहा, "नहीं," तो वह तेल लेने गई और बोली, "अपने पैरों के तलवों पर कुछ देर मालिश करो।" उसने ऐसा ही किया, और जल्द ही वह खर्राटे लेने लगा। रात को सोने से पहले पैरों के तलवों पर तेल की मालिश करने से मुझे अच्छी नींद आती है।

क्या आप भी उन लोगों में से हैं जो रात में बचे हुए गूंथे आटे को फ्रिज में रख देते हैं और सुबह उसी से गरमागरम पराठे या रोटी बनाकर खा लेते है ?

लगभग हर भारतीय घर में ऐसा होता है, क्योंकि यह समय बचाने और खाने को बर्बाद होने से बचाने का एक आसान तरीका है. लेकिन, क्या आपने कभी सोचा है कि जिस बचे हुए आटे को आप बिना किसी हिचक के इस्तेमाल कर रहे हैं, वो आपकी सेहत के लिए कितना सुरक्षित है।

आइए जानते हैं डाइटीशियन से, यह आदत कितनी सही है और कहां जाकर सेहत के लिए खतरा बन सकती है.

क्या है डाइटिशियन की राय_ डाइटीशियन के अनुसार, आटे को 4 डिग्री सेल्सियस के तापमान पर फ्रिज में रखने से सूक्ष्मजीवों (Microbes) की ग्रोथ काफी धीमी हो जाती है. इसका मतलब है कि यह पूरी तरह रुकती नहीं है, बस धीमी हो जाती है.

न्यूट्रिशन की दृष्टि से देखा जाए तो, रात के रखे आटे और ताजे आटे में कोई खास अंतर नहीं होता है. हां, इतना जरूर है कि विटामिन सी, फोलेट और पॉलीफेनॉल जैसे कुछ पोषक तत्व थोड़े कम हो सकते हैं. कामकाजी लोग या अकेले रहने वाले लोग आटे को एक एयरटाइट कंटेनर में बंद करके रात भर फ्रिज में रख सकते हैं. लेकिन बचे हुए आटे को इस्तेमाल करने की सुरक्षा पूरी तरह इस बात पर निर्भर करती है कि उसे कैसे गूंथा गया और कैसे रखा गया.

रिपोर्ट्स के मुताबिक, अगर आटे को एक साफ एयरटाइट कंटेनर में रखकर 8 से 12 घंटे तक फ्रिज में रखा जाए, तो इसका उपयोग किया जा सकता है. लेकिन ध्यान रहे २4 घंटे से अधिक पुराना आटा खाने लायक नहीं रहता. फ्रिज का ठंडा तापमान बैक्टीरिया को धीमा करता है, लेकिन पूरी तरह रोकता नहीं. यही कारण है कि 12 घंटे के बाद आटे का स्वाद, रंग और गंध बदलने लगती है, जो इस बात का संकेत है कि वह खराब होना शुरू हो गया है.

आटा स्टोर करने का सही तरीका_

1. अगर आटा बच गया है, तो उसे 8 से 12 घंटे के अंदर इस्तेमाल कर लेना सबसे सुरक्षित है. २4 घंटे से अधिक पुराना आटा इस्तेमाल न करें. इससे फूड प्वॉइजनिंग हो सकती है.
२. आटे को हमेशा साफ, एयरटाइट कंटेनर में ही फ्रिज में रखें, ताकि वह बाहरी नमी और गंध से बचा रहे.
३. इस्तेमाल करने से पहले हमेशा आटे को सूंघकर देखें. अगर रंग, गंध या स्वाद में कोई बदलाव लगे, तो उसे तुरंत फेंक दें.

अगर संभव हो, तो डॉक्टर की सलाह मानते हुए ताजा आटा गूंथना और इस्तेमाल करना हमेशा बेहतर होता है.

आज होगा महाछठ पर्व का समापन

छठ महापर्व का समापन 28 अक्टूबर को होगा। छठ महापर्व की शुरुआत कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि से होती है और यह चार जिन धूमधाम के साथ उगते सूर्य को अर्घ्य देने के साथ ही इसका समापन हो जाता है। 28 अक्टूबर मंगलवार के दिन उगते सूर्य को अर्घ्य देने के साथ ही छठ महापर्व का समापन हो जाएगा।

छठ व्रत का पारण कैसा करें ?

========================

छठ महापर्व के आखिरी दिन उगते सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है। इस दिन घाट पर पूजन किया जाता है। इस दिन उगते सूर्य को अर्घ्य दें। इसके बाद छठी माता को अर्पित किया गया प्रसाद सभी को बांटें। घाट पर पूजन करने के बाद अपने घर के बड़े बुजुर्गों से आशीर्वाद लें। छठी माता को आप जो प्रसाद भेट करें फिर उस प्रसाद को सभी लोगों को बांट दें। इस बात का खास ख्याल रखें की व्रत का पारण करते हुए मसालेदार भोजन ग्रहण नहीं करना चाहिए। व्रत का पारण के लिए आपको पूजा के दौरान चढ़ाए गए प्रसाद जैसे ठेकुआ मिठाई आदि से ही व्रत का पारण करना चाहिए।

व्रत पारण से पहले क्या करें ?

======================

छठ के व्रत का पारण करने से पहले सूर्योदय से पहले का स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण कर लें।

इसके बाद सूर्योदय से पहले ही पारण के लिए प्रसाद तैयार कर लें। प्रसाद में ठेकुआ, फल, दूध आदि चीजें शामिल की जाती हैं।

छठ पर सुबह को अर्घ्य देने का महत्व

========================

छठ के आखिरी दिन सुबह-सुबह अर्घ्य दिया जाता है। दरअसल सनातन धर्म में उगते सूर्य को अर्घ्य देने का बहुत महत्व है। यह आध्यात्मिक रूप से भी महत्वपूर्ण माना जाता है। छठ के अंतिम दिन सुबह सूर्य को अर्घ्य उनकी पत्नी ऊषा के लिए दिया जाता है जो कि मनोकामना पूर्ण करती हैं। वेदों में भी सूर्य का महत्व बताया गया है। उन्हें संसार की आत्मा बताया गया है इसका कारण है कि सूर्य ही एनर्जी का सबसे बड़ा सोर्स है। इसलिए जब भी हम सुबह-सुबह सूर्य को अर्घ्य देते हैं उनकी पॉजिटिव एनर्जी को अपनी जीवन में आने का मौका देते हैं।

सूर्य को सुबह अर्घ्य देने से जीवन से नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है और रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है।

बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश का लोकप्रिय पर्व है छठ पूजा

========================

छठ पूजा बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश में बेहद खास और लोकप्रिय पर्व है। इसे लोक आस्था का सबसे बड़ा त्योहार माना जाता है। इस पर्व में महिलाएं और पुरुष दोनों ही व्रत रखते हैं और सूर्य देव व छठी मइया की पूजा करते हैं। घाटों पर व्रती गीत गाते हुए डूबते और उगते सूरज को अर्घ्य देते हैं। पूरे माहौल में भक्ति, संगीत और उल्लास का रंग छा जाता है। छठ पूजा न सिर्फ धार्मिक आस्था से जुड़ी है, बल्कि यह स्वच्छता, अनुशासन और सामूहिक एकता का प्रतीक भी है। यही वजह है कि इस पर्व को पूरे जोश और श्रद्धा से मनाया जाता है।

छठ पूजा सनातन धर्म का एक महान पर्व

समय निकाल कर पूरा पढ़े

छठ पूजा सूर्योपासना का यह अनुपम लोकपर्व मुख्य रूप से पूर्वी भारत के बिहार, झारखण्ड, पूर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल के तराई क्षेत्रों में मनाया जाता है। प्रायः हिन्दुओं द्वारा मनाये जाने वाले इस पर्व को इस्लाम सहित अन्य धर्मावलम्बी भी मनाते देखे गये हैं। धीरे-धीरे यह त्योहार प्रवासी भारतीयों के साथ-साथ विश्वभर में प्रचलित हो गया है।

छठ पूजा सूर्य और उनकी पत्नी उषा को समर्पित है ताकि उन्हें पृथ्वी पर जीवन की देवतायों को बहाल करने के लिए धन्यवाद और कुछ शुभकामनाएं देने का अनुरोध किया जाए। छठ में कोई मूर्तिपूजा शामिल नहीं है। यह त्यौहार नेपाली और भारतीय लोगों द्वारा अपने डायस्पोरा के साथ मनाया जाता है।

छठ पर्व छठ, षष्ठी का अपभ्रंश है। कार्तिक मास की अमावस्या को दीवाली मनाने के बाद मनाये जाने वाले इस चार दिवसीय व्रत की सबसे कठिन और महत्त्वपूर्ण रात्रि कार्तिक शुक्ल षष्ठी की होती है। कार्तिक शुक्ल पक्ष के षष्ठी को यह व्रत मनाये जाने के कारण इसका नामकरण छठ व्रत पड़ा।

भारत में सूर्योपासना के लिए प्रसिद्ध पर्व है छठ। मूलतः सूर्य षष्ठी व्रत होने के कारण इसे छठ कहा गया है। यह पर्व वर्ष में दो बार मनाया जाता है।

पहली बार चैत्र में और दूसरी बार कार्तिक में। चैत्र शुक्ल पक्ष षष्ठी पर मनाये जाने वाले छठ पर्व को चैती छठ व कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी पर मनाये जाने वाले पर्व को कार्तिकी छठ कहा जाता है। पारिवारिक सुख-समृद्धी तथा मनोवांछित फल प्राप्ति के लिए यह पर्व मनाया जाता है। स्त्री और पुरुष समान रूप से इस पर्व को मनाते हैं।

छठ व्रत के सम्बन्ध में अनेक कथाएँ प्रचलित हैं।

लेकिन इसका सबसे ज्यादा महत्व महाभारत काल से जोड़ कर देखा जाता है। आइए जानते हैं आखिर इस छठ पर्व का उदगम कैसे हुआ और क्या है इसके पीछे की धार्मिक मान्यता।

द्रोपदी के व्रत से मिला था पांडवों को खोया हुआ राज्य

धार्मिक मान्यता के अनुसार छठ पर्व के व्रत की शुरुआत को महाभारत काल से जोड़ कर देखा जाता है। एक बार जब पांडव जुआ खेलते समय अपना सारा राज्य हार गए थे। उस समय द्रोपदी ने सूर्य उपासना के साथ ही साथ व्रत का अनुष्ठान किया था। जिसके बाद पांडवों को उनका हारा हुआ राजपाठ वापिस मिल गया। तब से छठ पर्व का व्रत इतना महत्वपूर्ण हो गया और इस कारण महिलाएं अपने कुल की रक्षा और परिवार की सुख-समृद्धि के लिए छठ पर्व पर कुल 36 घंटे का निर्जला व्रत रखती हैं।

कर्ण की उपासना से भी छठ पर्व को जोड़ कर देखा जाता है।

महाभारत काल के वीर योद्धा कर्ण से भी छठ पर्व की मान्यता को जोड़ कर देखा जाता है। माना जाता है कि कर्ण सूर्य देव के परम उपासक थे। वह हर सुबह सूर्य देव को पानी में घंटो खड़े रहकर अर्घ्य दिया करते थे और उनका ध्यान करते थे। सूर्य देव कर्ण की उपासना से इतना प्रसन्न हुए कि उन पर अपनी विशेष कृपा बरसा दी और उनके आशीर्वाद से वह एक महान योद्धा बने।

छठ पर्व किस प्रकार मनाते हैं ?

यह पर्व चार दिनों का है। भैयादूज के तीसरे दिन से यह आरम्भ होता है।

पहले दिन सेन्धा नमक, घी से बना हुआ अरवा चावल और कद्दू की सब्जी प्रसाद के रूप में ली जाती है। अगले दिन से उपवास आरम्भ होता है। व्रति दिनभर अन्न-जल त्याग कर शाम करीब ७ बजे से खीर बनाकर, पूजा करने के उपरान्त प्रसाद ग्रहण करते हैं, जिसे खरना कहते हैं। तीसरे दिन डूबते हुए सूर्य को अर्घ्य यानी दूध अर्पण करते हैं।

अंतिम दिन उगते हुए सूर्य को अर्घ्य चढ़ाते हैं। पूजा में पवित्रता का विशेष ध्यान रखा जाता है; लहसून, प्याज वर्जित होता है। जिन घरों में यह पूजा होती है, वहाँ भक्तिगीत गाये जाते हैं। अंत में लोगो को पूजा का प्रसाद दिया जाता हैं।

छठ पूजा चार दिवसीय उत्सव है। इसकी शुरुआत कार्तिक शुक्ल चतुर्थी को तथा समाप्ति कार्तिक शुक्ल सप्तमी को होती है। इस दौरान व्रतधारी लगातार 36 घंटे का व्रत रखते हैं। इस दौरान वे पानी भी ग्रहण नहीं करते।

पहला दिन कार्तिक शुक्ल चतुर्थी 'नहाय-खाय' के रूप में मनाया जाता है। सबसे पहले घर की सफाई कर उसे पवित्र किया जाता है। इसके पश्चात छठव्रती स्नान कर पवित्र तरीके से बने शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण कर व्रत की शुरुआत करते हैं। घर के सभी सदस्य व्रति के भोजनोपरांत ही भोजन ग्रहण करते हैं। भोजन के रूप में कद्दू-दाल और चावल ग्रहण किया जाता है। यह दाल चने की होती है।

दूसरे दिन कार्तिक शुक्ल पंचमी को व्रतधारी दिनभर का उपवास रखने के बाद शाम को भोजन करते हैं। इसे 'खरना' कहा जाता है।

खरना का प्रसाद लेने के लिए आस-पास के सभी लोगों को निमंत्रित किया जाता है। प्रसाद के रूप में गन्ने के रस में बने हुए चावल की खीर के साथ दूध, चावल का पिट्ठा और घी चुपड़ी रोटी बनाई जाती है। इसमें नमक या चीनी का उपयोग नहीं किया जाता है। इस दौरान पूरे घर की स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा जाता है।

तीसरे दिन कार्तिक शुक्ल षष्ठी को दिन में छठ का प्रसाद बनाया जाता है। प्रसाद के रूप में ठेकुआ, जिसे कुछ क्षेत्रों में टिकरी भी कहते हैं, के अलावा चावल के लड्डू, जिसे लड़ुआ भी कहा जाता है, बनाते हैं। इसके अलावा चढ़ावा के रूप में लाया गया साँचा और फल भी छठ प्रसाद के रूप में शामिल होता है।

शाम को पूरी तैयारी और व्यवस्था कर बाँस की टोकरी में अर्घ्य का सूप सजाया जाता है और व्रति के साथ परिवार तथा पड़ोस के सारे लोग अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य देने घाट की ओर चल पड़ते हैं। सभी छठव्रति एक नियत तालाब या नदी किनारे इकट्ठा होकर सामूहिक रूप से अर्घ्य दान संपन्न करते हैं। सूर्य को जल और दूध का अर्घ्य दिया जाता है तथा छठी मैया की प्रसाद भरे सूप से पूजा की जाती है; इस दौरान कुछ घंटे के लिए मेले जैसा दृश्य बन जाता है।

चौथे दिन कार्तिक शुक्ल सप्तमी की सुबह उदियमान सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है। व्रति वहीं पुनः इकट्ठा होते हैं जहाँ उन्होंने पूर्व संध्या को अर्घ्य दिया था। पुनः पिछले शाम की प्रक्रिया की पुनरावृत्ति होती है।

सभी व्रति तथा श्रद्धालु घर वापस आते हैं, व्रति घर वापस आकर गाँव के पीपल के पेड़ जिसको ब्रह्म बाबा कहते हैं वहाँ जाकर पूजा करते हैं। पूजा के पश्चात् व्रति कच्चे दूध का शरबत पीकर तथा थोड़ा प्रसाद खाकर व्रत पूर्ण करते हैं जिसे पारण या परना कहते हैं।

छठ पर्व मूलतः सूर्य की आराधना का पर्व है, जिसे हिन्दू धर्म में विशेष स्थान प्राप्त है। हिन्दू धर्म के देवताओं में सूर्य ऐसे देवता हैं जिन्हें मूर्त रूप में देखा जा सकता है।

सूर्य की शक्तियों का मुख्य श्रोत उनकी पत्नी ऊषा और प्रत्यूषा हैं। छठ में सूर्य के साथ-साथ दोनों शक्तियों की संयुक्त आराधना होती है। प्रातःकाल में सूर्य की पहली किरण (ऊषा) और सायंकाल में सूर्य की अंतिम किरण (प्रत्यूषा) को अर्घ्य देकर दोनों का नमन किया जाता है।

भारत में सूर्योपासना ऋग्वैदिक काल से होती आ रही है। सूर्य और इसकी उपासना की चर्चा विष्णु पुराण, भगवत पुराण, ब्रह्मा वैवर्त पुराण आदि में विस्तार से की गयी है। मध्य काल तक छठ सूर्योपासना के व्यवस्थित पर्व के रूप में प्रतिष्ठित हो गया, जो अभी तक चला आ रहा है।

सृष्टि और पालन शक्ति के कारण सूर्य की उपासना सभ्यता के विकास के साथ विभिन्न स्थानों पर अलग-अलग रूप में प्रारम्भ हो गयी, लेकिन देवता के रूप में सूर्य की वन्दना का उल्लेख पहली बार ऋग्वेद में मिलता है। इसके बाद अन्य सभी वेदों के साथ ही उपनिषद् आदि वैदिक ग्रन्थों में इसकी चर्चा प्रमुखता से हुई है। निरुक्त के रचियता यास्क ने द्युस्थानीय देवताओं में सूर्य को पहले स्थान पर रखा है।

उत्तर वैदिक काल के अन्तिम कालखण्ड में सूर्य के मानवीय रूप की कल्पना होने लगी। इसने कालान्तर में सूर्य की मूर्ति पूजा का रूप ले लिया। पौराणिक काल आते-आते सूर्य पूजा का प्रचलन और अधिक हो गया। अनेक स्थानों पर सूर्यदेव के मंदिर भी बनाये गये।

पौराणिक काल में सूर्य को आरोग्य देवता भी माना जाने लगा था। सूर्य की किरणों में कई रोगों को नष्ट करने की क्षमता पायी गयी। ऋषि-मुनियों ने अपने अनुसन्धान के क्रम में किसी खास दिन इसका प्रभाव विशेष पाया। सम्भवतः यही छठ पर्व के उद्भव की बेला रही हो। भगवान कृष्ण के पौत्र शाम्ब को कुष्ठ रोग हो गया था। इस रोग से मुक्ति के लिए विशेष सूर्योपासना की गयी, जिसके लिए शाक्य द्वीप से ब्राह्मणों को बुलाया गया था।

पौराणिक और लोक कथाएँ !!!!!

छठ पूजा की परम्परा और उसके महत्त्व का प्रतिपादन करने वाली अनेक पौराणिक और लोक कथाएँ प्रचलित हैं।

एक मान्यता के अनुसार लंका विजय के बाद रामराज्य की स्थापना के दिन कार्तिक शुक्ल षष्ठी को भगवान राम और माता सीता ने उपवास किया और सूर्यदेव की आराधना की। सप्तमी को सूर्योदय के समय पुनः अनुष्ठान कर सूर्यदेव से आशीर्वाद प्राप्त किया था।

एक कथा के अनुसार राजा प्रियवद को कोई संतान नहीं थी, तब महर्षि कश्यप ने पुत्रेष्टि यज्ञ कराकर उनकी पत्नी मालिनी को यज्ञाहुति के लिए बनायी गयी खीर दी। इसके प्रभाव से उन्हें पुत्र हुआ परन्तु वह मृत पैदा हुआ। प्रियवद पुत्र को लेकर श्मशान गये और पुत्र वियोग में प्राण त्यागने लगे।

उसी वक्त ब्रह्माजी की मानस कन्या देवसेना प्रकट हुई और कहा कि सृष्टि की मूल प्रवृत्ति के छठे अंश से उत्पन्न होने के कारण मैं षष्ठी कहलाती हूँ। हे ! राजन्‌ आप मेरी पूजा करें तथा लोगों को भी पूजा के प्रति प्रेरित करें। राजा ने पुत्र इच्छा से देवी षष्ठी का व्रत किया और उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। यह पूजा कार्तिक शुक्ल षष्ठी को हुई थी।

छठ पूजा का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष इसकी सादगी पवित्रता और लोकपक्ष है। भक्ति और आध्यात्म से परिपूर्ण इस पर्व में बाँस निर्मित सूप, टोकरी, मिट्टी के बर्त्तनों, गन्ने का रस, गुड़, चावल और गेहूँ से निर्मित प्रसाद और सुमधुर लोकगीतों से युक्त होकर लोक जीवन की भरपूर मिठास का प्रसार करता है।

शास्त्रों से अलग यह जन सामान्य द्वारा अपने रीति-रिवाजों के रंगों में गढ़ी गयी उपासना पद्धति है। इसके केंद्र में वेद, पुराण जैसे धर्मग्रन्थ न होकर किसान और ग्रामीण जीवन है।

इस व्रत के लिए न विशेष धन की आवश्यकता है न पुरोहित या गुरु के अभ्यर्थना की। जरूरत पड़ती है तो पास-पड़ोस के सहयोग की जो अपनी सेवा के लिए सहर्ष और कृतज्ञतापूर्वक प्रस्तुत रहता है।

इस उत्सव के लिए जनता स्वयं अपने सामूहिक अभियान संगठित करती है। नगरों की सफाई, व्रतियों के गुजरने वाले रास्तों का प्रबन्धन, तालाब या नदी किनारे अर्घ्य दान की उपयुक्त व्यवस्था के लिए समाज सरकार के सहायता की राह नहीं देखता।

इस उत्सव में खरना के उत्सव से लेकर अर्ध्यदान तक समाज की अनिवार्य उपस्थिति बनी रहती है। यह सामान्य और गरीब जनता के अपने दैनिक जीवन की मुश्किलों को भुलाकर सेवा-भाव और भक्ति-भाव से किये गये सामूहिक कर्म का विराट और भव्य प्रदर्शन है।

छठ पूजा की आपसभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

जूते चप्पल बनाने वाले घर में शॉर्ट सर्किट की वजह से लगी आग...

परिवहन विशेष न्यूज

दिनांक 27/10/2025 Time 1:00 PM के करीब मादीपुर गांव के WZ-171 थर्ड फ्लोर छोटे लाल हलवाई के सामने वाली गली में जूते चप्पल बनाने का काम होता था

पब्लिक से पूछने पर पता लगा कि आग बिजली के शॉर्ट सर्किट से लगी है

हमने 1:40 पर पहुंचने पर देखा कि दो फायर टेंडर आग को बुझाने की कोशिश कर रहे हैं इसके बाद डिजास्टर कंट्रोल रूम 1077 पर कॉल की गई आपदा मित्र द्वारा और पीसी मैडम को भी सूचना दी गई थोड़ी देर में आपदा मित्र सिविल डिफेंस के वालंटियर मौके पर पहुंच गए

और पब्लिक को कंट्रोल किया घटनास्थल से पब्लिक को हटाया जिससे कि फायर कर्मियों को रेस्क्यू करने में कोई दिक्कत ना आए क्योंकि बहुत छोटी गली होने के कारण फायर की गाड़ियों को आने में बहुत दिक्कत हो रही थी

इसके बाद रोड पर ट्रैफिक भी जाम था उसको खुलवाने के लिए ट्रैफिक पुलिस को भी बुलवाया गया छोटी गली होने के कारण और थर्ड फ्लोर पर आग होने के कारण फायर कर्मियों को आग बुझाने में दिक्कत आ रही थी कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया मौके पर सात फायर टेंडर आए थे और पांच टेंडर यूज़ हुए हैं CAT एम्बुलेंस माता गुजरी हॉस्पिटल से आई थी किसी के हताहात होने की कोई खबर नहीं है माल का नुकसान हुआ है

यह जानकारी सारी पब्लिक ने दी आग पर पूरी तरह से 3:00 PM पर काबू पाया गया

मौके पर कौन-कौन सी एजेंसी पहुंची
पीसीआर
फायर टेंडर
ट्रैफिक पुलिस
स्थानीय पुलिस
बिजली विभाग
CAT एम्बुलेंस
आपदा मित्र 2
1) नवदीप सिंह आपदा मित्र पंजाबी बाग
2) कमलदीप सिंह, आपदा मित्र सिविल डिफेंस 2
फ़रिोज़ खान पंजाबी बाग

S.S.सिसोदिया पंजाबी बाग रिपोर्ट फिरोज खान

छठ घाटों पर सुविधाएं अखबारों में छठ पूजा सम्रागी वितरण

दिल्ली प्रदेश छठ पूजा उत्सव समिति के प्रदेश अध्यक्ष संगीता चतुर्वेदी ने दिल्ली के अनेको छठ घाटों के दौड़ा किया छठ घाटों में व्रतियों के लिए दिल्ली सरकार से सही तरह से व्यस्था नहीं करने पर रोष जताते हुए कहा दिल्ली सरकार सिर्फ छठ पूजा में व्यवस्था अखबारों और होडिंग में दिख रहा है जब कि सच्चाई बिल्कुल उल्टा है संगीता चतुर्वेदी ने कहा आस्था से खिलवाड़ है दिल्ली प्रदेश छठ पूजा उत्सव समिति के द्वारा व्रतधारियों को सामग्री वितरित करते हुए संगीता चतुर्वेदी ने कहां सूर्य शक्ति के यह महाव्रत हर परिवार, समाज और देश में खुशहाली लाएं।

पर्यावरण पाठशाला : सर्दियों में तुलसी माँ की रक्षा कैसे करें

– डॉ. अंकुर शरण

भारत में तुलसी केवल एक पौधा नहीं, बल्कि आस्था, आयुर्वेद और पर्यावरण का संगम है। हमारे घरों में तुलसी का पौधा "माँ" कहलाता है — क्योंकि यह वायु को शुद्ध करती है, वातावरण को पवित्र बनाती है और हमारे जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है। लेकिन सर्दियों के मौसम में यही पवित्र पौधा सबसे अधिक संवेदनशील हो जाता है। इसलिए आवश्यक है कि हम तुलसी की सही देखभाल करें ताकि वह अगले मौसम में फिर से हरी-भरी होकर हमारे आँगन को सुगंधित कर सके।

तुलसी के बारे में कुछ विशेष तथ्य:

तुलसी एक औषधीय पौधा है – इसमें एंटी-बैक्टीरियल, एंटी-वायरल और एंटी-ऑक्सीडेंट गुण पाए जाते हैं।

तुलसी ऑक्सीजन देती है – यह रात में भी ऑक्सीजन छोड़ती है, जो इसे विशेष बनाता है।

आयुर्वेद में अमृत समान – तुलसी का सेवन शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है, सर्दी-जुकाम और गले के संक्रमण में लाभकारी है।

पर्यावरण में संतुलन – तुलसी आसपास के वातावरण को शुद्ध रखती है और वायु में मौजूद हानिकारक तत्वों को सोख लेती है।

सर्दियों में तुलसी की रक्षा कैसे करें ?

क्या करें

तुलसी को धूप मिले यह सुनिश्चित करें – सर्दियों की हल्की परंतु गर्म धूप तुलसी के लिए अमृत समान है। प्रतिदिन 4-5 घंटे धूप ज़रूर लगवाएं।

पानी कम पर नियमित दें – सर्दियों में नमी बनी रहती है, अतः ज़्यादा पानी देना हानिकारक हो सकता है। सुबह हल्का पानी पर्याप्त है।

तुलसी को घर के अंदर या बालकनी में रखें – जब ठंडी हवा या पाला पड़े तो तुलसी को ऐसी जगह रखें जहाँ हल्की धूप और हवा दोनों मिलें।

सूखे पत्ते न तोड़ें, उन्हें मिट्टी में ही गिरने दें – ये पत्ते मिट्टी को पोषण देते हैं और जड़ की रक्षा करते हैं।

सर्दियों में तुलसी के पास तुलसी दीप जलाएं – यह न केवल वातावरण को शुद्ध करता है बल्कि तुलसी के आसपास की नमी और तापमान संतुलित रखता है।

क्या न करें

ठंडे पानी से सिंचाई न करें – इससे जड़ें जम सकती हैं और पौधा मुरझा सकता है।

रात में तुलसी को खुली छत या खुले आँगन में न रखें – पाला तुलसी के लिए सबसे बड़ा शत्रु है।

अधिक छँटाई न करें – सर्दियों में तुलसी को बढ़ने का समय नहीं, बल्कि विश्राम का समय चाहिए।

कभी भी तुलसी को प्लास्टिक के गमले में न रखें – मिट्टी के गमले से ही जड़ों को प्राकृतिक सांस मिलती है।

पर्यावरणीय सीख:

"तुलसी हमारी भारतीय संस्कृति का हरित प्रतीक है। इसे बचाना केवल धार्मिक कर्तव्य नहीं, बल्कि पर्यावरणीय जिम्मेदारी है। सर्दियों में तुलसी की रक्षा करना उस माता की सेवा के समान है जो पूरे वर्ष हमें ऑक्सीजन और सकारात्मक ऊर्जा देती है।"

सर्दियों में तुलसी की देखभाल करना प्रकृति से जुड़ने का एक सुंदर अवसर है। जब आप हर सुबह तुलसी को प्रणाम करते हैं, दीप जलाते हैं और उसकी पत्तियों की खुशबू से दिन की शुरुआत करते हैं — तो यह केवल पूजा नहीं, बल्कि पृथ्वी माँ के प्रति कृतज्ञता का भाव होता है।

इस सर्दी, तुलसी को बचाइए – यही सच्ची "पार्यावरण पाठशाला" है।

कासगंज: सींचल विभाग में एस्टीमेट महिला की सड़क दुर्घटना में मौत

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

कासगंज : जनपद कासगंज के नासिक अमापुर क्षेत्र में सड़क दुर्घटना में सीलिंग विभाग में एक महिला कर्मचारी की मौत हो गई। इसके साथ ही, घटना की सूचना बैठक में म्युचुअल पुलिस ने मृत महिला कर्मचारी के शव को कब्जे में लेकर जेल भेज दिया।

बताया गया है कि पूजा की रियासत 32 वर्ष की राजपूत पत्नी राकेश राजपूत, कासगंज शहर के सहावर गेट स्थित नई हवेली के निवासी हैं। वह कासगंज जिले के ब्लॉक सिधपुरा में सीना विभाग के कार्यालय में असिस्टेंस असैनिक के पद पर स्थित है।

महिला सोमवार को अपनी स्कूटी से सिढ़पुरा स्थित सीना विभाग के कार्यालय में ड्यूटी पर जा रही थी। उसी समय कासगंज-अमापुर मार्ग पर स्थित महदवा गांव के निकट आवर्ती तीक्ष्ण तीक्ष्ण तीक्ष्ण धारियाँ वाला जानवर आया, जिससे तीक्ष्ण तीक्ष्ण तीक्ष्ण तीक्ष्ण तीक्ष्ण रेखाएँ गिर गईं। इस दुर्घटना में राजपूत की मस्जिद पर ही मृत्यु हो गई। दुर्घटना की सूचना मिलने पर पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर शव के लिए भेज दिया। कासगंज के रेलवे विभाग में प्राइवेट रेलवे के रूप में रेलवे विभाग के कर्मचारी हैं। उनके दो बेटे 6 साल हर्षित और 5 साल कृष्णा हैं। महिला की मौत के बाद से परिवार में मातम का माहौल है।

संस्कार ही समाज की वास्तविक शक्ति महामंडलेश्वर साध्वी सरितानंद गिरि

डॉ.शंभू पंवार

नई दिल्ली। गोस्वामी समाज के उत्थान एवं नव जागरण की दिशा में आज नोएडा में एक ऐतिहासिक पहल की गई।इस विशेष सभा को समाज की दृष्टि से बड़ी अहम माना जा रही है।श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर साध्वी सरितानंद गिरि महाराज जी (श्री पंचायती अखाड़ा निरंजनी, हरिद्वार) के आशीर्वाद और मार्गदर्शन में समाज को संस्कार शिक्षा से जोड़ने का संकल्प लिया गया।सभा को संबोधित करते हुए महामंडलेश्वर साध्वी सरितानंद गिरि महाराज ने अपने प्रेरणास्पद उद्बोधन में कहा कि संस्कार ही वह बीज है, जिससे जीवन में मानवीयता, सद्गुण और चरित्र का वृक्ष पल्लवित होता है। जिस समाज की जड़ें संस्कारों से सींची जाती हैं, वहां कभी अधर्म, अन्याय या अव्यवस्था पनप नहीं सकती। संस्कार ही वह आधार हैं, जिन पर सशक्त समाज और सुदृढ़ राष्ट्र की नींव खड़ी होती है। उन्होंने आगे कहा कि आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने बच्चों को केवल शिक्षा ही नहीं, बल्कि जीवन-मूल्य भी दें। आधुनिकता का अर्थ अपनी परंपराओं से विमुख होना नहीं है, बल्कि संस्कृति और प्रगति का संतुलन साधना है। जब घर-घर में संस्कारों का दीप प्रज्वलित होगा, तभी समाज का चरित्र और गौरव सुदृढ़ होगा।साध्वी सरितानंद गिरि जी ने घोषणा की कि गोस्वामी समाज के हर वर्ग तक 'संस्कार शिक्षा अभियान' पहुँचाने के लिए एक संगठित योजना बनाई जा रही है। इस अभियान के माध्यम से बालक-बालिकाओं, युवाओं और अभिभावकों को भारतीय जीवन-दर्शन, आदर्श परिवार व्यवस्था, और समाज-सेवा की भावना से जोड़ा जाएगा। उन्होंने कहा यह केवल एक सामाजिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि आत्म जागरण की यात्रा है। हमें अपने भीतर के देवत्व को पहचानकर, समाज में प्रेम, सहयोग और करुणा का दीप जलाना होगा। जब हर व्यक्ति अपने कर्तव्य को धर्म मानेगा, तभी गोस्वामी समाज और राष्ट्र दोनों का उत्थान संभव है।

साध्वी जी ने अंत में यह आह्वान किया कि आइए, हम सब मिलकर इस संस्कार-यात्रा के सहभागी बनें। अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए आगे आएं, क्योंकि जब मनुष्य संस्कारित होता है, तभी समाज संस्कारित होता है और यही सच्चा राष्ट्र निर्माण है। सभा में डोरी लाल जी गोस्वामी, विनय गिरि जी, श्रवण जी ,विजय गिरि, विमला गिरि सहित समाज के अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। सभा में यह भी निर्णय लिया गया कि समाज के लोगों की सहायता के लिए एक टोल-फ्री हेल्पलाइन नंबर जारी किया जाएगा, समाज के किसी भी बंधु को कोई भी परेशानी या समस्या हो तो टोल फ्री नंबर पर अपनी समस्या बता सके।अंत में उपस्थित सभी गणमान्यजनों ने एक स्वर में समाजहित और संस्कार प्रसार के इस अभियान में योगदान देने का संकल्प लिया।

छठ पूजा की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं 27 तारीख शाम 3 :00 pm बजे से 5 :30 pm तक 28 तारीख सुबह 5 :00am बजे से 7 :30 am बजे तक उगते सूरज को अर्क देने के साथ–साथ डूबते हुए सूरज को भी अर्क दिया जाता है 72 घंटे का निर्जला वर्क रखा जाता है पूजा स्थल चिड़िया कॉलोनी पूसा छठ घाट आस्था का महापर्व,छठ वर्थतीयों को मेरा दंडवत प्रणाम बहुत कठिन व्रत होता है मैं भी करती हूं आप सभी मुझे अपना सपोर्ट समर्थ आशीर्वाद प्रदान करें सभी सुखी रहे माता बहन सदा सुहागन रहे पति बच्चा राजी खुशी रहे यही प्रार्थना करते हैं छठी मैया से सामाजिक एवं धार्मिक कार्य करनी छोटा सा सेवादार राजकुमारी रानी खुश रहे सबको खुश रखे

| आपकी समाज सेवी राजकुमारी देवी

साहित्य - शिक्षा - राजनीति की बहुमूल्य निधि : उदय प्रताप सिंह

"यूपी रत्न" डॉ. गोपाल चतुर्वेदी
एडवोकेट, वरिष्ठ साहित्यकार/पत्रकार

प्रख्यात साहित्यकार, सहृदय-श्रेष्ठ श्री उदय प्रताप सिंह जी न केवल मैनपुरी के अपितु समूचे देश के गौरव हैं।

उन्होंने साहित्य, शिक्षा व राजनीति के क्षेत्र में बनाए गए कीर्तिमानों के द्वारा अपनी जो एक अलग पहचान बनाई है, वो अति प्रशंसनीय है।दरअसल, वे एक ऐसे व्यक्ति हैं; जैसे कि आज कल प्रायः नहीं मिलते हैं।

उनसे मेरी प्रतिबद्धता के मूल में मेरे परिवार से उनकी बहुत पुरानी घनिष्ठता है।मेरे पूज्य पितामह स्व. पण्डित सियाराम चतुर्वेदी ने ब्रिटिश काल में हिन्दी भाषा व साहित्य के उत्थान व संरक्षण के लिए हिन्दी साहित्य सम्मेलन व अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मण्डल के प्रधानमंत्री रहते हुए जो अनेकों कार्य किए, उन्हें राष्ट्र भाषा हिन्दी का इतिहास कभी भी नहीं भुला पाएगा।उनके ही अथक प्रयासों से महाकवि देव की जन्मभूमि कुसमरा (मैनपुरी) में महाकवि देव स्मारक की स्थापना हुई थी।उन्होंने ही सुजरई की रानी के इकलौते पुत्र स्व. लाल सूरज भान सिंह के साहित्य प्रेम को दृष्टिगत रखते हुए मैनपुरी के लेन गंज पार्क में लाल सूरज भान सिंह पुस्तकालय की स्थापना कराई थी।जिसके वो आजीवन मंत्री रहे।10 दिसम्बर सन् 1953 में अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मण्डल का जो अधिवेशन हुआ था, उसके संयोजक भी स्व. पण्डित सियाराम चतुर्वेदी थे।उस समय श्री उदय प्रताप सिंह जी अपनी युवावस्था में थे।इस सम्मेलन का उन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा।क्योंकि इस सम्मेलन में हिन्दी जगत की मूर्धन्य विभूतियां पधारी थीं।जिनमें प्रमुख थे - मैनपुरी के राजा स्वर्गीय गोविन्द राम सिंह, उत्तर प्रदेश के तत्कालीन महामहिम राज्यपाल स्वर्गीय डॉ. कन्हैया लाल माणिक लाल मुंशी, महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला", महीयसी स्वर्गीय महादेवी वर्मा, स्वर्गीय डॉक्टर बाबू गुलाब राय, स्वर्गीय डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, स्वर्गीय आचार्य विश्वनाथ प्रसाद, स्वर्गीय डॉक्टर बरसाने लाल चतुर्वेदी, स्वर्गीय डॉक्टर चतुर्सेन शास्त्री, स्वर्गीय शिशु पाल सिंह "शिशु", स्वर्गीय हरिश चन्द्र देव वर्मा "चातक" एवं स्व. बलवीर सिंह "रंग" आदि।

इस सम्मेलन के बाद श्री उदय प्रताप सिंह जी हमारे पूज्य पितामह से अति निकटता से जुड़ गए।कालांतर में यह निकटता हमारे सारे परिवार से अति घनिष्ठता में तब्दील हो गई।हमारे ताऊजी व प्रख्यात साहित्यकार स्व. जगत प्रकाश चतुर्वेदी तो उनके घनिष्ठ मित्र थे।इस सब के चलते और अपनी साहित्यिक रुचि की वजह से मैं सन् 1975 से उनका स्नेह भाजक बना हुआ हूं।

सम्मान्य श्री उदय प्रताप सिंह जी को मैं "चाचा जी" कहकर संबोधित करता हूं।साथ ही वे मेरे अति आदरणीय हैं।परन्तु उनका मेरे प्रति व्यवहार शुरू से ही दोस्ताना रहा है।जब वे मदन इण्टर कॉलेज, भोगाँव (मैनपुरी) के प्राचार्य थे, तब वे समय मिलते ही प्रायः मेरे मैनपुरी स्थित निवास पर आ जाते थे और मुझे अपने साथ लेकर पैदल ही घुमक्कड़ी के लिए यत्र-तत्र चल देते थे। कभी वे कहते थे कि आज चौधरी सूरज सिंह यादव (पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष) के यहां चलना है, कभी वे कहते कि श्री नरेन्द्र नाथ चतुर्वेदी (राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त हिन्दी प्रवक्ता, क्रिश्चियन इण्टर कॉलेज) के यहां चलना है, तो कभी कहते कि आज श्री लाखन सिंह भदौरिया "सौमित्र" (प्रख्यात साहित्यकार, भोजपुरा) के यहां चलना है। आदि-आदि। पैदल चलने के कारण व अनेक लोगों से उनकी व हमारी दुआ-सलाम और पारस्परिक बातचीत की वजह से इस कार्य में कई-कई घंटे लग जाते थे।इस सब में उन्हें व हमें अत्यधिक आनन्द आता था।इतना ही नहीं कभी वे कहते बेवर चलना है, कभी कहते कुरावली चलना है, तो कभी कहते कुसमरा चलना है।वस्तुतः उनका आत्मीय जगत व व्यवहार जगत अत्यन्त व्यापक था और अभी भी है।

मैं भी जब कभी उनसे मिलने भोगांव जाता था, तो वे मेरे सम्मान में अपने कॉलेज में ही स्थानीय कवियों व साहित्यकारों को एकत्रित कर लिया करते थे।साथ ही काव्य गोष्ठी हुआ करती थी।इसके अलावा वे हम सभी का तरह-तरह के मिष्ठान, नमकीन, चाय व ठंडा आदि से स्वागत करते थे।इस बैठक में प्रायः होते थे - स्व. देवदत्त दुबे "देव सरोज", स्व. दिनेश "निर्भय", श्री बदन सिंह "मस्ताना" आदि। मेरे लिए वे दिन अत्यन्त आनन्द, स्फूर्ति, प्रेरणा व ऊर्जा आदि देने वाले थे।

मैं अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि के चलते सन् 1982 में वकालत के व्यवसाय में आ गया था।क्योंकि मेरे पितामह स्व. पण्डित सियाराम चतुर्वेदी नामी-गिरामी वकील थे।जो कि कई वर्षों तक जिला शासकीय अधिवक्ता भी रहे।परन्तु श्री उदय प्रताप सिंह जी मेरी साहित्यिक रुचि व अपने अत्यधिक स्नेह के चलते यह चाहते थे कि मैं शिक्षा के क्षेत्र में आऊं।क्योंकि उनका मानना था कि साहित्य व शिक्षा एक दूसरे के पूरक हैं।उन्हीं दिनों नेशनल स्नाकोत्तर महाविद्यालय, भोगांव (मैनपुरी) में राजनीति विज्ञान के प्रवक्ता पद हेतु आवेदन विज्ञापित हुए थे। अतएव मैंने उनके कहने पर आवेदन कर दिया।बाद को वे मेरी सिफारिश के लिए स्वयं मुझे अपने साथ लेकर वहां गए। परन्तु कुछ विसंगतियों के कारण मेरी वहां नियुक्ति नहीं हो सकी।जिसका उन्हें बहुत दिनों तक काफी मलाल रहा।

बाद को मैं वकालत के साथ-साथ पत्रकारिता के क्षेत्र में भी सक्रिय हो गया।मुझे पत्रकार के रूप में देखकर उन्हें अतिशय प्रसन्नता होती थी और आज भी है। मैं जब मैनपुरी से प्रकाशित प्रमुख हिन्दी साप्ताहिक "बलिदान" का साहित्यिक संपादक था, तब मैंने उसमें "मैनपुरी के कवि" नामक धारावाहिक श्रृंखला प्रारंभ की थी।जिसमें मैं प्रत्येक सप्ताह मैनपुरी जनपद में जन्मे कवियों का विस्तृत परिचय व उनकी प्रमुख कविताओं का प्रकाशन करता था।इस श्रृंखला में मैंने श्री उदय प्रताप सिंह जी को भी अत्यन्त प्रमुखता के साथ प्रकाशित किया था।साथ ही मैंने उसके कुछ विशेषांकों में उनकी कुछ राष्ट्रवादी कविताएं मुख्य पृष्ठ पर प्रकाशित की थीं।मेरे इस कार्य की उन्होंने भूरि-भूरि प्रशंसा की।वे कहते थे - "गोपाल जी, आपने मैनपुरी के अनेकों गुमनाम कवियों को खोज-खोज कर उन्हें जो पहचान दी है, वो अति प्रशंसनीय है।"

विद्वता की साकार प्रतिमूर्ति श्री उदय प्रताप सिंह जी हिन्दी व अंग्रेजी के प्रकांड विद्वान हैं।उन्हें हजारों विद्यार्थियों के साथ-साथ समाजवादी पार्टी के मुखिया, देश के पूर्व रक्षा मंत्री व उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री स्व. मुलायम सिंह यादव जी को भी आजाद हिन्द इण्टर कॉलेज, करहल (मैनपुरी) में शिक्षा देने का गौरव प्राप्त है।उनकी अपनी मातृ भाषा हिन्दी के अलावा अंग्रेजी भाषा पर भी अत्यधिक पकड़ है।इसी के चलते उन्होंने अनेकों अंग्रेजी कविताओं का हिन्दी पद्यानुवाद किया है।जो कि काफी चर्चित रहा है।

"उदयजी" के नाम से प्रख्यात श्री उदय प्रताप सिंह जी के पूज्य पिताश्री स्व. डॉ. हरि प्रताप सिंह चौधरी अपने सद्गुणों के चलते "अजात शत्रु" के नाम से प्रख्यात थे। वही संस्कार उन्हें अपने पूज्य पिताश्री से विरासत में मिले हैं। वे सही अर्थों में मानवतावादी हैं।राष्ट्रवाद की भावना उनमें कूट-कूट कर भरी हुई है।वह सर्वहारा वर्ग के प्रतिनिधि कवि हैं।विभिन्न सामाजिक संदर्भों व सामाजिक विसंगतियों पर उन्होंने जमकर लिखा है और लिख रहे हैं।वे आज भी अपनी 92 वर्ष की आयु में लखनऊ में रहते हुए निरन्तर काव्य लेखन में रत हैं।साथ ही वे सोशल मीडिया पर अत्यधिक सक्रिय हैं।उनका लेखन बहुआयामी है।उन्हें छंद, गीत, गजल, रूबाई, गद्य गीत आदि लिखने में महारथ हासिल है।वे जितने कवि सम्मेलनों में लोकप्रिय रहे हैं, उतने ही मुशायरों में भी। मैं बड़भागी हूं, जो मुझे उनके साथ अनेक कवि सम्मेलनों में काव्य पाठ करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है।

श्री उदय प्रताप सिंह जी चूंकि मूलतः शिक्षक हैं, इसलिए शिक्षकों व विद्यार्थियों के प्रति उनकी अत्यधिक प्रतिबद्धता है।उनमें अध्यापकों के प्रति श्रद्धा, मान-सम्मान व सहानुभूति और विद्यार्थियों के प्रति सहज वात्सल्य भाव है।उन्हें किसी भी प्रकार का अभिमान छू तक नहीं गया है।चाहे वे आजाद हिन्द इण्टर कॉलेज, करहल (मैनपुरी) के शिक्षक रहे हों, चाहे मदन इण्टर कॉलेज, भोगांव (मैनपुरी) व नारायण इण्टर कॉलेज, शिकोहाबाद (फिरोजाबाद) के प्राचार्य रहे हों, चाहे पिछड़ा वर्ग आयोग के सदस्य रहे हों, चाहे लोक सभा सांसद रहे हों, चाहे राज्य सभा सांसद रहे हों और चाहे उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष रहे हों।इन सभी पदों पर रहते हुए उनकी आत्मीयता, सहजता, सरलता, कर्मठता, उदारता, परोपकारिता आदि किसी में कहीं पर बिल्कुल भी फर्क नहीं आया है।

आज मुझे याद आ रहे हैं उनकी कर्मठता के वे दिन जब वो मदन इण्टर कॉलेज, भोगांव (मैनपुरी) के प्राचार्य थे।वे प्रतिदिन शिकोहाबाद स्थित अपने स्थाई निवास से भोगांव रोडवेज बस के द्वारा आया-जाया करते थे।कभी कोई विशेष कार्य हो तभी वे भोगांव में ठहरते थे।उनकी ये दिनचर्या कई वर्षों तक निरंतर चली।उनकी ईमानदारी बेमिसाल है। वे अब तक विभिन्न उच्च पदों पर आसीन रहे हैं, परन्तु उन्होंने कभी भी किसी अनुचित कार्य की सिफारिश न तो स्वयं स्वीकार की है और न ही किसी अन्य से की है। जो कि आज के समय में अत्यन्त दुर्लभ है।

श्री उदय प्रताप सिंह जी की धर्म पत्नी स्व. डॉ. चैतन्य यादव अत्यन्त विदुषी महिला थीं।जिन्होंने कि बी.डी.एम. म्युनिसिपल महाविद्यालय, शिकोहाबाद (फिरोजाबाद) में कई वर्षों तक प्रवक्ता के पद पर कार्य किया।संयोग से मेरी धर्मपत्नी श्रीमती वसुधा चतुर्वेदी भी उनकी विद्यार्थी रही हैं।हमारी पत्नी बताती हैं, कि मैडम अत्यन्त सज्जन व उदार थीं।उन्होंने अपने पतिदेव को काव्य के क्षेत्र में सदैव प्रेरित किया।चूंकि उनका कण्ठ अत्यन्त मधुर था, इसलिए वे अपने पतिदेव की कविताओं का संगीतमय गायन कर हम सभी को भाव-विभोर कर देती थीं।कभी-कभी कॉलेज के विशेष कार्यक्रमों में श्री उदय प्रताप सिंह जी को भी सादर आमंत्रित किया जाता था।उन्हें सुनकर हम सभी आनंदित हो जाया करते थे।

हमारे अलावा हमारे ससुराल पक्ष से भी अति घनिष्ठता के चलते श्री उदय प्रताप सिंह जी सन् 1984 में धातरी (फिरोजाबाद) में संपन्न हुए हमारे विवाह समारोह में सपत्नीक शामिल हुए थे।क्योंकि वे हमसे और हमारे ससुराली जनों से भी संबद्ध थे।हमारे ससुर साहब स्वर्गीय कृष्ण चंद्र मिश्र गिरधारी इंटर कॉलेज, सिरसागंज (फिरोजाबाद) और साले स्वर्गीय राजेश मिश्र भारतीय इंटर कॉलेज, धातरी (फिरोजाबाद) में अध्यापक थे।इसके अलावा हमारे विवाह के मध्यस्थ स्व. साहित्य प्रकाश दीक्षित उदय जी के अत्यन्त घनिष्ठ मित्र थे।जो कि भारतीय इण्टर कॉलेज, धातरी (फिरोजाबाद) के प्राचार्य व समाजवादी पार्टी के कद्दावर नेता थे। साथ ही हमारी पत्नी श्रीमती वसुधा चतुर्वेदी उनकी पत्नी स्व डॉ. चैतन्य यादव की प्रिय छात्रा रहीं थीं।

डॉ. चैतन्य यादव का सन् 1987 में आकस्मिक निधन हो गया।उनके न रहने पर उदयजी अत्यन्त टूट गए।क्योंकि उनसे उनका अत्यन्त भावनात्मक लगाव था।उनके निधन के बाद वे स्व. मुलायम सिंह यादव जी के आग्रह पर राजनीति के क्षेत्र में आ गए।क्योंकि नेता जी को अपनी पार्टी के लिए उन जैसे शिक्षित, जुझारू, कर्मठ व ईमानदार व्यक्ति की तलाश थी।

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि उनसे यशस्वी सुपुत्र प्रोफेसर डॉ. असीम यादव (पूर्व विधान परिषद सदस्य) ने अपने पूज्य पिताश्री के पद-चिन्हों पर चलते हुए शिक्षा व राजनीति के क्षेत्र में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई हुई है।उनकी सुपुत्री डॉ. शैफाली यादव आर.सी.ए. कन्या महाविद्यालय, मैनपुरी की प्राचार्य हैं।साथ ही उनकी सुपुत्री श्रीमती सुरभि यादव व श्रीमती रूपाली यादव भी अपने पूज्य पिताश्री के द्वारा अधूरे छोड़े गए कार्यों को पूर्ण करने में कृत संकल्पित हैं।इस तरह उनका पूरा ही परिवार देश व समाज की सेवा के लिए पूर्ण निष्ठा के साथ समर्पित है।

मेरी प्रभु से प्रार्थना है कि श्री उदय प्रताप सिंह जी शतायु ही नहीं, अपितु चिरायु हों।जिससे आगामी पीढ़ियां उनके व्यक्तित्व व कृतित्व से लाभान्वित हो सकें।

"यूपी रत्न" डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, एडवोकेट
(लेखक प्रख्यात साहित्यकार, चिंतक व पत्रकार हैं)

डॉ. नितिन नायडू अंक ज्योतिष में पीएचडी एवं गोल्ड मेडल से सम्मानित

सुनील चिंचोलकर

बिलासपुर, छत्तीसगढ़। उदयपुर (राजस्थान)। श्री महर्षि कॉलेज ऑफ वैदिक एस्ट्रोलॉजी, उदयपुर द्वारा बिलासपुर निवासी डॉ. नितिन कुमार नायडू को अंक ज्योतिष विज्ञान में उत्कृष्ट योगदान हेतु पीएच.डी. उपाधि एवं गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान उन्हें अंक ज्योतिष के क्षेत्र में दो दशक से अधिक समय से किए जा रहे उनके निरंतर अनुसंधान और समाज सेवा के लिए प्रदान किया गया।

डॉ. नायडू पिछले 20 वर्षों से अंक ज्योतिष के माध्यम से लोगों के जीवन की समस्याओं का कारण और समाधान बताते आ रहे हैं। उनका मानना है कि हर व्यक्ति के जीवन की दिशा और कर्म उसके जन्मांक में छिपे होते हैं, जिन्हें समझकर जीवन को संतुलित किया जा सकता है।

शैक्षणिक योग्यताः

क्लासिकल गायन में विशारद, गीत-ग़ज़ल व भजन में भातखंडे संगीत विद्यालय से दो वर्षीय प्रशिक्षण, नेचुरोपैथी व योग में तीन वर्ष का डिप्लोमा, अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय से योग प्रमाणपत्र, पतंजलि योगपीठ से योग सर्टिफिकेट कोर्स, मनोविज्ञान में परास्नातक और रेकी ग्रैंड मास्टर कोर्स सहित अनेक विद्या क्षेत्रों में दक्षता प्राप्त है।

जीवन दर्शनः

डॉ. नायडू ने विवाह न करने का संकल्प लिया है और पिछले 27 वर्षों से आध्यात्मिक जीवन, अनुसंधान एवं मानव सेवा को समर्पित हैं। वे "हर व्यक्ति, चाहे अमीर हो या गरीब, अंक ज्योतिष और योग के माध्यम से अपने जीवन का समाधान पा सके" — इस उद्देश्य के साथ समाज सेवा में निरंतर सक्रिय हैं।

प्रगतिशील रेहड़ी पट्टी ठेला यूनियन (सीटू) का सम्मेलन संपन्न : सती साहू अध्यक्ष, करण सिंह सचिव निर्वाचित

परिवहन विशेष न्यूज

रायपुर (छत्तीसगढ़)। प्रगतिशील रेहड़ी पट्टी ठेला यूनियन (सीटू) की महादेवघाट इकाई का पहला सम्मेलन 28 अक्टूबर को बी सान्याल नगर (मेहर भवन) में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन छत्तीसगढ़ सीटू के अध्यक्ष सोमनाथ बनर्जी ने सीटू का झंडा फहरा कर किया।

अपने उद्घाटन भाषण में बनर्जी ने सम्मेलन के प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कहा कि सड़क किनारे छोटे-मोटे व्यापार कर अपनी जीविका चलाने वाले मजदूरों को शासन-प्रशासन-पुलिस सहित स्थानीय गुंडे परेशान करते रहते हैं। सड़क किनारे व्यापार कर अपना गुज़ारा करने वाले लोग, इस देश की पूंजीवादी व्यवस्था की अक्षमता का प्रमाण हैं। असल में, इस देश में युवा अपना स्वरोजगार स्थापित कर, सबको रोजगार देने में अक्षम सरकारों पर अपना अहसान ही कर रहे हैं। सीटू नेता ने बताया कि रेहड़ी पट्टी पर व्यवसाय करने वालों के हक के लिए सीटू ने लंबी लड़ाई लड़ी है और इन फुटकर व्यवसायियों के अधिकारों को सुप्रीम कोर्ट से मान्य भी कराया है। उन्होंने कहा कि चाहे नगर निगम हो, नगर पंचायत हो या ग्राम पंचायतों के लोग हों या फिर पुलिस, अगर बुलडोजर लेकर आते हैं, तो उनसे कहिए कि हमें पहले रोजगार दीजिए और नहीं दे सकते, तो हमारे व्यवसाय का व्यवस्थापन कीजिए। साफ-साफ कहिए कि हिंदुस्तान हमारा है, हम नहीं हटेंगे। सीटू आपके साथ है, तो आप को डरने की जरूरत नहीं है। उन्होंने संगठन की सदस्यता बढ़ाने पर भी जोर दिया।

सम्मेलन को संबोधित करते हुए शिक्षकों के नेता तथा माकपा के रायपुर जिला सचिव राजेश अवस्थी ने कहा कि आजीविका का अधिकार हमारा संविधान प्रदत्त मौलिक अधिकार है और अगर आप के व्यवसाय से यातायात बाधित नहीं हो रहा और आप कोई अवैध व्यापार नहीं कर रहे, तो कोई भी आप को कानूनन आपके व्यवसाय से नहीं हटा सकता। आप सब अपने अधिकारों को पहचाने और संघर्ष के लिए तैयार हों। हम लड़ेंगे और जीतेंगे। सम्मेलन को यूनियन की मोवा इकाई के सचिव प्रवीण सेन, कोषाध्यक्ष नीलकंठ साहू तथा रमेश यादव आदि ने भी संबोधित किया। सम्मेलन का समापन और आभार प्रदर्शन यूनियन के नेता मिनेंद्र साहू के संबोधन से हुआ।

सम्मेलन में मजदूर कार्यकर्ताओं ने भी अपनी बातें रखी जिस पर विस्तृत चर्चा हुई तथा इकाई के पदाधिकारियों का निर्वाचन किया गया। सर्वसम्मति से सती साहू को अध्यक्ष, करण सिंह को सचिव, नीलिमा साहू को कोषाध्यक्ष, राजेश कुमार, कमला धीवर, रानी शर्मा तथा सुशील तारक को उपाध्यक्ष, प्रभा गुप्ता, ममता शर्मा, कमला साहू और विमला गुप्ता को सहसचिव चुना गया तथा शीतल पटेल को संरक्षक बनाया गया।

करण सिंह, सचिव, प्रगतिशील रेहड़ी पट्टी ठेला यूनियन (सीटू) की ओर से जारी विज्ञप्ति

स्वच्छता, पवित्रता व सूर्योपासना एवं लोक आस्था का महापर्व छठ पूजा का खरना धूमधाम से मनाया गया

परिवहन विशेष न्यूज

देवघर। देवनगरी में लोक आस्था व सूर्योपासना का महापर्व छठ पूजा का दूसरा दिन खरना है। जिसें इस महापर्व का सबसे महत्वपूर्ण चरण माना जाता है। आज व्रती द्वारा पूरे दिन निर्जला उपवास रखकर सूर्यास्त के बाद भगवान सूर्य की पूजा-अर्चना कर गुड़ की खीर और गेहूं के आटें की रोटी का प्रसाद तैयार कर, व्रती द्वारा इस प्रसाद को ग्रहण करने के पश्चात परिवार, आस-पड़ोस के लोगों, सम्बन्धी, मित्र-गण, शुभचिन्तकों के बीच वितरण किया गया। इस प्रसाद को ग्रहण करने के पश्चात् व्रती द्वारा 36 घंटे के कठोर निर्जला व्रत की शुरुआत होगी, जो अनुशासन, आत्मसंयम और आस्था का प्रतीक माना जाता है। मौके पर भारतीय वैश्य महासभा के जिला अध्यक्ष, श्री प्रभाष गुप्ता ने कहा कि सूर्य ऊर्जा, स्वास्थय और जीवन शक्ति का प्रतीक छठ पूजा के माध्यम से व्रती सूर्यदेव के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते है, जिनकी कृपा से ही पृथ्वी पर जीवन संभव है। भारतीय संस्कृति की अनूठी पहचान का प्रतीक यह छठ महापर्व सादगी, पवित्रता, आशा व नई ऊर्जा के नव संचार और सामाजिक सद्भाव का संदेश देती है।

क्या ट्रम्प की टैरिफ पॉलिसी और भारत-रूस -चीनी मुद्रा- सहयोग की पहल वर्तमान डॉलर- मॉडल को "डीडॉलराइजेशन" की ओर ले जा रहे हैं ?

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं
गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर आज का वैश्विक आर्थिक परिदृश्य पहले से कहीं अधिक द्रुत गति से बदल रहा है। भारत, रूस, चीन, मध्यपूर्व एवं दक्षिण-एशियाई अर्थतंत्र, और अमेरिका के बीच चल रही प्रतिस्पर्धा एवं गठबंधनों का मिजाज बदल रहा है। उस बदलते परिदृश्य में यह कहावत- सच प्रतीत होती है कि "कल का हर वाक्या तुम्हारा था, आज दास्तान हमारी है।"इसे विशेष रूप से डोनाल्ड ट्रम्प- रूस भारत चीन संदर्भ में प्रस्तुत किया है। अर्थात, अमेरिका-केंद्रित वैश्विक व्यवस्था का प्रभुत्व कम हो रहा है और रूस भारत चीन उस बदलाव में महत्वपूर्ण भूमिका ले रहा है, या कम-से-कम प्रयासरत है।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र ऐसा मानता हूं कि क्या वास्तव में रूस भारत चीन भारत ऐसे राजनीतिक कदम उठाते जा रहे हैं जिनकी "गूंज" व्हाइट हाउस तक पहुँच रही है,या पहुँच सकती है ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है। दशकों से हम देखते आ रहे हैं कि वैश्विक स्तरपर पारंपरिक रूप से,वैश्विक व्यापार और ऊर्जा सौदे प्रमुख रूप से यूनाइटेड स्टेट्स डॉलर में विनियोजित होते आए हैं,जिसने अमेरिका को न सिर्फ मुद्रा-बल बल्कि वैश्विक वित्त-सिस्टम में असाधारण प्रभुत्व प्रदान किया।लेकिन इस व्यवस्था में कई असंतुलन हैं,उभरती अर्थव्यवस्थाओं को डॉलर- निर्भरता के कारण विनिमय जोखिम, शुल्क- बाधाएं और नियंत्रणों का सामना करना पड़ता है। इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकार के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे,क़्या ट्रम्प की टैरिफ पॉलिसी और भारत- रूस-चीनी मुद्रा- सहयोग की पहल वर्तमान डॉलर-मॉडल को "डीडॉलराइजेशन" की ओर ले जा रहे हैं ?बता दें क़िइस आर्टिकल में दिए गए विचार संकेत- तथा दिशासूचक हैं, न कि पूर्णतया प्रमाणित 'करार' की तरह।

साथियों बात अगर हम रूस भारत चीन एवं डॉलर- सत्तात्मक व्यवस्था क़े बदलते परिदृश्य में भारत की स्थिति समझने की करें तो,सबसे पहले हम उस बड़े प्रसंग पर दृष्टि डालते हैं जिसमें डॉलर की प्रभुता और उसकी चुनौती दोनों मौजूद हैं। वैश्विक रूप से डॉलर ने दशकों से मुख्य आरक्षित मुद्रा, व्यापार एवं पेट्रोलियम लेनदेन की प्रमुख मुद्रा, और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय व्यवस्था की रीढ़ के रूप में काम किया है।लेकिन अब "डीडॉलराइजेशन" की दिशा में संकेत बढ़ रहे हैंः विशेष रूप से रूस-चीन-भारत जैसे देशों में जो अमेरिकी वेस्टर्न सिस्टम पर अधिक निर्भर नहीं रहना चाहते। भारत इस परिदृश्य में महत्वपूर्ण मोड़ पर है। भारत सरकार ने अपनी नीतियों में एक स्पष्ट संकेत दिया है कि भारत अपने मुद्रा-चयन, भुगतान व्यवस्था और विनिमय व्यवस्था में अधिक सक्रिय होना चाहताहै,विशेष रूप से यह कि सिर्फ डॉलर के सहारे नहीं रहें। उदाहरण के लिए, रिज़र्व बैंक ऑफ़ इंडिया ने हाल में यूएई दिरहम और इंडोनेशियाई रुपिया के लिए रेफरेंस रेट फिक्स करने की घोषणा की है, जिसे "रुपये के टरनेशनलीसैशन" की दिशा में एक कदम माना जा रहा है।iसंभवतः उन्होंने डॉलर प्रभुत्व को चुनौती देने की दिशा में महत्वपूर्ण रणनीतिक कदम उठाए हैं।

साथियों बातें अगर हम आरबीआई द्वारा रेफरेंस-रेट्स में बदलाव,भारत की मुद्रा और व्यापार रणनीति को समझने की करें तो, "आरबीआई ने यूएई व इंडोनेशिया की करेंसी के लिए रेफरेंस रेट फिक्स कर लिए हैं,इस अवसर पर यह जाना जाना महत्वपूर्ण है कि "रेफरेंस रेट" शब्द का क्या अर्थ हैः यह उस मुद्रा के मुकाबले भारतीय रुपया का औपचारिक सार्वजनिक दर होता है, जिसे बैंक,व्यवसाय और एक्सपोर्ट- इम्पोर्ट कंपनियाँ उपयोग कर सकती हैं और जिससे विनिमय जोखिम कम होता है। यह कदम दो मायनों से रणनीतिक हैःएक, यह व्यापारियों और एक्सपोर्ट- इम्पोर्टरों को डॉलर के जरिए जाने-माने मध्यस्थता (डॉलर - इंटरमीडिएशन) से बहुत हद तक मुक्त करता है। उदाहरण-स्वरूप, यदि भारत-यूएई व्यापार में दिरहम को सीधे रेफरेंस दर के तहत उपयोग कर सके, तो रुपया दिरहम या दिरहम रुपया लेनदेन आसान हो जाती है।यह मुद्रा- अंतर्राष्ट्रीयकरण की दिशा में संकेत देता है, यानें, भारत यह संदेश देना चाहता है कि रुपया सिर्फ घरेलू मुद्रा नहीं रहेगा, बल्कि व्यापारिक रूप से और वित्तीय रूप से विदेशों में अधिक स्वीकार्य हो सकेगा।

साथियों बात अगर हम रूस- भारत तेल लेनदेन एवं चीनी युआन-भुगतान क़े पहलू को समझने की करेंतो,रूसी तेल खरीदी में रूस ने भारत को चीनी करेंसी यूआन में भुगतान करने की सुविधा वाले इस बिंदु का विश्लेषण कुछ-सा जटिल है क्योंकि सच्चाई काफ़ी हद तक संकेतों पर आधारित है और अभी पूर्ण रूप से स्थापित नियम नहीं दिख रहे।मीडिया स्रोत बताते हैं कि रूस-भारत के बीच तेल लेनदेन में कुछ मामलों में चीनी युआन में भुगतान की मांग हो रही है। मीडिया में ऐसी जानकारी आई है कि जुलाई 2023 में हुआ एक समाचार था कि भारतीय रिफाइनर ने कुछ रूसी क्रूड के लिए युआन में भुगतान शुरू किया है। यानें रूस-भारत तेल लेनदेन में युआन में भुगतान मुमकिन हो रहा है और मांग हो रही है, लेकिन यह "स्वीकारात्मक रूप से स्थापित सुविधा" का मंच अभी पूरी तरह तैयार नहीं हुआ है और इसे "रूस ने भारत को चीनी युआन भुगतान की सुविधा दे दी है" के रूप में बहुत निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। हालाँकि संकेत स्पष्ट हैं कि ऐसा एक प्रारंभिक चरण है। इसका महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि यदि ऐसा स्थायी रूप ले लेता है, तो यह डॉलर-मध्यस्थता को कम कर सकता है और भारत- रूस- चीन के आर्थिक पैंतरे को बदल सकता है, जिससे अमेरिकी डॉलर की प्रभुता पर प्रश्नचिन्ह उठ सकता है।

साथियों बात अगर कर हम इस साल के अंत तक पुतिन-भारत यात्रा, तेल-डिफेंस गठजोड़ एवं डॉलर पर प्रभाव को समझने की करें तो, "इस वर्ष के अंत में व्लादीमिर पुतिन संभवतः भारत आ रहे हैं; तेल-डिफेंस में डील हो सकती है जिससे अमेरिका डॉलर पर प्रभाव पड़ेगा"। इस तरह का विश्लेषण वैश्विक रणनीति एवं भू-राजनीति कामिश्रण है।पहले यह देखना होगा कि क्या पुतिन की भारत यात्रा की पुष्टि हो चुकी है ?यदि इस तरह का भारत-रूसटकराव व साझेदारी वास्तव में इस वर्ष के अंत या तदनंतर सक्रिय हो गई, तो यह अर्थ रखती है कि भारत एक भरोसेमंद रणनीतिक साझेदार बनते हुए अमेरिका-मध्यस्थ वैश्विक व्यवस्था (जिसमें डॉलर की भूमिका केंद्रीय थी) से थोड़ा- बहुत विस्थापन कर सकता है। उदाहरण के रूप में,यदि भारत- रूस मिलकर ऐसे समझौते करें जिनमें डॉलर का उपयोग सीमित हो, तकनीकी-प्रतिरक्षा साझेदारी बढ़े, और ऊर्जा लेनदेन गैर-डॉलर में हों, तो इसका डॉलर-मुखी व्यवस्था पर दबाव बनने का अवसर है।पर यह भी याद रखना होगा कि "अमेरिका डॉलर पर असर" तुरंत नहीं आएगा,वैश्विक मुद्रा व वित्त व्यवस्था बड़ी और जटिल है। हालांकि संकेत मिल रहे हैं कि "बहुध्रुवीय" व्यवस्था की दिशा में कदम बढ़ रहे हैं। उदाहरणस्वरूप, ब्रिक्स देशों में स्तरपर नए वित्तीय विपक्षी उपकरण परसटीक विचार हो रहे हैं। इसलिए यदि भारत-रूस तेल- डिफेंस गठजोड़ वास्तव में रूप लेता है, तो उस कदम की गूंज अमेरिक़ी - व्हाइट हाउस तक पहुँच सकती है।लेकिन इस बिंदु को "घटित असर पड़ा है" के रूप में नहीं बल्कि "हो सकता है असर पड़े" के युक्तिसूचक स्वर में लेना उचित होगा।

साथियों बात अगर हम अमेरिका में ट्रम्प के टैरिफ केस और भारत -दूरगामी प्रभाव को समझने की करें तो"नवंबर में सुप्रीम कोर्ट में ट्रम्प टैरिफ पर सुनवाई होगी, लोअर कोर्ट पहले ही खारिज कर चुकी है।" जैसा हमने देखा, अमेरिका की सुप्रीम कोर्ट ने 5 नवंबर को सुनवाई तय की है। निचली अदालतों (फेडरल सर्किट) ने ट्रम्प के बड़े टैरिफ- उपायों को अवैध पाया है। भारत-प्रसंग में इसका महत्व इसलिए है क्योंकि अमेरिका- केंद्रित वैश्विक व्यापार नियमों में बदलाव यदि आएँ, भारत को अवसर मिल सकता है कि वह तय कर सके अपने व्यापार मुद्राओं -भुगतान माध्यमों को पुनर्समायोजित करे। उदाहरण के लिए, यदि अमेरिकी टैरिफ नियम और वैश्विक व्यापार संरचना अधिक अनिश्चित हुई, तो भारत-रूस-चीन आदि साझेदारियों के लिए समय उपयुक्त बन सकता है। इस तरह, इस सुनवाई एवं निर्णय-परिणाम की गूंज भारत- नेताओं के रणनीतिक विकल्पों पर पड़ सकती है।

अतःअगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि क़्या ट्रम्प की टैरिफ पॉलिसी और भारत-रूस-चीनी मुद्रा- सहयोग की पहल वर्तमान डॉलर-मॉडल को "डीडॉलराइजेशन" की ओर ले जा रहे हैं ? भारत-अमेरिका क़ी आज भू-अर्थव्यवस्था में भारत- मॉडल की बढ़ती उपस्थिति को दर्शाती है-"कल का हर वाक्या तुम्हारा था,आज दास्तान हमारी है"

चंदन गुप्ता हत्या मामले में एनआईए कोर्ट के विशेष न्यायाधीश विवेकानंद शरण त्रिपाठी का फैसला

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

3 जनवरी, 2025 को, एनआईए कोर्ट के विशेष न्यायाधीश विवेकानंद शरण त्रिपाठी (वी.एस. त्रिपाठी) ने 26 जनवरी, 2018 को कासगंज के अभिषेक उर्फ चंदन गुप्ता की क्रूर हत्या में मुस्लिम समुदाय के 28 आरोपियों को दोषी ठहराया और उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई। यह भयानक हत्या चंदन की तिरंगा यात्रा के दौरान मुस्लिम समुदाय के लोगों द्वारा की गई थी।

आजीवन कारावास की सजा के अलावा, न्यायाधीश त्रिपाठी ने अपने फैसले में एक और महत्वपूर्ण मुद्दा उठाया है और वह है पैसे के लिए किसी का भी प्रतिनिधित्व करने के लिए महंगे वकीलों की तैयारी! आज तक सुप्रीम कोर्ट या हाईकोर्ट के किसी भी न्यायाधीश ने इस मुद्दे पर कभी टिप्पणी नहीं की है।

सजा सुनाते समय, न्यायाधीश त्रिपाठी ने दोषियों को बचाने में शामिल राष्ट्रीय और विदेशी एनजीओ की भूमिका पर सवाल उठाए और उन्हें रोकने के लिए अपने आदेश की एक प्रति केंद्रीय गृह मंत्रालय और बार काउंसिल ऑफ इंडिया को भेजी है।

न्यायाधीश त्रिपाठी ने अपने आदेश में कहा था कि, "इन एनजीओ को कहाँ और कौन फंडिंग कर रहा है, उनका अंतिम उद्देश्य क्या है, इसकी पूरी तरह से जाँच करने की जरूरत है। ऐसा आरोप है कि जब भी कोई आतंकवादी पकड़ा जाता है, तो ऐसे एनजीओ तुरंत उसका बचाव करने के लिए बहुत महंगे वकील उपलब्ध कराते हैं। यह राष्ट्रीय सुरक्षा चिंता का विषय है।"

कोर्ट ने अपने आदेश में निम्नलिखित 7 एनजीओ/संगठनों के नाम दिए हैं।

1. सिटिजन्स फॉर जस्टिस एंड पीस, मुंबई
2. पीपुल्स यूनियन फॉर सिविल लिबर्टीज, दिल्ली
3. रिहाई मंच
4. अलायंस फॉर जस्टिस एंड अकाउंटेबिलिटी, न्यू यॉर्क
5. इंडियन अमेरिकन मुस्लिम काउंसिल, वाशिंगटन डीसी
6. साउथ एशिया सोलिडेरिटी ग्रुप, लंदन
7. जमीयत उलेमा-ए-हिंद

जस्टिस त्रिपाठी का यह आदेश वास्तव में ऐतिहासिक है और उन्होंने सरकार से समान मांग की है। हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में प्रैक्टिस करने वाले वकीलों की फीस सार्वजनिक रूप से उपलब्ध होनी चाहिए और उनकी संपत्ति की घोषणा भी सार्वजनिक जानकारी के लिए प्रकाशित की जानी चाहिए। उन्हें हर साल कितना आयकर भरा है, यह भी सार्वजनिक करना चाहिए; वकीलों की फीस केवल चेक/बैंकिंग चैनलों के माध्यम से ही वसूली जानी चाहिए; सुप्रीम कोर्ट के शीर्ष वकीलों से वकील फीस की प्राप्ति के बारे में शपथ-पत्र मांगा जाना चाहिए कि उनकी फीस किसने चुकाई थी, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि किसी आतंकवादी संगठन को फंडिंग तो नहीं दी गई थी।

न्यायाधीश त्रिपाठी के इस ऐतिहासिक आदेश का सभी देशभक्त भारतीयों द्वारा स्वागत और समर्थन होना चाहिए!

रोहिंग्या बांग्लादेशी घुसपैठियों को देश से निकालने की मांग करने वाले अधिवक्ता अश्विनी उपाध्याय की याचिका 2017 से लंबित है।

दो रोहिंग्या, मोहम्मद सलीमुल्लाह और मोहम्मद शाकिर, जो भिखारी जैसे दिखते थे और खराब स्थितियों में रहते थे, उनके लिए छह उच्च-स्तरीय वकील सुप्रीम कोर्ट में पेश हुए। ये वकील थे - डॉ. राजीव धवन, प्रशांत भूषण, डॉ. अश्विनी कुमार, कोलिन गोंसाल्विस, मयांक फली नरीमन और कपिल सिब्बल।

जबरन धर्मांतरण रोकने के लिए अधिवक्ता अश्विनी उपाध्याय की याचिका का 10 महंगे शीर्ष वकील विरोध कर रहे हैं।

पूजा स्थल कानून को चुनौती देने वाली उपाध्याय की याचिका का 22 शीर्ष वकील विरोध करते देखे जाते हैं। इनमें सांसद, विधायक और पूर्व कानून मंत्री, गृह मंत्री, विदेश मंत्री और शिक्षा मंत्री शामिल हैं।

ऐसे शीर्ष वकीलों के कारण ही यह याचिका लंबे समय से लंबित है।

अक्टूबर 2024 में ही, एक अन्य एनजीओ - सोशल ज्यूरिस्ट ने दिल्ली हाईकोर्ट में याचिका दायर की और केंद्र से "रोहिंग्या शरणार्थियों के बच्चों को" सार्वजनिक स्कूलों में प्रवेश देने की अनुमति मांगी।

जब हाईकोर्ट ने याचिका खारिज कर दी कि रोहिंग्या विदेशी हैं और उनके पास देश में प्रवेश की कानूनी अनुमति नहीं है और वे देश की सुरक्षा के लिए खतरा हैं, तो यह एनजीओ सुप्रीम कोर्ट पहुंचा और SC ने कहा कि रोहिंग्या के बच्चों को शिक्षा प्रदान की जाएगी।

क्या शादी के लिए कुंडली, मंत्रोच्चार और ज्योतिष की भूमिका अहम रहती है?

रामस्वरूप रावतसरे

काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के ज्योतिष विभाग के तीन प्रोफेसरों और दो शोधार्थियों ने शादियाँ टूटने एवं लव अफेयर, लिव-इन रिलेशनशिप और घरेलू हिंसा जैसे कारणों पर गहन रिसर्च किया है। उनके इस रिसर्च के निष्कर्ष में चौंकाने वाले तथ्य सामने आये हैं। रिसर्च में पाया गया कि 37 प्रतिशत शादियाँ सिर्फ इसलिए टूट रही हैं क्योंकि वर-वधु की कुंडली ठीक से मिलाई ही नहीं गई। ग्रह दोषों को नजरअंदाज कर शादियाँ कर ली जाती हैं जिसके बाद रिश्ते बिखर जाते हैं। कभी लव अफेयर में फँसकर एक-दूसरे का मर्डर करवा देते हैं तो कभी परिवार व साथी से संतुष्टि नहीं होने के कारण नया साथी तलाशने लगते हैं।

यह रिसर्च बीएचयू के ज्योतिष विभाग में आयोजित एक सेमिनार में पेश की गई। इस सेमिनार में भारत के 15 राज्यों से शोधार्थी पहुँचे. साथ ही नेपाल, सिंगापुर और दुबई से भी विशेषज्ञ शामिल हुए। इस सेमिनार में प्रोफेसर विनय पाण्डेय ने अपना शोधपत्र पढ़ा। प्रोफेसर विनय पाण्डेय के अनुसार "लड़का-लड़की की कुंडली में 36 में से 32 गुण मिलने के बावजूद ग्रहों का मिलान जरूरी है लेकिन आजकल लोग मॉडर्न दिखने के चक्कर में सनातन रस्में निभाते ही नहीं। शादी में फोटोशूट और सेल्फी में व्यस्त रहते हैं। मंत्रों का उच्चारण तक नहीं होता। नतीजा? शादियाँ टूट रही हैं, पति-पत्नी एक-दूसरे का खून कर रहे हैं। उत्तर प्रदेश समेत कई राज्यों में पति-पत्नी के बीच जघन्य हत्याओं के मामले बढ़े हैं। ज्यादातर केसों में एक्स्ट्रा-मैरिटल अफेयर का हाथ होता है। प्रो. विनय ने कहा, " जब कुंडली और ग्रह मिलान ठीक से होता है तो रिश्ता 100 प्रतिशत सही चलता है। ज्योतिष तो एक तरह की गणित है, वैज्ञानिक तथ्य है।

जानकारों के अनुसार रिसर्च की जरूरत इसलिए पड़ी क्योंकि हिंदू धर्म में विवाह को अटूट बंधन माना जाता है लेकिन आधुनिकता के नाम पर परंपराओं को ठुकरा दिया जा रहा है। ज्योतिष विभाग के प्रमुख प्रो. शत्रुघ्न त्रिपाठी के अनुसार "लोग अधिक आधुनिक होने का ढोंग करते हैं। कुंडली मिलान को बकवास मानते हैं। नतीजे आपके सामने हैं- तलाक, हिंसा और हत्याएँ।" रिसर्च टीम ने महसूस किया कि ग्रामीण इलाकों से लेकर शहरों तक यही समस्या फैल रही है। लिव-इन और लव अफेयर को बढ़ावा मिल रहा है, लेकिन शादी के बाद रिश्ते संभाल नहीं पाते।

ये रिसर्च करीब डेढ़ साल से चल रही बताई जा रही है। आँकड़े आने के बाद उन पर रिसर्च में छह महीने लगे। इस टीम में प्रो. विनय पाण्डेय, प्रो. आशुतोष त्रिपाठी, प्रो. अमित कुमार मिश्रा, शोधार्थी गणेश प्रसाद और नेपाल की पीएचडी छात्रा रोदना घिनरे शामिल थे। डेटा इकट्ठा करने के लिए दो तरीके अपनाए गए। पहला बीएचयू ज्योतिष विभाग की ओपीडी से , यहाँ पूरे देश से लोग कुंडली दिखाने आते हैं। दूसरे शोधार्थियों को यूपी के 12 जिलों में भेजा गया। वहाँ उन जोड़ों को चुना गया जिनकी शादी के तीन साल के अंदर तलाक हो गया था। कुल 250 केस इकट्ठे किए गए। इनके परिवारों से तीन सवाल पूछे गए। 1-शादी से पहले कुंडली मिलाई गई अथवा नहीं ? कितने गुण मिले? कोई ग्रह दोष तो नहीं था? 2-अगर दोष मिला तो शादी क्यों की? 3-शादी के दौरान सनातन रीति-रिवाज पूरी तरह अपनाए गए अथवा नहीं ? ये सवाल सरल थे, लेकिन जवाबों ने सच्चाई उजागर कर दी। प्रो. विनय कहते हैं, "डेटा एनालिसिस में पाया कि 37 प्रतिशत केसों में शादी के एक-दो साल में ही टूटाव आ गया। कारण? कुंडली ठीक से नहीं मिलाई गई। लोग जल्दबाजी में रिश्ता पक्का कर लेते हैं।" बाकी 63 प्रतिशत मामलों में सनातन रीति-रिवाजों की अनदेखी हुई। मुहूर्त होटल बुकिंग के हिसाब से तय किया गया। मंत्रोच्चारण अधूरा रहा। उन्होंने कहा, "शादी एक धार्मिक संस्कार है, लेकिन लोग इसे पार्टी बना देते हैं।"

प्रो. विनय पाण्डेय के अनुसार जिन लोगों की कुंडलियाँ विवाह के समय नहीं मिलाई जाती, वो भी तो सफल या फिर असफल-दो ही श्रेणियों में आती हैं। ऐसे में सफल और असफल होने के पीछे भी ज्योतिष की गणनाओं को माना जाए? प्रो. विनय पाण्डेय ने कहा, 'सफल या असफल शादियों, चाहे वो किसी भी धर्म-देश की हों, उनकी भी ज्योतिषीय गणना निकाली जा सकती है। कुंडली न मिलाने का मतलब ये नहीं हुआ कि उनकी कुंडली मिल नहीं रही। पीछे से सबकुछ सही होने पर ही शादियाँ चलती हैं। उन्होंने कहा कि ज्योतिष को गणितीय नजर से देखेंगे तो फर्क समझ में आएगा। उन्होंने कहा कि प्रेम-विवाह करने वाली शादियाँ भी टूट रही हैं और वो चल भी रही हैं। अगर उनकी कुंडलियों का मिलान किया जाए, तो सबकुछ सामने आ जाएगा। गणित हर जगह मौजूद है, चाहे उसकी जानकारी किसी को हो या न हो। रिसर्च के मुख्य निष्कर्ष यही हैं कि कुंडली मिलान सिर्फ गुणों की गिनती नहीं बल्कि ग्रहों का गहरा विश्लेषण है। प्रो. विनय ने स्पष्ट किया, "कुंडली मिलान दो तरह का होता है - अष्टकूट (गुण मिलान) और ग्रह मिलान। ज्यादातर ज्योतिषी गुण तो मिला देते हैं लेकिन ग्रहों की गहराई नहीं देखते। 36 में से 32 गुण मिलने पर भी अगर ग्रह दोष है तो रिश्ता नहीं चलता।"

प्रो. शत्रुघ्न त्रिपाठी के अनुसार "36 गुणों में कम से कम 18 का मिलान जरूरी है लेकिन लोग इसे नजरअंदाज कर देते हैं। देखा गया है 63 प्रतिशत केसों में मुहूर्त होटल बुकिंग पर निर्भर था। हिंदू धर्म में तलाक का कोई स्पष्ट वर्णन नहीं है। विवाह मेलापक से पक्का होता है।"

रिसर्च में पाया कि जहाँ कुंडली सही मिलाई गई, वहाँ तलाक की दर शून्य रही लेकिन लापरवाही से न सिर्फ तलाक बल्कि घरेलू हिंसा और हत्याएँ बढ़ीं। एक केस में पत्नी ने लव अफेयर के चक्कर में पति का मर्डर करवा दिया। वजह? ग्रह दोष को अनदेखा किया गया। रिसर्च ने राज्यवार तलाक दरों पर भी रोशनी डाली है। भारत में कुल तलाक दर करीब 1 प्रतिशत है लेकिन शहरी इलाकों में 30 प्रतिशत तक बढ गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में कम, लेकिन तलाक की संख्या बढ़ रही है। रिसर्च टीम ने सरकारी आँकड़ों का हवाला देते हुए कहा कि ज्योतिषीय लापरवाही ही मुख्य कारण है।

सेमिनार में विशेषज्ञों ने कहा कि आधुनिकता में परंपरा को अपनाना भी जरूरी है। ऐसे में फोटोशूट तो कराते रहिए लेकिन मंत्रोच्चार और ज्योतिष की भी भूमिका को स्वीकार करना जरूरी है। रिसर्च टीम के सुझावों को माने तो शादी से पहले पंडित की सलाह लें। मुहूर्त पंचांग से चुनें न कि होटल बुकिंग से। ग्रह दोष पर उपाय करवाएँ लेकिनअनदेखा किसी भी रूप में नहीं करना चाहिए।

बिहार का सत्ता समीकरण

शिवानन्द मिश्रा।

बिहार का सत्ता समीकरण, सट्टा बाजार का गणित, दलों की चिंता और जनता का फैसला, ये सभी बातें एक साथ चल रही हैं।

बिहार विधानसभा चुनावों के बीच एक बार फिर जुआरियों के अखाड़े में हलचल तेज है।

जी हां, ₹सट्टा बाजार₹ की भविष्यवाणी ने राजनीतिक गलियारों में चर्चा का पैंतरा बदल दिया है।

बिहार के सट्टा बाजार ने अनुमान लगाया है

कि NDA 144 से 146 सीटें जीत सकता है जबकि महागठबंधन (MGB) को 83 से 85 सीटों पर संतोष करना पड़ सकता है।

बिहार में ₹सट्टा बाजार₹ चुनाव के दौरान जुआरियों, बुकीज और स्थानीय बाजारों में लगाए गए सट्टे के आधार पर भविष्यवाणी करता है।

यह बाजार आमतौर पर पटना, गया, भागलपुर, मुजफ्फरपुर और दरभंगा जैसे बड़े शहरों के चाय की दुकानों, बस स्टैंड्स और स्थानीय मंडलों में सक्रिय रहता है। यहां लोग न सिर्फ विधानसभा सीटों पर सट्टा लगाते हैं बल्कि जीतने वाले उम्मीदवार के नाम, मतों के अंतर और गठबंधनों के भविष्य पर भी बाजी खेलते हैं।

आज की तारीख में, सट्टा बाजार यह संकेत दे रहा है कि नीतीश कुमार की छवि और भाजपा के जमीनी संगठन का मिश्रण NDA को फिर से सत्ता की ओर धकेल सकता है।

144 का आंकड़ा बिहार में सरकार बनाने के लिए जादुई संख्या है। अगर NDA इसे पार कर जाता है तो यह नीतीश कुमार के लिए एक ऐतिहासिक वापसी का पल होगा — खासकर उनके बाद के राजनीतिक उथल-पुथल के बाद, जब उन्होंने महागठबंधन छोड़कर फिर से भाजपा का हाथ थाम लिया। यह चुनाव उनके लिए न केवल सत्ता का, बल्कि विश्वसनीयता का भी इम्तिहान है।

सट्टा बाजार में भाजपा के लिए बेहतर बुकिंग देखी जा रही है। अगर भाजपा 80+ सीटें जीतने में कामयाब होती है, तो यह उसके लिए बड़ी राजनीतिक जीत होगी।

नीतीश कुमार के लिए यह चुनाव उनके राजनीतिक करियर का सबसे बड़ा मोड़ हो सकता है। उनकी पार्टी जेडी(यू) ने 2020 में 43 सीटें जीती थीं, लेकिन इस बार सट्टा बाजार में उनके लिए उम्मीद कमजोर है — फिर भी अगर वो 35+ सीटें जीत जाते हैं, तो वह फिर से मुख्यमंत्री बन सकते हैं। यह भी हो सकता है कि उनके विशाल प्रशासनिक अनुभव का लाभ NDA केंद्र में उठाना चाहे और शायद यही नीतीश के लिये नयी पीढ़ी को रास्ता देने के लिये सम्मानजनक रास्ता हो।

आरजेडी के लिए यह चुनाव तेजस्वी यादव का अंतिम इम्तिहान साबित हो सकता है।

2020 में उन्होंने 75 सीटें जीती थीं क्योंकि उस बार वो युवा वर्ग को अपने तरफ खींचने में काफी हद तक कामयाब रहे थे।

लेकिन इस बार उनके पीछे लालू के जंगलराज का भूत पड़ गया लगता है क्योंकि कई सजायाफ्ता माफियाओं, हत्या आरोपियों और उनके परिवार के सदस्यों को थोक में टिकट दिया है। सट्टा बाजार में उनके लिए कमजोर बुकिंग है जो यह दर्शाती है कि युवा वोटर अब उन पर कम भरोसा कर रहे हैं।

अगर वह 60 सीटों से नीचे आ जाते हैं तो उनके राजनीतिक भविष्य पर सवाल खड़ा होगा क्योंकि 5 साल बाद बिहार की राजनीति में बड़े बदलाव आ चुके होंगे. कई युवा नेता उभार पर होंगे। मुझे लगता है कि आने वाले समय में लालू परिवार के किसी सदस्य का अगर भविष्य है तो वो ₹तेज प्रताप यादव₹ का होगा जो अपनी सादगी, जनता से सहजता और संवेदनशील तरीके से जुड़ने के अंदाज से सभी का ध्यान आकर्षित कर रहे हैं।

कांग्रेस के लिए तो यह चुनाव ₹जीवित रहने₹ की लड़ाई है। 2020 में महज 19 सीटें जीतने वाली पार्टी अब खतरे में है। सट्टा बाजार में उनके लिए बेहद कम समर्थन दिख रहा है।

अगर वह 15 से कम सीटें जीतती है तो बिहार में उसकी उपस्थिति तो खत्म हो ही जायेगी, इसका प्रभाव आने वाले अन्य कई राज्यों के चुनावों पर भी पड़ेगा। लेफ्ट और हम जैसे छोटे दल अब राजनीतिक नक्शे से धीरे-धीरे गायब होते जा रहे हैं। 2020 में लेफ्ट ने महज 12 सीटें जीती थीं और हम ने 5, अब सट्टा बाजार उन्हें पूरी तरह खारिज करता दिख रहा है।

शिक्षित वर्ग में जातीय पूर्वाग्रह का स्थायित्व

संविधान ने समानता और सामाजिक न्याय के आदर्शों को स्थापित किया, परंतु भारतीय समाज में जाति चेतना अभी भी गहराई से विद्यमान है। शिक्षित और शहरी वर्गों में यह चेतना प्रत्यक्ष भेदभाव के बजाय सूक्ष्म रूपों में प्रकट होती है—जैसे रोजगार, विवाह और सामाजिक नेटवर्क में। आर्थिक प्रगति और आधुनिकता ने जाति को कमजोर किया है, पर समाप्त नहीं किया। व्यावसायिक क्षेत्रों में जातीय सामाजिक पूँजी अब भी अवसरों और संपर्कों को प्रभावित करती है। जब तक मानसिकता और व्यवहार में समानता स्थापित नहीं होती, तब तक संवैधानिक समानता का आदर्श अधूरा रहेगा।

- डॉ. प्रियंका सौरभ

भारतीय समाज की संरचना में जाति एक ऐसी संस्था रही है जिसने व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक उसके जीवन को प्रभावित किया है। संविधान निर्माताओं ने एक ऐसे भारत का सपना देखा था जहाँ व्यक्ति की पहचान उसकी योग्यता, नैतिकता और कर्म पर आधारित हो, न कि जन्मजात सामाजिक वर्ग पर। इसी उद्देश्य से संविधान में समानता का अधिकार, अवसरों की समानता, और अस्पृश्यता के उन्मूलन जैसी कई सुरक्षा धाराएँ जोड़ी गईं। किंतु सात दशक से अधिक बीत जाने के बाद भी यह स्वीकार करना होगा कि जाति की चेतना केवल गाँवों तक सीमित नहीं रही; उसने शिक्षित, शहरी और व्यावसायिक तबकों में भी अपने रूप बदले हुए स्वरूप में अस्तित्व बनाए रखा है।

संविधान ने अनुच्छेद 14 से 17 के माध्यम से स्पष्ट रूप से सभी नागरिकों को समानता और सम्मान का अधिकार दिया। डॉ. भीमराव आंबेडकर ने इसे केवल विधिक समानता का नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक समानता का माध्यम बताया था। उन्होंने चेतावनी दी थी कि यदि सामाजिक असमानता बनी रही तो राजनीतिक समानता टिक नहीं सकेगी। यह चेतावनी आज भी प्रासंगिक प्रतीत होती है, क्योंकि कानून की शक्ति के बावजूद समाज की मानसिकता में गहराई से जमी जाति-आधारित सोच पूरी तरह समाप्त नहीं हो पाई है।

शिक्षा को सामाजिक चेतना का वाहक माना जाता है, लेकिन आश्चर्यजनक रूप से शिक्षित वर्ग में भी जातीय पूर्वाग्रह सूक्ष्म और परिष्कृत रूपों में जीवित हैं। विश्वविद्यालयों और पेशेवर संस्थानों में प्रवेश के दौरान, सहकर्मी संबंधों में या सामाजिक नेटवर्किंग में अक्सर जाति एक अनकही पहचान के रूप में उपस्थित रहती है। 'मेरिट' की चर्चा करते हुए कई बार लोग आरक्षण नीति को लेकर पूर्वाग्रह रखते हैं और यह मान बैठते हैं कि आरक्षित वर्गों के लोग स्वाभाविक रूप से कम योग्य हैं। यह धारणा आधुनिक भारत के शिक्षित तबके में भी समानता के सिद्धांत को चुनौती देती है।

शहरीकरण और औद्योगीकरण को जातीय सीमाओं को तोड़ने वाला माना गया था। परंतु व्यवहार में देखा जाए तो शहरों में भी जातीय चेतना नई संरचनाओं में पुनर्जीवित हुई है। उदाहरण के लिए, महानगरों में भी अधिकांश लोग अपने ही जाति-समूहों में विवाह करते हैं। 'मैट्रिमोनी वेबसाइट्स' पर जाति और उपजाति आज भी प्रमुख फिल्टर के रूप में मौजूद हैं। इसका अर्थ यह है कि आर्थिक प्रगति और आधुनिकता ने बाहरी व्यवहार को तो बदला है, परंतु सामाजिक मनोविज्ञान अब भी जाति के घेरे से मुक्त नहीं हो सका है।

व्यावसायिक क्षेत्रों में भी जाति की उपस्थिति को नकारा नहीं जा सकता। पारंपरिक रूप से व्यापार और व्यवसाय कुछ खास जातियों के वर्चस्व में रहे हैं, और आधुनिक कॉर्पोरेट ढाँचे में भी यह प्रवृत्ति अप्रत्यक्ष रूप से जारी है। नेटवर्किंग, निवेश और अवसरों तक पहुँच में जातीय सामाजिक पूँजी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उदाहरणस्वरूप, किसी व्यापारिक समुदाय के सदस्य एक-दूसरे को व्यवसायिक सहयोग देना अधिक सहज समझते हैं। इसी तरह नौकरियों में भर्ती या पदोन्नति के दौरान 'सांस्कृतिक मेल' या 'नेटवर्क फिट' जैसे अस्पष्ट मानदंडों के तहत कई बार सामाजिक पूर्वाग्रह सक्रिय रहते हैं।

राजनीतिक रूप से भी जाति चेतना ने आधुनिक लोकतंत्र में नई ऊर्जा प्राप्त की है। शहरी मध्यम वर्ग स्वयं को अक्सर जाति से ऊपर बताता है, लेकिन चुनावों के दौरान वही वर्ग जातिगत पहचान के आधार पर अपनी निष्ठा तय करता दिखाई देता है। जातीय संगठन, छात्र संघ और पेशेवर एसोसिएशन अब अपनी जातिगत पहचान को अधिकारों की माँग से जोड़ रहे हैं। इस तरह जाति अब केवल सामाजिक संस्था नहीं रही, बल्कि यह 'राजनीतिक संसाधन' और 'सामाजिक पूँजी' का रूप ले चुकी है।

भारत में शहरी क्षेत्रों में जाति का यह रूप प्रकट भेदभाव की अपेक्षा सांकेतिक भेदभाव के रूप में उभरता है। किसी को उसकी जाति के कारण सीधे अपमानित करना अब कानूनन अपराध है, परंतु सूक्ष्म रूपों में यह मानसिकता सामाजिक जीवन में व्याप्त रहती है। उदाहरण के लिए, किसी कर्मचारी के सामाजिक पृष्ठभूमि का उपहास करना, आरक्षण को लेकर तंज कसना, या सहकर्मी के साथ सामाजिक दूरी बनाकर रखना — ये सब जाति-आधारित पूर्वाग्रह के ही रूप हैं।

डिजिटल युग में जातीय चेतना ने एक नया माध्यम प्राप्त किया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर जातीय समूहों के पेज, संगठन और समुदाय अपने गौरव और इतिहास का प्रचार करते हैं। यह सांस्कृतिक आत्मसम्मान का प्रतीक हो सकता है, लेकिन कई बार यह प्रतिस्पर्धात्मक जातीयता में बदल जाता है, जिससे समाज में नये विभाजन पैदा होते हैं। 'हम' बनाम 'वे' की मानसिकता अब वर्चुअल दुनिया में भी कायम है।

आर्थिक उदारीकरण के बाद माना गया था कि वैश्विक बाजार और निजी क्षेत्र में योग्यता ही सर्वोपरि होगी। परंतु 1990 के दशक से लेकर आज तक के अध्ययन यह दर्शाते हैं कि कॉर्पोरेट सेक्टर में भी दलित और पिछड़े वर्गों की भागीदारी अपेक्षाकृत कम है। निजी क्षेत्र में आरक्षण का प्रावधान नहीं होने के कारण यह असमानता और बढ़ी है। परिणामस्वरूप, आधुनिकता और बाजारवाद ने समान अवसरों का भ्रम तो दिया, परंतु जातीय असमानता की वास्तविकता को समाप्त नहीं कर पाया।

शहरी मध्यम वर्ग का एक बड़ा हिस्सा जाति को औपचारिक रूप से अस्वीकार करता है, परंतु अनौपचारिक जीवन में यह वर्ग जाति-संबंधी पहचानों का उपयोग करता है। यह विरोधाभास आधुनिक भारत की सामाजिक जटिलता को दर्शाता है। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति कार्यालय में स्वयं को उदारवादी बताता है, लेकिन विवाह के लिए अपने बच्चों के लिए जाति आधारित विकल्प ही स्वीकार करता है। इस दोहरे व्यवहार से स्पष्ट होता है कि जाति का सामाजिक प्रभाव अब भी जीवन के सबसे निजी निर्णयों तक पहुँचा हुआ है।

जातीय चेतना की निरंतरता का एक कारण यह भी है कि समाज में जाति अब केवल उत्पीड़न का प्रतीक नहीं, बल्कि पहचान और समुदाय के सहारे के रूप में भी देखी जाने लगी है। विशेषकर आरक्षण और सामाजिक न्याय की राजनीति के बाद वंचित समूहों ने जाति को अपने अधिकारों की रक्षा का माध्यम बनाया है। इससे जाति का एक 'सकारात्मक विमर्श' भी उभरा है, जो आत्मसम्मान और प्रतिनिधित्व की बात करता है। किंतु इस प्रक्रिया में जाति की सीमाएँ पूरी तरह समाप्त नहीं हुईं, बल्कि उनका रूपांतर हो गया। सामाजिक वैज्ञानिकों का मानना है कि भारतीय शहरी समाज में अब जाति एक "रिसोर्स नेटवर्क" बन चुकी है। यह पारंपरिक बंधन से निकलकर आधुनिक संपर्क माध्यम बन गई है। नौकरी, व्यवसाय या राजनीति में यह अब भी विश्वास, सहयोग और संसाधनों के वितरण का आधार है। इससे यह स्पष्ट होता है कि आधुनिकता ने जाति को खत्म नहीं किया, बल्कि उसे नए रूप में ढाल दिया।

संवैधानिक सुरक्षा उपायों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करते समय यह भी समझना आवश्यक है कि कानून केवल ढाँचा प्रदान कर सकता है, लेकिन सामाजिक चेतना का परिवर्तन धीरे-धीरे ही होता है। शिक्षा और आर्थिक प्रगति ने जातीय असमानता को चुनौती दी है, परंतु सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन की गति धीमी है। जब तक सामाजिक सम्मान, अवसर और पहचान का आधार व्यक्ति की व्यक्तिगत योग्यता न होकर समूहगत पहचान रहेगी, तब तक जातीय चेतना बनी रहेगी।

समाजशास्त्री आंद्रे बेतिए, एम.एन. श्रीनिवास और गोपीनाथ मोहंती जैसे विचारकों ने बार-बार यह बताया कि भारत में शहरीकरण का अर्थ पारंपरिक ढाँचों का पूर्ण विघटन नहीं, बल्कि उनका पुनर्संयोजन है। यानी, गाँव की जाति व्यवस्था का बाहरी रूप भले टूटे, पर उसकी मानसिकता शहर में नए रूप में पुन: निर्मित हो जाती है। यही कारण है कि आईटी सेक्टर, मीडिया, शिक्षा, और चिकित्सा जैसे आधुनिक क्षेत्रों में भी जाति से जुड़ी असमानताएँ सूक्ष्म रूपों में विद्यमान हैं।

जातीय चेतना की यह निरंतरता भारतीय लोकतंत्र के लिए एक चुनौती भी है और अवसर भी। चुनौती इसलिए कि यह समानता और सामाजिक न्याय के आदर्शों को सीमित करती है, और अवसर इसलिए कि इस चेतना को सामाजिक न्याय के व्यापक विमर्श में बदला जा सकता है। यदि जाति का प्रयोग उत्पीड़न के बजाय प्रतिनिधित्व और सहयोग के साधन के रूप में किया जाए, तो यह सामाजिक सामंजस्य को बल दे सकती है।

आगे का मार्ग शिक्षा, संवेदनशीलता और नीति-निर्माण के संयोजन में निहित है। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में सामाजिक विविधता और समानता पर आधारित मूल्य शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। कार्यस्थलों पर विविधता को बढ़ावा देने के लिए एथिक्स कोड, समान अवसर आयोग और असमानता पर स्वतंत्र ऑडिट प्रणाली जैसी व्यवस्थाएँ उपयोगी हो सकती हैं। मीडिया और जनसंचार माध्यमों को भी जातीय रूढ़ियों को तोड़ने और समानता के आदर्श को प्रचारित करने में सक्रिय भूमिका निभानी होगी। भारत का संविधान केवल विधि का दस्तावेज नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का घोषणापत्र है। इसकी भावना यह कहती है कि व्यक्ति का मूल्य उसके कर्म से आँका जाए, न कि उसके जन्म से। आज आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षित और कार्यरत वर्ग — जो समाज में अनुकरणीय भूमिका निभाता है — वह स्वयं इस परिवर्तन का नेतृत्व करे। जब तक सामाजिक सम्मान, अवसर और व्यवहार में जाति की भूमिका समाप्त नहीं होगी, तब तक समानता का सपना अधूरा रहेगा।

कासगंज पुलिस की बड़ी सफलता — पेट्रोल पंप लूट का खुलासा, दो आरोपी गिरफ्तार

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

थाना गंजडुण्डवारा पुलिस ने पेट्रोल पंप पर हुई लूट की वारदात का खुलासा करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने उनके कब्जे से लूट के २५०० नगद, एक अवैध तमंचा, दो जिंदा कारतूस और घटना में प्रयुक्त स्प्लेंडर मोटरसाइकिल बरामद की है।

घटना का विवरण

नगला चन्दन स्थित अखिलेश इंडियन ऑयल पेट्रोल पंप पर २२ अक्टूबर को तीन अज्ञात बदमाशों ने सैल्समैन अनिल कुमार से 11,427 की लूट कर ली थी। तीनों युवक पेट्रोल डलवाने के बाद गाली-गलौज और जान से मारने की धमकी देते हुए रकम लेकर फरार हो गए।

शिकायत पर थाना गंजडुण्डवारा में मुकदमा संख्या 354/25 धारा 309(4) बीएनएस के तहत नितिन, गोविन्द और राहुल नामजद के खिलाफ मामला दर्ज हुआ।

पुलिस की कार्रवाई

पुलिस अधीक्षक अंकिता शर्मा के निर्देशन, अपर पुलिस अधीक्षक सुशील कुमार और क्षेत्राधिकारी संदीप वर्मा के पर्यवेक्षण में टीम गठित की गई। टीम ने तत्परता दिखाते हुए २३/२४ अक्टूबर की रात अल्लेहपुर पुलिया के पास से नितिन उर्फ कालू और गोविन्द को गिरफ्तार कर लिया।

दोनों के पास से २५००, एक तमंचा, दो जिंदा कारतूस और घटना में प्रयुक्त मोटरसाइकिल बरामद की गई। आरोपियों के खिलाफ धारा 317(२) बीएनएस व २५ आर्म्स एक्ट की बढ़ोतरी की गई है। पुलिस ने दोनों को न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया है।

गिरफ्तार आरोपी

1 नितिन उर्फ कालू (२८ वर्ष), निवासी ग्राम अल्लेपुर, थाना गंजडुण्डवारा

२ गोविन्द (२२ वर्ष), निवासी ग्राम देवकली, थाना सुन्नगढ़ी

नितिन उर्फ कालू का आपराधिक इतिहास

इससे पहले नितिन पर गंजडुण्डवारा थाने में कई संगीन मुकदमे दर्ज हैं, जिनमें मारपीट, धमकी, लूट और एससी/एसटी एक्ट जैसी धाराएं शामिल हैं।

कासगंज पुलिस की तत्परता से एक बार फिर अपराधियों में मचा हड़कंप।

भिवाड़ी पुलिस ने लूट के मामले का किया खुलासा: मुख्य आरोपी को किया गिरफ्तार, स्कॉर्पियो और बाइक बरामद

रिपोर्ट अंकित गुप्ता दिल्ली

भिवाड़ी पुलिस ने लूट के एक बड़े मामले में मुख्य आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने वारदात में इस्तेमाल की गई काली स्कॉर्पियो गाड़ी और एक मोटरसाइकिल भी बरामद की है। यह कार्रवाई भिवाड़ी एसपी प्रशांत किरण के निर्देश पर की गई।

खुशखेड़ा थानाधिकारी हनुमान प्रसाद यादव ने बताया-२८ सितंबर को एक परिवादी ने शिकायत दर्ज कराई थी। परिवादी के अनुसार, २७ सितंबर की रात करीब 1२:45 बजे, वह खुशखेड़ा स्थित सनबीम लाइट सॉल्यूशन वेयरहाउस से माल उतारकर बाहर निकले थे। तभी एक काली स्कॉर्पियो में सवार चार व्यक्तियों ने उनसे गाजियाबाद जाने का रास्ता पूछा।

जैसे ही परिवादी ने अपनी गाड़ी का दरवाजा खोला, बदमाशों ने उनकी कनपटी पर तमंचा लगा दिया और उनके साथ मारपीट की। इसके बाद, बदमाशों ने परिवादी को जबरन अपनी स्कॉर्पियो में डाल लिया, जबकि एक बदमाश परिवादी की गाड़ी लेकर चला गया।

बदमाशों ने परिवादी का मोबाइल फोन छीन लिया और फोन-पे के माध्यम से उनके खाते से 40,000 रुपए अपने खाते में ट्रांसफर कर लिए। इस दौरान बदमाशों ने परिवादी की बेरहमी से पिटाई की, जिससे उन्हें गंभीर चोटें आईं।

सुबह करीब 5:00 बजे बदमाश परिवादी को मथुरा रोड पर कोसी टोल टैक्स के पास छोड़कर फरार हो गए। उनकी गाड़ी को टोल टैक्स से लगभग 150 मीटर की दूरी पर छोड़ दिया गया था। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने तत्काल कार्रवाई शुरू की। सीडीटी तिजारा के सहयोग और भिवाड़ी साइबर सेल की तकनीकी मदद से बीटीएस और सीडीआर के आधार पर मुख्य आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया।

गिरफ्तार आरोपी को रिमांड पर लिया गया है और उससे पूछताछ जारी है। पुलिस अन्य तीन फरार आरोपियों शकील, राहुल और राहुल के मामा की तलाश कर रही है। पुलिस ने घटना में प्रयुक्त काली स्कॉर्पियो गाड़ी और एक मोटरसाइकिल भी बरामद की है।

सड़क हादसे में SDM के पेशकर की मौत

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

एटा /-बाइक सवार एसडीएम कासगंज के पेशकार को अज्ञात वाहन ने रौंदा हुई दर्दनाक मौत,

घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर भेजा पोस्टपार्टम हाउस,

पुलिस अज्ञात वाहन की तलाश में चेक कर रही सीसीटीवी फुटेज,

मृतक पेशकार लोकेश मारहरा से रिश्तेदारी से लौट कर जा रहा कासगंज ड्यूटी पर,

मारहरा थाना क्षेत्र के गांव ककरेट के समीप की है घटना।

हम क्यों परेशान हैं, इससे कैसे छुटकारा पाएं!

चंद्र मोहन

जीवन में परेशानियां कई कारणों से आती हैं जिनमें जीवन में होने वाले बदलाव, व्यक्तिगत स्वभाव, और अतीत के कर्म या सोच शामिल हैं. कुछ परेशानियां वास्तविक होती हैं जैसे कि जन्म, मृत्यु और बीमारी जबकि कई दूसरों के साथ सापेक्ष होती हैं, जैसे कि धन की कमी या रिश्ते की समस्याएं. इन परेशानियों से निपटने के लिए अपनी सोच और प्रतिक्रिया को बदलने, परिस्थितियों के अनुकूल होने और जीवन को एक नजरिए से देखने की आवश्यकता होती है कि यह एक अनुभव है.

जीवन में परेशानी आने के कारण–

परिवर्तन : जीवन निरंतर बदलता रहता है, और इन बदलावों के कारण नई परिस्थितियों और चुनौतियों के साथ तालमेल बिठाना मुश्किल हो सकता है, जिससे समस्याएं पैदा होती हैं.

व्यक्तिगत कारण –

आपकी अपनी आदतें, भावनाएं, और व्यक्तिगत संघर्ष भी परेशानी का कारण बन सकते हैं.

पिछला कर्म और सोच –

ऐसा माना जाता है कि आपके पिछले कर्मों और सोच का भी आपकी वर्तमान स्थिति पर असर पड़ता है, जिससे परेशानियां आ सकती हैं.

सापेक्ष समस्याएं –

कुछ समस्याएं व्यक्ति-सापेक्ष होती हैं, जो एक के लिए समस्या हैं, लेकिन दूसरे के लिए नहीं, जैसे कि किसी के जीवन में अच्छे घर या पढ़ाई में मन न लगने जैसी समस्याएं

वास्तविक समस्याएं –

कुछ समस्याएं सभी के लिए वास्तविक होती हैं, जिनसे कोई बच नहीं सकता, जैसे कि जन्म, बुढ़ापा और बीमारी.

दुनिया में इस समय जो कुछ हो रहा है, उसे लेकर हमें गुस्सा आ सकता है.हम ऐसी चीज़ें होते हुए देख सकते हैं जिनके बारे में हमें पता है कि वे सही नहीं हैं लेकिन जिन्हें रोकने में हम खुद को असमर्थ महसूस करते हैं. या फिर हम सत्ता में बैठे लोगों के फैसलों पर, या हमारे लिए महत्वपूर्ण मुद्दों पर दूसरों के रवैये पर गुस्सा महसूस कर सकते हैं.

जीवन में हम सभी जिन कठिनाइयों का अनुभव करते हैं, उनका सबसे बड़ा कारण मानवीय व्यवहार ही है. ज़्यादातर समस्याएँ लोगों की समस्याएँ होती हैं, और अक्सर हमारी समस्याओं का कारण हम ही होते हैं.

इसके पीछे कोई न कोई वजह जरूर होती है, जैसे आपको कोई बुरी खबर मिल गई, कोई काम मन मुताबिक नहीं हुआ, चिंता या कोई अपना बिछड़ गया वगैरह.यह दुख आपको रह-रहकर फील हो सकता है.

कई बार यह दुख वक्त के साथ सही होने लगता है और कई बार कोई आपको इससे डिस्ट्रैक्ट कर दे.

आमतौर पर जिन लोगों को यह विचार आता है, वे सामान्य से अधिक तनाव का अनुभव कर रहे होते हैं, किसी आघात से उबर रहे होते हैं, या चिंता विकार, आतंक विकार या किसी अन्य मानसिक स्वास्थ्य स्थिति में वृद्धि का अनुभव कर रहे होते हैं. ऐसा क्यों होता है? कुछ मामलों में, लोग कुछ भावनाओं के लगभग आदी हो जाते हैं —खासकर नकारात्मक भावनाएँ जैसे गुस्सा, नाराज़गी, हताशा, या यहाँ तक कि उदासी. यह भावनात्मक पैटर्न उनके लिए इतना जाना-पहचाना हो जाता है कि उन्हें पता ही नहीं चलता कि वे इसे ढूँढ़ रहे हैं.

परेशानियों को दूर करने के लिए आप कई उपाय अपना सकते हैं जिनमें ध्यान और योग करना, दोस्तों और परिवार से बात करना, स्वास्थ्यप्रद भोजन करना, और समय प्रबंधन करना शामिल है.

योग और व्यायाम करें: योग और व्यायाम शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद कर सकते हैं.

किसी से बात करें: अपनी चिंताओं को दोस्तों और परिवार के साथ साझा करने से राहत मिल सकती है.

समय प्रबंधन: अपने समय का सही प्रबंधन करने से आपकी उत्पादकता बढ़ सकती है.

पौष्टिक आहार लें: एक स्वस्थ और संतुलित आहार लेना आपके समग्र स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है.

सहायता लें: यदि आपकी परेशानी बहुत अधिक है, तो किसी पेशेवर (जैसे डॉक्टर या थेरेपिस्ट) से सलाह लेने में संकोच न करें.

परेशानियों से निपटने के तरीके –

नजरिया बदलें: समस्या को देखने का नजरिया बदलकर आप अपनी सोच बदल सकते हैं, जो आपके जीवन को बदल सकता है. प्रतिक्रिया पर नियंत्रण करें: किसी भी परिस्थिति में तुरंत प्रतिक्रिया देने की बजाय शांत रहें, क्योंकि आपकी प्रतिक्रिया के बिना कोई भी आपको नुकसान नहीं पहुंचा सकता.

नियंत्रण और शांति रखें: मन और भावनाओं पर नियंत्रण रखने से आप जीवन की परेशानियों को बेहतर तरीके से झेल सकते हैं.

कर्म और मेहनत करें: जीवन में आने वाली परेशानियों से घबराएं नहीं, बल्कि अपनी मेहनत जारी रखें और उनसे सीख लें.

ईश्वर पर भरोसा रखें: कुछ लोग मानते हैं कि ईश्वर पर भरोसा रखने और अपनी इच्छाएं उस पर छोड़ने से शांति मिलती है और परेशानियां कम होती हैं.

भक्ति में लीन रहें: यह भी माना जाता है कि ईश्वर की भक्ति और सेवा करने से जीवन की उदासी और परेशानियां दूर हो सकती हैं.

अनाज उत्पादन और कुपोषण का दायरा

विजय गर्ग

विशेषज्ञों | के अनुसार, कुपोषण की समस्या कई कारकों के मेल से पैदा होती है। गरीबी और सामाजिक असमानता इसकी सबसे बड़ी वजह है, क्योंकि भोजन की उपलब्धता होने के बावजूद बड़ी आबादी पौष्टिक भोजन खरीदने में सक्षम नहीं होती। दालों और तिलहनों की कमी भी अहम कारण है।

पैदावार के मामले में आत्मनिर्भर बना है, वहीं अनाज का उत्पादन बढ़ने से इसके भंडारण की समस्या से भी जूझना पड़ रहा है। आज भी सरकारी गोदाम अनाज से भरे पड़े हैं, इसके बावजूद देश में कुपोषण की स्थिति और पौष्टिक आहार की कमी चिंता का विषय बनी हुई है। हालांकि, दलहन और तिलहन उत्पादन के क्षेत्र में हम अब भी पीछे हैं, लेकिन सवाल यह है कि कृषि प्रधान देश कहलाने वाले भारत में यह स्थिति क्यों है? इसमें संदेह नहीं कि आज भारत में अन्न उत्पादन रेकार्ड स्तर पर है। आंकड़ों पर निगाह डालें तो जहां वर्ष 1950-51 में देश में कुल अन्न उत्पादन सिर्फ 5.08 करोड़ टन था, वहीं आज यह बढ़कर तैंतीस करोड़ टन के पार पहुंच गया है। मगर, देश में अब तक सर्वाधिक ध्यान गेहूं और धान के उत्पादन पर दिया जाता रहा है। लिहाजा, हम दलहन और तिलहन उत्पादन में अपेक्षित प्रगति नहीं कर पाए हैं। हम आज भी साठ हजार करोड़ रुपए से अधिक की दालें आयात कर रहे हैं। यह देश की कुल दाल खपत का करीब तीस फीसद हिस्सा है। खाद्य तेलों के लिए भी हम आयात पर निर्भर है। देश में खाद्य तेलों की कुल खपत का साठ फीसद हम आ हम आयात कर रह रहे हैं।

में पिछले एक अरसे में देश में गेहूं तथा चावल की पैदावार में बढ़ोतरी हुई है और अब स्थिति सरकारी गोदामों में भंडारण के लिए जगह नहीं नहीं है, लेकिन पोषण की दृष्टि से देखें तो अलग ही तस्वीर नजर आती है। दलहन और तिलहन उत्पादन में हम पीछे हैं तथा फल, सब्जियों और मोटे अनाज का उत्पादन एवं खपत दोनों ही सीमित हैं। जाहिर है कि देश में कैलोरी की कमी नहीं है, लेकिन पोषण नहीं मिल पा रहा है। गेहूं और चावल पेट तो भरते हैं, मगर प्रोटीन, आयरन, विटामिन और पोषक तत्त्वों की पर्याप्त आपूर्ति नहीं कर पाते इसी से कुपोषण की समस्या पैदा हो रही है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस-5, 2019- 21)) के आंकड़ों के मुताबिक, देश में पांच साल से कम उम्र के बच्चों के एक बड़े हिस्से की स्थिति चिंताजनक है। लगभग 36 फीसद बच्चे उम्र के हिसाब से छोटे कद वाले हैं, 19 फीसद बच्चों का वजन उनकी लंबाई के अनुपात में कम है और करीब 32 फीसद बच्चे अपनी उम्र के हिसाब से कम वजन के हैं। इसी प्रकार 15 से 49 वर्ष की आधी से अधिक महिलाएं 'एनीमिया' यानी खून की कमी से जूझ रही हैं। यह स्थिति पोषक तत्त्वों की कमी से उत्पन्न हो रही है।

विशेषज्ञों | के अनुसार, कुपोषण की समस्या कई कारकों के मेल से पैदा होती है। गरीबी और सामाजिक असमानता इसकी सबसे बड़ी वजह है, क्योंकि भोजन की उपलब्धता होने के बावजूद बड़ी आबादी पौष्टिक भोजन खरीदने में सक्षम नहीं होती। दालों और तिलहनों की कमी भी अहम कारण है। प्रोटीन और अच्छी वसा के स्रोत सीमित होने के कारण संतुलित आहार नहीं मिल पाता है। गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं में कुपोषण से बच्चे जन्म से ही कमजोर होते हैं और आगे भी कुपोषण का सिलसिला बना रहता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) के अनुसार, कुपोषण बच्चों और माताओं के स्वास्थ्य के लिए सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। बच्चों में इसका असर शारीरिक और मानसिक विकास पर पड़ता है। माताओं में खून की कमी तथा प्रसव जटिलताएं बढ़ जाती हैं।

यह खुशी का विषय है कि देश में गरीबी की स्थिति में कमी आ रही है। स्टेट बैंक आफ इंडिया की एक रपट में इसका श्रेय गरीबों को सीधी मदद के लिए सरकार की ओर से चलाए जा रहे कार्यक्रमों को दिया गया

है, लेकिन कुपोषण की समस्या बढ़ना चिंताजनक है। संयुक्त राष्ट्र के छह प्रमुख अंतर- एजंसी समूहों की ओर से संयुक्त रूप से जारी विश्व में खाद्य सुरक्षा एवं पोषण की स्थिति-2023 की रपट के मुताबिक, भारत में 2020 और 2022 के बीच 7.4 करोड़ लोग अल्प पोषण के शिकार पाए गए। देश की कृषि उपज का बड़ा हिस्सा गेहूं और चावल पर केंद्रित है, लेकिन प्रति हेक्टेयर उत्पादकता के मामले में अभी भी हम वैश्विक औसत से पीछे है। आंकड़ों के अनुसार, देश में गेहूं का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 3.5 टन है, जबकि चीन में यह करीब 5.7 टन और फ्रांस में 7.2 टन तक पहुंच चुका है। इसी तरह धान की पैदावार भारत में औसतन चार टन प्रति हेक्टेयर है, जबकि अमेरिका में यह आठ टन और वियतनाम में करीब छह टन है। इस अंतर से पता चलता है कि देश में आधुनिक तकनीक, उच्च गुणवत्ता वाले बीज और सटीक सिंचाई पद्धतियों की अभी भी भारी कमी है, जिस कारण हम प्रति हेक्टयेर उत्पादन में पिछड़ रहे हैं।

केंद्र सरकार कुपोषण की समस्या के निवारण और पोषण सुरक्षा के लिए प्रयास कर रही है। इसके लिए कई योजनाएं लागू की गई हैं। एकीकृत बाल विकास सेवा के माध्यम से छह साल से कम उम्र के बच्चों और उनकी माताओं को पोषण प्री-स्कूल शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाएं दी जाती हैं। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत मातृ और शिशु स्वास्थ्य पर जोर दिया रहा है राष्ट्रीय पोषण मिशन का लक्ष्य बच्चों और किशोरियों में खून की कमी और कम वजन की समस्या घटाना है। इसके साथ ही 1000

दिवसीय पहल शुरू की गई। है, जो गर्भधारण से लेकर बच्चे के पहले दो आयात पर साल तक के समय को सबसे महत्त्वपूर्ण मानती है। सरकार ने 'मिलेट वर्ष' और 'पोषणयुक्त भारत' जैसे अभियान भी शुरू किए हैं, इसके बावजूद चुनौतियां बरकरार हैं। हमारे किसान अब भी गेहूं-धान के चक्र से बाहर नहीं निकल पा रहे हैं। दाल और तेल के मामले में पर भारी निर्भरता बनी है। यकीनन, पहले भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आइसीएआर) का ध्यान गेहूं और चावल के उत्पादन पर ही रहा है, पर अब उसने हाल के वर्षों में समस्या के समाधान के लिए प्रयास शुरू ₹किए हैं। आइसीएआर ने पोषण से भरपूर 150 से अधिक किस्में विकसित की हैं, मगर इस बारे में किसानों को जागरूक करने लिए प्रचार-प्रसार को तेज किए जाने की जरूरत है। साथ ही किसानों को दलहन और तिलहन उत्पादन के लिए प्रेरित प्रोत्साहित किए जाने की भी जरूरत है।

मगर, बड़ा सवाल यह है कि क्या किसानों को पारंपरिक फसलों का मोह त्याग कर नई दिशा में मोड़ा जा सकता है? किसान ऐसा करना चाहते हैं, पर उनकी अपनी आशंकाएं हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण फसलों को हो रहे हे नुकसान, बढ़ते कीट प्रकोप और उत्पादन का वाजिब दाम न मिलने के कारण किसान जोखिम उठाने से डरते हैं। निश्चित रूप से फसल विविधीकरण को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इसमें किसानों का भी लाभ है, पर इसके लिए उन्हें जागरूकता के माध्यम से आश्वस्त करना होगा। यदि दाल और तिलहन को न्यूनतम समर्थन मूल्य और सरकारी खरीद में प्राथमिकता मिलेगी, तो किसान गेहूं-धान के चक्र से बाहर आने को तैयार हो सकते हैं। अनाज, फल-सब्जियों तथा दलहन और तिलहन की बर्बादी रोकने के लिए प्रशीतन केंद्र और प्रसंस्करण उद्योग को भी बढ़ावा देना होगा। इसके साथ-साथ पोषण केंद्रित नीतियों के तहत केवल सामान्य भोजन नहीं, बल्कि संतुलित आहार उपलब्ध कराने पर भी जोर देने की जरूरत है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

आणविक पिंजरे के वास्तुकार रसायन विज्ञान नोबेल जीतते हैं

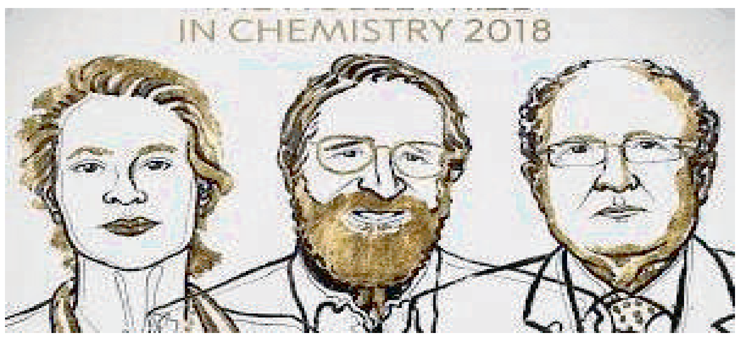

विजय गर्ग

2025 के रसायन विज्ञान में नोबेल पुरस्कार तीन वैज्ञानिकों को दिया गया - सुसुमु कितागावा (क्योटो विश्वविद्यालय, जापान), रिचर्ड रॉबसन (मेलबर्न विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया) और ओमर एम। यागी (कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, संयुक्त राज्य अमेरिका) - ₹धातु के जैविक ढांचे के विकास के लिए। इन पुरस्कार विजेताओं को सामग्रियों के विज्ञान में क्रांतिकारी अनुप्रयोगों को खोलने वाले आणविक वास्तुकला का एक नया रूप बनाने में उनके अग्रणी कार्य के लिए ₹आणवी पिंजरे के आर्किटेक्ट₹ के रूप में मनाया जाता है। सफलताः धातु-कार्बनिक फ्रेमवर्क (MOF पुरस्कार मेटल-ऑर्गेनिक फ्रेमवर्क (MOFs) के विकास को मान्यता देता है, जो दो प्रमुख घटकों से निर्मित क्रिस्टलिन, छिद्रपूर्ण सामग्री हैं

धातु आयन या धातु आयनों के समूह

जैविक अणु जो लिंकर के रूप में कार्य करते हैं। जब इन घटकों को संयुक्त किया जाता है, तो वे विशाल आंतरिक छिद्रों के साथ जटिल, पिंजरे जैसी 3D संरचनाओं में स्वयं इकट्ठा होते हैं, या ₹रसायन विज्ञान के लिए कमरे₹, जिसके माध्यम से गैसें और अन्य रसायन प्रवाह कर सकते हैं। ये स्थान आमतौर पर बड़े और ट्यून करने योग्य होते हैं, जिससे MOF अणुओं को पकड़ने, संग्रहीत करने और अलग करने के लिए असाधारण रूप से उपयोगी होते हैं। पुरस्कार विजेताओं के प्रमुख योगदान यद्यपि यह काम वर्षों से अलग-अलग किया गया था, लेकिन तीन वैज्ञानिकों ने एमओएफ रसायन विज्ञान की स्थिर नींव रखी

रिचर्ड रॉबसन (1989 से शुरू) को पहली धातु-जैविक फ्रेमवर्क बनाने का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने दिखाया कि बहु-आर्म कार्बनिक अणु के साथ धातु आयनों का संयोजन तर्कसंगत रूप से एक अत्यधिक व्यवस्थित, विशाल क्रिस्टल बना सकता है। यद्यपि उनका प्रारंभिक निर्माण अस्थिर था, लेकिन उन्होंने तुरंत कस्टम-निर्मित सामग्री और उत्प्रेरक के लिए सामग्री की क्षमता को पहचान लिया।

सुसुमु कितागावा (1992 से शुरू) ने बाद में यह दिखाकर योगदान दिया कि एमओएफ को स्थिर और कार्यात्मक बनाया जा सकता है, जिससे संरचना गिरने के बिना गैसें स्वतंत्र रूप से अंदर-बाहर बह सकती हैं। उन्होंने विभिन्न अणुओं को अवशोषित करने और रिलीज़ करने के लिए लचीले एमओएफ विकसित करने में भी मदद की - उन्हें प्रभावी ढंग से ₹हंस₹ देते हुए

ओमर एम. यागी (1995 से शुरू) उच्च तापमान और दबाव का सामना करने वाले अत्यधिक स्थिर और मजबूत एमओएफ बनाने पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने यह भी दिखाया कि इन संरचनाओं को तर्कसंगत डिजाइन का उपयोग करके संशोधित किया जा सकता है ताकि उन्हें नई और वांछनीय गुण मिल सकें। यागी को ₹धातु-जैविक फ्रेमवर्क₹ शब्द का निर्माण करने के लिए भी श्रेय दिया जाता है क्रांतिकारी अनुप्रयोग अपने प्रारंभिक विकास के बाद से, रसायनज्ञों ने हजारों अलग-अलग एमओएफ बनाए हैं, जिनमें से प्रत्येक को एक विशिष्ट कार्य के लिए डिज़ाइन किया गया है। उनकी अद्वितीय छिद्रपूर्ण संरचना मानव जाति की कुछ सबसे बड़ी चुनौतियों के समाधान प्रदान करती है . आवेदन. वर्णन |---|---| | कार्बन कैप्चर. एमओएफ को औद्योगिक उत्सर्जन या यहां तक कि वायुमंडल से बड़ी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) की चुनिंदा रूप से पकड़ने और संग्रहीत करने के लिए अनुकूलित किया जा सकता है, जिससे जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई में मदद मिलती है। | पानी की कटाई। विशिष्ट एमओएफ कम आर्द्रता वाली रेगिस्तानी हवा से पानी को अवशोषित कर सकते हैं और फिर इसे सौर गर्मी का उपयोग करके जारी कर सकते हैं, जिससे शुष्क क्षेत्रों में ताजा पीने वाला पानी उत्पन्न करने का एक नया तरीका प्रदान किया जा सकता है।

➡ **गैस भंडारण**। विशाल आंतरिक सतह क्षेत्र एमओएफ को हाइड्रोजन और मीथेन जैसे ईंधन को कुशलतापूर्वक संग्रहीत करने की अनुमति देता है, जो स्वच्छ ऊर्जा प्रणालियों के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। :: प्रदूषक निष्कर्षण. एमओएफ का उपयोग पानी से ₹स्थायी रसायनों₹ (पीएफएएस) और दवाओं के निशान जैसे विषैले पदार्थ निकालने के लिए किया जा सकता है। O. कैटालिसिस। आंतरिक छिद्र विशिष्ट रासायनिक प्रतिक्रियाओं को गति देने या नियंत्रित करने के लिए नैनो-स्केल प्रतिक्रिया जहाजों के रूप में कार्य कर सकते हैं। कितागावा, रॉबसन और यागी के काम ने सामग्री विज्ञान को एक रासायनिक जिज्ञासा से अविश्वसनीय रूप से उपयोगी और बहुमुखी सामग्रियों की कक्षा में स्थानांतरित कर दिया है जिसमें विशाल व्यावसायिक और पर्यावरणीय क्षमताएं हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर

दलित नेता विक्टिम कार्ड क्यों खेलते हैं ?

राजेश कुमार पासी

आज़ादी के 78 साल बाद भी दलितों का शोषण, उत्पीड़न और दमन जारी है क्योंकि दलित नेतृत्व पूरी तरह से स्वार्थी नेताओं के हाथ में रहा है। ये लोग आरक्षित सीटों का फायदा लेकर संसद, विधानसभा और दूसरी संस्थाओं में एंट्री पा जाते हैं । बाबा साहब ने दलितों के लिए राजनीतिक आरक्षण इसलिए नहीं मांगा था कि इस समाज के कुछ नेता जाकर संसद और विधानसभा में जाकर बैठ जाये । बाबा साहब ने दलित समाज के लिए लोकतांत्रिक संस्थाओं में प्रतिनिधित्व मांगा था ताकि इस समाज के लोग दलित हितों के लिए आवाज उठा सके । समस्या यह हो गई कि हमारा पूरा लोकतंत्र दलगत राजनीति में बदल गया । इसके कारण हुआ यह कि जो भी नेता दलित समाज का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, वो अपनी पार्टी से अलग हटकर कुछ कर ही नहीं सकते । ऐसे नेता पार्टी लाइन से अलग हट जाएं तो उन्हें इसका खामियाजा भुगतना पड़ता है । आरक्षित सीटों के कारण दलितों के प्रतिनिधित्व को कम नहीं किया जा सकता लेकिन ऐसे नेताओं को पार्टियां आगे करती हैं जो उनके इशारों पर काम करते हैं । इसके कारण ये नेता समाज से कट जाते हैं और एक सामान्य नेता की तरह व्यवहार करने लगते हैं ।

यही हाल आरक्षण से नौकरी पाकर ऊंचे पदों पर पहुंचे अधिकारियों का है । वो लोग भी अपने परिवार से हटकर कुछ नहीं कर पाते । दलित संगठन शोर मचाते हैं कि आरक्षण गरीबी दूर करने का माध्यम नहीं है बल्कि संविधान द्वारा दिया गया प्रतिनिधित्व का अधिकार है । वास्तविकता यह है कि आरक्षण अब केवल गरीबी दूर करने का माध्यम भर रह गया है । मान्यवर कांशीराम ने महसूस किया कि आरक्षित सीटों से जीतने वाले नेता अपनी पार्टी के हितों से हटकर कुछ नहीं करते, इसलिए उन्होंने दलित समाज की पार्टी बनाने की कोशिश की । इसके लिए उन्होंने साइकिल पर दर-दर की ठोकरें खाई और 1984 में बहुजन समाज के लिए बहुजन समाज पार्टी की स्थापना की । इस पार्टी की सबसे बड़ी सफलता यही रही कि वो उत्तर प्रदेश में सरकार बनाने में सफल रही लेकिन इससे आगे यह पार्टी नहीं बढ़ सकी । बसपा का पूरे देश में जनाधार है लेकिन इतना नहीं है कि वो पूरे देश में संसद और विधानसभा की सीटें जीत सके । अब तो धीरे-धीरे बसपा यूपी तक ही सीमित हो गई है लेकिन वहां भी इसका पतन हो रहा है ।

इस पार्टी के पतन का भी वही कारण है जो दलित राजनीति का सच है । दलित समाज को ऐसे नेता मिलते हैं जो समाज के लिए नहीं बल्कि निजी हितों के लिए ज्यादा काम करते हैं । सच्चाई तो यह है कि दूसरे समाज के ज्यादातर नेता निजी हितों के लिए ही काम कर रहे हैं लेकिन दलित समाज की बात थोड़ी अलग है । दलित समाज के विकास और उसके साथ होने वाले भेदभाव को खत्म करने के लिए संघर्ष करने की जरूरत है । सवाल यह है कि आजादी के बाद राजनीति और प्रशासन में समुचित प्रतिनिधित्व के बाद भी दलित समाज का संघर्ष रुका हुआ क्यों है । वास्तव में नेता और अफसर चाहते हैं कि दलित समाज का संघर्ष चलता रहे लेकिन वो आगे न बढ़े । समाज में जो भेदभाव, उत्पीड़न और शोषण चल रहा है, उसको मुद्दा बनाकर फायदा मिलता रहे । वास्तव में ये लोग दलित समाज के नाम पर विक्टिम कार्ड खेलते रहने के जुगाड़ में हैं, इसलिए नहीं चाहते कि समाज में थोड़ा सा भी सुधार हो ।

दलितों की स्थिति में जो सुधार हो रहा है, वो समय के अनुसार धीरे-धीरे सामाजिक बदलाव के कारण हो रहा है । इसमें शहरीकरण का भी बड़ा योगदान है क्योंकि ग्रामीण समाज में जातिगत भेदभाव ज्यादा होता है । युवा पीढ़ी की सोच भी विकासशील है जिससे समाज में बदलाव आ रहा है । दलितों की स्थिति में जो भी सुधार है, वो आरक्षण और सामाजिक बदलाव से आया है न कि किसी दलित संगठन और दलित नेताओं के संघर्ष के कारण आया है । वास्तविकता तो यह है कि ज्यादातर राजनीतिक दल दलितों के साथ होने वाले भेदभाव और उत्पीड़न को राजनीतिक फायदे के लिए इस्तेमाल करते हैं । ये सोचना गलत है कि ये लोग दलितों के हालातों में सुधार लाने के लिए काम कर रहे हैं। मोदी सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का दलितों को बहुत लाभ हुआ है क्योंकि ये योजनाएं गरीबों के लिए चलाई गई हैं । गरीब वर्ग में दलित, आदिवासी और मुस्लिम समाज की संख्या ज्यादा हैं, इसलिए इन योजनाओं का फायदा इन वर्गों को ज्यादा हुआ है । इसके लिए किसी दलित संगठन और दलित नेता को श्रेय नहीं दिया जा सकता । गरीबों के लिए चलाई गई योजनाओं का लाभ दलितों की गरीबी के कारण उन्हें मिला है।

देश में दलित उत्पीड़न और भेदभाव के खिलाफ राजनीतिक दल और दलित संगठन धरना-प्रदर्शन और आंदोलन करते रहते हैं। अब सवाल उठता है कि ये कैसे कहा जा सकता है कि सामाजिक उत्पीड़न और शोषण के खिलाफ आवाज नहीं उठाई जा रही है बल्कि इसकी आड़ में सिर्फ विक्टिम कार्ड खेला जा रहा है। राजनीतिक दल और दलित संगठन दलित उत्पीड़न की घटनाओं के खिलाफ आवाज भी एक एजेंडे के अनुसार उठाते हैं। इनका उद्देश्य इन घटनाओं को रोकना नहीं है बल्कि इन घटनाओं का राजनीतिक फायदा उठाना है । समाज हितैषी बनकर दलितों में अपनी पैठ बनाने की कोशिश होती है। वास्तव में समस्या यह है कि दलित संगठनों का भी अंतिम उद्देश्य राजनीतिक फायदा लेना होता है। सामाजिक संघर्ष सिर्फ राजनीति में जगह बनाने का जरिया भर है । दलित नेता उदित राज के मामले को देखे तो पता चलता है कि वो दलित होने के कारण अपने साथ भेदभाव होने का आरोप लगाकर सड़क पर बैठ गए हैं। संपदा निदेशालय ने उदित राज के सामान को सरकारी घर से बाहर निकाल कर उसे खाली करवा लिया है । ये बंगला उन्हें नहीं, बल्कि उनकी पत्नी को एक आईआरएस अफसर होने के कारण मिला था। वो 30 नवम्बर को रिटायर हो चुकी है, इसलिये यह बंगला 31 मई को खाली कर देना चाहिए था क्योंकि रिटायर होने के बाद सिर्फ 6 महीने तक ही बंगला रखा जा सकता है।

हरित ऊर्जा में भारत के बढ़ते कदम

विजय गर्ग

भारत ने ऊर्जा के क्षेत्र में एक ऐसी ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है, जो न केवल देश के लिए, बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए अध्ययन का विषय है। वर्ष 2030 तक अपने निर्धारित लक्ष्य से पूरे पांच वर्ष पहले भारत ने अपनी कुल स्थापित बिजली उत्पादन क्षमता का पचास फीसद गैर-जीवाश्म ईंधन स्रोतों से से प्राप्त कर (लिया है। । यह असाधारण सफलता पेरिस समझौते के प्रति भारत की दृढ़ प्रतिबद्धता और ज जलवायु परिवर्तन के खिलाफ वैश्विक लड़ाई में उसकी नेतृत्वकारी भूमिका को सशक्त रूप से रेखांकित करती है। यह केवल आंकड़े नहीं, बल्कि ऊर्जा सुरक्षित और पर्यावरणीय रूप रूप से जिम्मेदार भारत की एक निर्णायक छलांग है। यह भारत की एक बड़ी उपलब्धि है, जो अपनी विकास की आकांक्षाओं को पृथ्वी की सेहत के साथ संतुलित करना सीख रहा है और दुनिया को दिखा रहा है कि आर्थिक प्रगति और पारिस्थितिक स्थिरता एक साथ संभव है।

ऊर्जा क्षेत्र में भारत की यह यात्रा एक दशक से भी अधिक समय पहले शुरू हुई, जब देश ने अपनी ऊर्जा सुरक्षा और बढ़ते कार्बन उत्सर्जन की दोहरी चुनौती को स्वीकार किया। उस समय भारत का ऊर्जा परिदृश्य मुख्य रूप से कोयले पर आधारित था, जो सस्ता और सुलभ तो था, लेकिन पर्यावरणीय और स्वास्थ्य संबंधी गंभीर चिंताओं को जन्म दे रहा था। वर्ष 2010 में शुरू किया गया 'जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय सौर मिशन' इस दिशा में एक प्रारंभिक और महत्त्वपूर्ण कदम था। इसने देश में सौर ऊर्जा के प्रति जागरूकता पैदा की और एक नीतिगत ढांचे की नींव रखी। हालांकि, इस हरित क्रांति की असली गति पिछले दशक में आई, जब सरकार ने नवीकरणीय ऊर्जा को राष्ट्रीय प्राथमिकता के केंद्र में रखा। यह एक रणनीतिक बदलाव था, जिसे मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति और महत्त्वाकांक्षी लक्ष्यों का समर्थन प्राप्त था।

वर्ष 2015 में 2022 तक 175 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता भारत ने स्थापित करने का एक साहसिक लक्ष्य निर्धारित किया, जिसमें सौ गीगावाट सौर ऊर्जा, 60 गीगावाट पवन ऊर्जा, 10 गीगावाट बायोमास और पांच गीगावाट छोटी जलविद्युत परियोजनाएं शामिल थीं। इस लक्ष्य ने दुनिया को चकित कर दिया, लेकिन इसने घरेलू और अंतरराष्ट्रीय निवेशकों को एक स्पष्ट संकेत दिया कि भारत अपने ऊर्जा भविष्य को लेकर गंभीर है। इसके बाद वर्ष 2021 में ग्लासगो आयोजित काप 26 शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दुनिया के सामने भारत किसी की जलवायु कार्रवाई के लिए पांच सूत्रीय एजेंडा 'पंचामृत' प्रस्तुत 5 तहत वर्ष 2030 तक भारत ने अपनी गैर जीवाश्म ऊर्जा क्षमता को वाट तक पहुंचाने और अपनी कुल ऊर्जा आवश्यकताओं का 1 गीगावाट पचास फीसद फीसद नवीकरणीय ऊर्जा से पूरा करने का विशाल लक्ष्य निर्धारित किया।

नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, भारत की कुल स्थापित क्षमता लगभग 485 गीगावाट को पार कर गई जिसमें से 243 गीगावाट से अधिक क्ष गैर-3 [-जीवाश्म स्रोतों से आती है। यह स्पष्ट रूप से पचास पचास फीसद के आंकड़े को पार करता है। देश की हरित ऊर्जा उपलब्धि में सौर ऊर्जा ने केंद्रीय भूमिका निभाई है। पिछले दस वर्षों में देश की सौर क्षमता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है, जो मार्च 2014 के 2.63 गीगावाट से बढ़कर जुलाई 2025 तक 119.02 गीगावाट हो गई है। इस सफलता के पीछे कई कारक हैं। सरकार ने 'अल्ट्रा मेगा सोलर पावर पार्क्स' की स्थापना को प्रोत्साहित किया। राजस्थान का भड़ला सोलर पार्क (2,245 मेगावाट) और कर्नाटक का पावागड़ा सोलर पार्क (2050 मेगावाट) दुनिया के सबसे बड़े सोलर पार्कों में से हैं। इसी तरह 'प्रधानमंत्री सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना' ऊर्जा उत्पादन के विकेंद्रीकरण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। इसका लक्ष्य एक करोड़ घरों की छत पर सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित करना है इससे परिवारों को 300 यूनिट तक मुफ्त या सस्ती बिजली मिलेगी और वे अतिरिक्त बिजली ग्रिड को बेचकर आय भी अर्जित कर सकेंगे। यह योजना न केवल ऊर्जा आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देगी, बल्कि सौर ऊर्जा को एक जन आंदोलन बनाने में भी सहयोग कर रही है। प्रौद्योगिकी में प्रगति और वैश्विक स्तर पर बड़े पैमाने पर उत्पादन के कारण सौर संयंत्रों की कीमतों में गिरावट आई है 'प्रधानमंत्री कुसुम योजना' देश के कृषि क्षेत्र को ऊर्जा सुरक्षा प्रदान करने पर केंद्रित है। इसके तहत किसानों को सोलर पंप स्थापित करने और अपनी बंजर भूमि सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित करके अतिरिक्त बिजली बेचने के लिए सबसिडी और प्रोत्साहन दिया जा रहा है। पवन बहतर वहीं, पवन ऊर्जा का भी भारत की आत्मनिर्भरता में महत्त्वपूर्ण योगदान है। विशेष रूप से तमिलनाडु, गुजरात, कर्नाटक और महाराष्ट्र जैसे लंबे समुद्र तट वाले राज्यों ने पवन ऊर्जा क्षमता के विस्तार में अहम भूमिका निभाई है। अब सरकार का ध्यान अपतटीय पवन ऊर्जा पर केंद्रित है। इसमें तट से दूर समुद्र में पवन चक्कियां स्थापित की जाती हैं, जहां हवा की गति अधिक स्थि र और शक्तिशाली होती है, जिससे बिजली उत्पादन की क्षमता काफी बढ़ जाती है। । गुजरात और और तमिलनाडु के तटों पर विशाल अपतटीय ऊर्जा फार्म विकसित करने की की योजनाएं चल रही हैं। इसके अलावा पवन-सौर हाइब्रिड परियोजनाएं भी एक नया कदम हैं, जो एक ही स्थान पर दोनों प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके भूमि और 'ट्रांसमिशन' के बुनियादी ढांचे का इस्तेमाल करने की की क्षमता प्रदान करता है। देश में जलविद्युत और परमाणु ऊर्जा की भूमिका भी अहम है। ये स्रोत बिजली ग्रिड को संतुलित रखने और मांग को पूरा करने के लिए आवश्यक हैं। सरकार ने 25 मेगावाट से अधिक की बड़ी जलविद्युत परियोजनाओं को नवीकरणीय ऊर्जा का दर्जा दिया, जिससे उन्हें वित्तीय प्रोत्साहन मिला। साथ ही, भारत का स्वदेशी परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम स्वच्छ ऊर्जा प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। सरकार अब एक साथ कई परमाणु रिएक्टरों के निर्माण को मंजूरी दे रही है, ताकि क्षमता विस्तार में तेजी लाई जा सके। कोयले और तेल के । के आयात पर निर्भरता कम होने से भारत की ऊर्जा सुरक्षा मजबूत हो रही है। जीवाश्म ईंधन का उपयोग कम होने से ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में सीधी कमी आती है, जो भारत को वर्ष 2070 तक शून्य कार्बन उत्सर्जन के अपने दीर्घकालिक लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में मजबूती से आगे बढ़ाएगा। कोयला जलाने से होने वाले वायु प्रदूषण में कमी से शहरों में हवा की गुणवत्ता में सुधार होगा, जिससे श्वसन संबंधी बीमारियों में भी कमी आएगी

समय से पहले अपने लक्ष्यों को प्राप्त करके भारत ने खुद को जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई में एक जिम्मेदार और अग्रणी राष्ट्र के रूप में स्थापित किया । यह उपलब्धि शानदार है, लेकिन यह यात्रा का अंत नहीं, बल्कि एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव है। वर्ष 2030 तक 500 गीगावाट के विशाल लक्ष्य तक पहुंचने के लिए अभी भी कई चुनौतियों से पार पाना होगा। नवीकरणीय ऊर्जा की अस्थिर प्रकृति को संभालने के लिए एक आधुनिक और लचीले ग्रिड की आवश्यकता है। इसके लिए 'ट्रांसमिशन' लाइनों का विस्तार, उन्नत पूर्वानुमान प्रणाली और स्वचालित ग्रिड प्रबंधन प्रणालियों में भारी निवेश की जरूरत होगी। कृषि भूमि और पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों पर प्रभाव को कम करने के लिए बंजर भूमि नहरों और जलाशयों पर तैरते हुए सौर संयंत्र जैसे नवीन समाधानों को बढ़ावा देना होगा। इसके लिए सरकार को एक स्थिर और आकर्षक नीतिगत ढांचा बनाए रखना होगा और हरित बांड जैसे नवीन वित्तीय साधनों को प्रोत्साहित करना होगा।

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

मुंबई सबकी है — लेकिन क्या वाकई सबके लिए?

बादलों के बीच 30,000 फीट की ऊंचाई पर, जब एक विमान कोलकाता से मुंबई की उड़ान भर रहा था, तब एक ऐसी घटना घटी, जिसने भारत की 'एकता में विविधता' की नींव को हिलाकर रख दिया। 23 अक्टूबर को एयर इंडिया की फ्लाइट (एआई-676) में एक महिला यात्री ने युवक से कहा—आप मुंबई जा रहे हैं, तो मराठी आनी चाहिए। यह कोई साधारण बहस नहीं थी; यह एक ऐसी धमकी थी, जिसने भाषा को हथियार बनाकर सांस्कृतिक एकता पर सवाल उठा दिया। सोशल मीडिया पर वायरल हुए वीडियो ने लाखों लोगों का ध्यान खींचा, और बहस छिड़ गईः क्या भाषा अब हमें बाँधेगी या बाँटेगी?

यह घटना एक विमान में घटी, जहां कोलकाता से मुंबई जा रहे एक यात्री ने शांतिपूर्वक कहा कि उसे मराठी नहीं आती। जवाब में उसे आक्रामक धमकी मिली—मुंबई जा रहे हो, तो मराठी सीखो। वायरल वीडियो में एक महिला यात्री को जबरन भाषा थोपने की कोशिश करते हुए देखा गया, जिसने माहौल को तनावपूर्ण बना दिया। केबिन क्रू ने हस्तक्षेप तो किया, पर केवल सीट बदलने की सलाह दी, बिना कोई सख्त कदम उठाए। सोशल मीडिया पर वीडियो के वायरल होने से तीखी बहस छिड़ गई। एक यूजर ने लिखा—भाषा थोपना हमारी समावेशी संस्कृति का अपमान है। कुछ का मानना था कि वीडियो पूरी कहानी नहीं दिखाता। फिर भी, यह सवाल गूंजता है— क्या भाषा, जो हमारी पहचान की धरोहर है, अब विवाद और विभाजन का हथियार बन रही है?

भारत में भाषा का विवाद कोई नई बात नहीं। महाराष्ट्र में प्रवासियों और स्थानीय लोगों के बीच तनाव का लंबा इतिहास रहा है। 1960 के दशक में संयुक्त महाराष्ट्र आंदोलन ने मराठी को आधिकारिक दर्जा दिलाया, जो भाषाई गौरव का प्रतीक बना। किंतु समय के साथ यह गौरव कुछ मामलों में आक्रामकता में बदल गया। जुलाई 2025 में मुंबई की लोकल ट्रेन में एक महिला ने गैर-मराठी भाषी को धमकाया। 2019 में भी राजनीतिक कार्यकर्ताओं ने मराठी न बोलने वालों को निशाना बनाया। ये घटनाएं दर्शाती हैं कि भाषा, जो हमारी संस्कृति का आभूषण है, कभी-कभी विभाजन का हथियार बन जाती है। सोशल मीडिया ने इस आग में घी डाला। एक पोस्ट में लिखा गया—मुंबई सबकी है, लेकिन क्या वाकई सबके लिए? वहीं, कुछ यूजर्स ने तर्क दिया कि स्थानीय भाषा का सम्मान जरूरी है, परंतु उसे थोपना अनुचित है।

भारत में 22 आधिकारिक भाषाएं और सैकड़ों बोलियां हैं। संविधान के अनुच्छेद 343 के तहत हिंदी को संघ की आधिकारिक भाषा का दर्जा प्राप्त है, और क्षेत्रीय भाषाओं को समान सम्मान मिला है। 1956 के राज्य पुनर्गठन ने भाषा आधारित राज्यों को जन्म देकर एकता का संदेश दिया था। लेकिन आज, आर्थिक दबाव, बेरोजगारी और शहरीकरण ने भाषाई पहचान को संघर्ष का औजार बना दिया। मुंबई, जहां 40% से अधिक आबादी प्रवासी है, में स्थानीय और बाहरी के बीच तनाव बढ़ा है। यूनेस्को की एक रिपोर्ट के अनुसार, भाषाई विविधता सांस्कृतिक धरोहर है, लेकिन इसे थोपने से सामाजिक संघर्ष बढ़ता है। सोशल मीडिया पर एक सवाल गूंजा—क्या कॉर्पोरेट्स अपने कर्मचारियों को वास्तव में प्रभावी डायवर्सिटी ट्रेनिंग देते हैं? यह सवाल उस महिला यात्री की यूनिफॉर्म की ओर इशारा करता है, जो एक कंपनी से जुड़ी थी, और उसकी आक्रामकता ने इस मुद्दे को और गंभीर बना दिया।

विमान कंपनी ने इस घटना पर रहस्यमयी चुप्पी साध रखी है। वायरल वीडियो में साफ दिखता है कि केबिन क्रू ने कोई ठोस कार्रवाई नहीं की। सोशल मीडिया पर एक यूजर ने तीखा सवाल दागा—शराबी यात्रियों पर तुरंत एक्शन लेने वाली एयरलाइन भाषाई धमकी पर चुप क्यों? यह सवाल गहरी चोट करता है। एविएशन मंत्रालय को तत्काल कड़े दिशानिर्देश लागू करने चाहिए, जो भाषाई उत्पीड़न को घृणा अपराध की श्रेणी में लाए। कॉर्पोरेट्स की जवाबदेही भी कटघरे में है—यदि यूनिफॉर्मधारी कर्मचारी ऐसी हरकत करता है, तो कंपनी की साख और जिम्मेदारी पर गंभीर सवाल उठते हैं। ऐसी घटनाएं यात्रियों का भरोसा चकनाचूर करती हैं। सामाजिक स्तर पर, भाषाई संवेदनशीलता को बढ़ावा देना अनिवार्य है। स्कूलों में बहुभाषी शिक्षा और ₹भाषा जोड़े, न तोड़े₹ जैसे प्रभावशाली सार्वजनिक अभियान इस दिशा में क्रांतिकारी कदम हो सकते हैं।

यह घटना केवल एक विवाद नहीं, बल्कि एक गहरा खतरे का संकेत है। यदि भाषा को हथियार बनाया गया, तो भारत की सांस्कृतिक आत्मा को गहरी ठेस पहुंच सकती है। हमें यह स्मरण रखना होगा कि हमारी विविधता ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति है। मुंबई में बंगाली, तमिल, या हिंदीभाषी को अपनी पहचान छोड़ने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए। मराठी सीखना सम्मान का प्रतीक हो सकता है, पर इसे जबरन थोपना अन्यायपूर्ण है। 2017 में महाराष्ट्र सरकार ने स्कूलों में मराठी अनिवार्य करने की कोशिश की, लेकिन न्यायालय ने इसे खारिज कर दिया, यह साबित करते हुए कि संवाद और सहमति ही एकमात्र रास्ता है। हमारी भाषाएं हमारी ताकत हैं; इन्हें संघर्ष का औजार बनने से रोकना होगा।

यह घटना हमें गहरे आत्ममंथन के लिए विवश करती है—क्या हम सचमुच 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के सपने को साकार कर रहे हैं? भाषा हमारी पहचान की आत्मा है, पर इसे विभाजन का हथियार नहीं, बल्कि एकता का सेतु बनना चाहिए। विमान में घटी इस घटना ने एक कटु सत्य को उघाड़ा—हमें अपनी सांस्कृतिक जड़ों को संजोते हुए एक-दूसरे के प्रति सम्मान और संवेदना को अपनाना होगा। अगली उड़ान में हम सिर्फ सामान नहीं, बल्कि मुस्कान, सहानुभूति और समावेशिता का भाव भी साथ लें। भारत महज एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि दिलों का संगम है। इस संगम को अटूट रखें, ताकि हमारा आकाश हमेशा खुला, उज्ज्वल और एकजुट रहे।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

सीरवी समाज प्रीमियर लीग-8 क्रिकेट प्रतियोगिता व महिला वर्ग खेल आरंभ

जगदीश सीरवी

हैदराबाद सीरवी समाज प्रीमियर लीग क्रिकेट प्रतियोगिता के आठवें संस्करण व महिला वर्ग खेल का आज शुभारंभ हुआ। श्री आईमाताजी की तस्वीर पर माल्यापर्ण व महाआरती के पश्चात प्रतियोगिता मुख्य प्रयोजक, वाहिनी पाइप्स हेमराज सैणचा टुमकुर, ट्राफी प्रायोजक बुधाराम, गौतम काग बीरमगुडा, मैन ऑफ द मैच, प्रायोजक तुलसाराम सिन्दड़ा चिल्कानगर सीरवी समाज मल्लापुर बडेर अध्यक्ष, टॉस का बॉस प्रायोजक रॉयल गोल्ड पॉट मार्केट राजूराम, ओमप्रकाश, हापूराम बर्फा, अंपायर प्रायोजक आर एस सिल्वर पॉट मार्केट घेवरराम, संजय, गोविन्दराम, महेन्द्र, देवेन्द्र, विशेष योगदान जी पी एंटरप्राइसेज आर पी रोड़ अशोक पाण्डे व समाज के गणमान्य अतिथियों एवं टीम के खिलाड़ियों के सान्निध्य में अलियाबाद स्थित सीरवी क्रिकेट ग्राउण्ड एवं लीजेंड क्रिकेट ग्राउंड कीसरा में प्रतियोगिता का शुभारंभ किया गया।

आज यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति में फ्रेन्डस क्लब के सुरेश सैणचा ने बताया कि सीरवी समाज प्रीमियर लीग-8 के तहत समाज के विभिन्न क्षेत्रों की 24 टीमों के मध्य टी-20 क्रिकेट प्रतियोगिता के मैच रविवार को खेले गये। महिला वर्ग के खेलों में एथलेटिक्स तथा पारंपरिक खेल दौड़ की प्रतियोगिता संपन्न हुई तथा क्रिकेट प्रतियोगिता में पहले चरण का उद्घाटन मुकाबला अलवाल व कापरा ग्रेट फाइटर के मध्य खेला गया, जिसमें अलवाल 72 रनों से विजयी रही। चेनाराम सीरवी को सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए प्लेयर ऑफ दि मैच से नवाजा गया। दूसरा मैच आईजी फ्रेंड्स क्लब व केसीजी दम्माईगुडा के बीच खेला गया जीसमे आईजी फ्रेंड्स क्लब 4 विकेट विजयी रहीं मुकेश को मैन ऑफ दि मैच का पुरस्कार दिया गया। तीसरा मैच बालनगर धूम इलेवन व जुबली हिल्स क्लब के माध्य खेला गया, जिसमें बालनगर की टीम 15 रन से विजयी रही। नितेश पंवार को मैन ऑफ दि मैच का पुरस्कार दिया गया। चौथा मैच रामनगर रायल व शंकरपल्ली ब्लास्टर के मध्य खेला गया, जिसमें रामनगर की टीम 23 रन से विजयी रही। मुकेश चौधरी को मैन ऑफ दि मैच का पुरस्कार दिया गया। पांचवां मैच करमनघाट वॉरियर व ऑलविन इलेवन के मध्य खेला गया, जिसमें करमनघाट वॉरियर की टीम 123 रनों से विजयी रही। चंपालाल काग को मैन ऑफ दि मैच का पुरस्कार दिया गया। छठवां मैच शमशाबाद व संगा रेड्डी के मध्य खेला गया, जिसमें शमशाबाद की टीम 38 रनों से विजयी रही। मधुसुदन सीरवी को मैन ऑफ दि मैच का पुरस्कार दिया गया। सातवां मैच टी एम जी टाइटंस व माताजी इलेवन के मध्य खेला गया, जिसमें टी एम जी टाइटंस की टीम 92 रनों से विजयी रहीं। चेतन चौधरी मैन ऑफ दि मैच रहे। आठवां मैच सीरवी टाईगर व नाचाराम स्ट्राइकर के मध्य खेला गया, जिसमें सीरवी टाईगर की टीम 50 रनों से विजेता रही। तुरुणराज चौधरी मैन ऑफ दि मैच रहे। नौवां सिकंदराबाद क्लब व लिंगम्मपल्ली आर्मी के मध्य खेला गया। जिसमें सिकंदराबाद की टीम 138 रनों से विजेता रही राम चौधरी मैन ऑफ दि मैच रहे। दसवें सैनिकपुरी व सीरवी वायरस जिसमें 39 रनों से सैनिकपुरी की टीम विजयी रही। कमलेश मैन ऑफ दि मैच बने। ग्यारहवां अस्टिक मेडचल व एल बी नगर के माध्य खेला गया। जिसमें अस्टिक मेडचल की टीम 5 विकेट से विजयी रही अर्जुन चौधरी मैन ऑफ दि मैच रहे। सीरवी किंग इलेवन के मध्य से खेला गया। जिसमें सीरवी कींग इलेवन ने 15 रनों से विजयी रही। नरेश सीरवी मैन ऑफ दि मैच रहे। महिला वर्ग एथलेटिक्स में में सभी वर्ग के खेल आयोजित हुए जिन खिलाड़ियों ने जीत हासिल की उनको सीरवी समाज प्रिमियर लीग 8 के समापन समारोह में पुरस्कृत किया जायेगा।

पंद्रह लाख टके के इनामी नक्सली रविन्द्र गंझू की पत्नी ललिता देवी गिरफ्तार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, 15 लाख रुपए का इनामी माओवादी नक्सली रविंद्र गंझु की पत्नी ललिता देवी को आज पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है. ललिता देवी पर भी नक्सली गतिविधियों से संबंधित मामले दर्ज थे. न्यायालय के आदेश पर पुलिस ने छापामारी अभियान चलाकर उसे गिरफ्तार किया. लातेहार एसपी कुमार गौरव ने इसकी पुष्टि की है.

बताया जाता है कि कुख्यात नक्सली रविंद्र गंझू भाकपा माओवादी का कमांडर है. इसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस लगातार छापामारी अभियान चला रही है. इस पर कई पुलिस कर्मियों की हत्या का भी आरोप है. इधर रविंद्र की पत्नी ललिता पर भी लंबे समय से नक्सली गतिविधियों में शामिल रहने और कई संगीन मामलों में वांछित होने का आरोप था.

ललिता देवी पूर्व में भी जेल जा चुकी थी पर जमानत मिलने के बाद जब जेल से बाहर आई तो फिर से नक्सली गतिविधियों में शामिल हो गई. मामला दर्ज होने के बाद वह फरार चल रही थी. उसकी गिरफ्तारी के लिए न्यायालय से वारंट भी निकला हुआ था.

लातेहार एसपी कुमार गौरव को गुप्त सूचना मिली कि ललिता देवी लोहरदगा जिला के जोबांग थाना क्षेत्र के इलाके में देखी गई है. सूचना मिलने के बाद पुलिस की एक टीम गठित की गई और छापामारी कर ललिता देवी को गिरफ्तार कर लिया गया. एसपी कुमार गौरव ने बताया कि ललिता देवी को गिरफ्तार करने के बाद न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है.

15 लाख टके के इनामी नक्सली रविंद्र गंझु पर तीन दर्जन से अधिक नक्सली हिंसा के मामले दर्ज हैं. लातेहार और लोहरदगा के इलाके में रविंद्र सक्रिय रहता है. इस इलाके में सक्रिय रहने वाला यह एकमात्र नक्सली कमांडर बचा हुआ है. इस पर एनआईए में भी मामला दर्ज है. इसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस द्वारा लगातार कार्रवाई की जा रही है, पर अभी तक यह पुलिस के हत्थे नहीं चढ़ा है.

लातेहार एसपी कुमार गौरव ने मुख्य धारा से भटके हुए सभी नक्सलियों से अपील किया है कि वह सरेंडर करके सरकार की नई दिशा कार्यक्रम के तहत आत्मसमर्पण योजना का लाभ लें. उन्होंने कहा कि आत्मसमर्पण करने वाले सभी नक्सलियों को सरकारी प्रावधान के तहत पुनर्वास के लिए सुविधा तथा सुरक्षा उपलब्ध कराई जाएगी. जो भी नक्सली आत्मसमर्पण करेंगे उन्हें पुलिस हरसंभव सहयोग भी प्रदान करेगी. एसपी ने कहा कि नक्सलवाद और हिंसा हमेशा विनाश की ओर ले जाता है. इसलिए हिंसा का रास्ता छोड़कर समाज के मुख्य धारा में लौट आएं।

साहित्यकार श्रीकांत की दो पुस्तकों का विमोचन

समाज के प्रति हमारे उत्तरदायित्वों का बोध कराती है कविता – डॉ . स्वाति तिवारी

धार मध्यप्रदेश - कविता किसी संवेदनशील व्यक्ति की भावों की पद्यात्मक अभिव्यक्ति है । यह स्वत : निसृत होती है और प्रयत्न पूर्वक कागज पर उतारी जाती है । कविता हमारी संवेदनाओं को जगाए रखने में सहायक होती है । साथ ही यह हमें अपने मनुष्य होने का अहसास भी कराती है । इसके अलावा समाज के प्रति हमारे उत्तरदायित्वों का बोध भी कराती है । ये उद्गार साहित्यकार डॉ . श्रीकांत द्विवेदी की दो पुस्तकें ' क्षितिज के उस पार ' कविता संग्रह तथा ' उगा चंदा, तेरा यही धंधा ' व्यंग्य संग्रह के विमोचन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ कथा लेखिका डॉ . स्वाति तिवारी ने व्यक्त किए । आगे बोलते हुए डॉ . स्वाति ने बताया कि डॉ . श्रीकांत की विचारात्मक कविताएं मुझे अधिक सशक्त एवं चिंतन से भरी हुई जान पड़ती । कवि का चिंतन व्यक्तिगत न होकर समूचे समाज के लिए है।

समारोह की अध्यक्षता कर रहे सुप्रसिद्ध कार्टूनिस्ट इस्माइल लहरी ने कहा कि व्यंग्य मजाक नहीं बल्कि एक गंभीर विधा है । व्यंग्य को समझना हो तो खुद को समझना पड़ता है । खुद को समझना यानी अपनी को जगाना । तभी सत्य की तलाश होती है । आत्मा की आवाज से लिखे लेखन में परमात्मा की आवाज होती है । समारोह के विशेष अतिथि प्रेस क्लब, इंदौर के महासचिव प्रदीप जोशी ने कहा कि मीडिया के लिए खबरें लिखना एक अलग बात है, जबकि साहित्यिक लेखन एक तरह की शब्द साधना होती है । विशेष अतिथि धार जिला पत्रकार संघ के अध्यक्ष पं . छोटू शास्त्री ने बताया कि किसी भी लेखक का व्यक्तित्व उसके लेखन में झलकता है । इसलिए आज के दौर में सार्थक लेखन बहुत जरूरी है ।

समारोह को मप्र लेखक संघ के अध्यक्ष श्रीवल्लभ विजयवर्गीय, भोज शोध संस्थान के निदेशक डॉ . दीपेन्द्र शर्मा, अभा साहित्य परिषद, धार के अध्यक्ष शरद जोशी, पत्र लेखक संघ के प्रांताध्यक्ष दिनेश तिवारी ' उपवन ' तथा साहित्य वाटिका की अध्यक्ष डॉ. रागिनी स्वर्णकार ने भी संबोधित किया । इस अवसर पर पं . दीनानाथ व्यास स्मृति प्रतिष्ठा समिति की अध्यक्ष डॉ . रूचि बांगडदेव, हैदराबाद

, मप्र जन सम्पर्क विभाग के पूर्व संचालक एवं मीडिया वाला के प्रधान संपादक सुरेश तिवारी, ललित त्रिवेदी ,, कृष्ण कुमार ठक्कर, डॉ . पीएफ जाधव, डॉ . संजय निगम, डॉ . राघवेन्द्र तिवारी, प्रोफेसर सुनील पाठक, कवि संदीप शर्मा, कवि डॉ . लोकेश जड़िया तथा अनेक साहित्यकार, पत्र लेखक, पत्रकार एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे ।

आयोजन की शुरुआत डॉ . मुक्ता त्रिवेदी की सरस्वती वंदना तथा ईवान रावल के स्वागत गीत के साथ हुई । स्वागत भाषण लक्ष्य द्विवेदी ने दिया ।आयोजन के सूत्रधार द्विवेदी परिवार की ओर से अतिथियों का माला, शाल तथा प्रतीक चिह्न देकर सम्मान किया गया । कार्यक्रम का सफल संचालन अंकित त्रिवेदी ने तथा आभार अक्षत द्विवेदी ने किया । यह जानकारी कपिल द्विवेदी द्वारा दी गई ।

प्रेषक - स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

चक्रवात 'मोंथा' तेज़ गति से आ रहा है; 8 ज़िले रेड ज़ोन में, एसआरसी ने चेतावनी दी

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: चक्रवात 'मोंथा' तेज़ी से आ रहा है। राजस्व एवं आपदा प्रबंधन मंत्री ने स्थिति की समीक्षा की है। राज्य आपदा प्रबंधन आयोग (एसआरसी) कार्यालय में एक उच्च-स्तरीय समीक्षा की गई। मंत्री ने बताया कि 8 ज़िले रेड ज़ोन में हैं। चक्रवात का असर इन ज़िलों में दिखाई देगा।मलकानगिरी, कोरापुट, रायगड़ा, गजपति को रेड जोन में शामिल किया गया है।नबरंगपुर, गंजम, कंधमाल, कालाहांडी भी रेड ज़ोन में हैं। खोरधा, पुरी, नयागढ़ जैसे जिले प्रभावित होंगे। भद्रक, जगतसिंहपुर भी प्रभावित हो सकते हैं। मंत्री ने कहा कि हम न केवल रेड ज़ोन के लिए, बल्कि सभी प्रकार की चेतावनियों के लिए भी सतर्क हैं। इस बीच, चक्रवात मोन्था मलकानगिरी से २०० किलोमीटर दूर भूस्खलन करेगा।

मलकानगिरी, कोरापुट, नबरंगपुर के सबसे अधिक प्रभावित होने की संभावना है। इन सभी ज़िलों में तैयारियों पर चर्चा हुई है। सरकार ने इससे निपटने की पूरी तैयारी कर ली है। मंत्री ने कहा कि हमने कल 15 ज़िलों के ज़िला कलेक्टरों से बात की। आज, हमने 30 ज़िलों के ज़िला कलेक्टरों से बात की। गजपति के अनुभव के बाद ओडिया आरएफ टीमें हर जगह तैयार हैं। मलकानगिरी में 4 ओडीआरएएफ और 8 एनडीआरएफ टीमें सतर्क हैं। सभी ज़िलों में अग्निशमन उपकरण तैयार हैं। 8 ज़िलों में १२8 टीमों को तैनात किया गया है। संभावित तूफान के मद्देनजर कल से स्कूल बंद रहेंगे।

चक्रवात 'मोंथा' के कारण 32 ट्रेनें रद्द

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: चक्रवात के कारण एक ट्रेन का मार्ग परिवर्तित किया गया है। दो ट्रेनों का मार्ग परिवर्तित किया गया है। 27 और 28 अक्टूबर के लिए ट्रेनें रद्द कर दी गई हैं। ईस्ट कोस्ट रेलवे ने चक्रवात के कारण 32 ट्रेनों को रद्द करने की घोषणा की है। गोपालपुर के होटल 3 दिनों के लिए बंद कर दिए गए हैं। 27, 28 और 29 अक्टूबर की सभी बुकिंग रद्द करने के आदेश दिए गए हैं।चक्रवात मोन्था के प्रभाव को देखते हुए ज़िला मजिस्ट्रेट ने आदेश जारी किए हैं। मोन्था के कारण दक्षिण ओडिशा के 8 ज़िलों में स्कूलों की छुट्टी कर दी गई है। स्कूल और जन शिक्षा विभाग ने इस संबंध में स्कूलों में छुट्टी की घोषणा की है। कल 30 अगस्त तक 8 ज़िलों में स्कूल बंद रहेंगे। गंजम, गजपति, रायगढ़, कोरापुट, मलकानगिरी, कंधमाल, कालाहांडी और नबरंगपुर में स्कूल बंद रहेंगे। स्कूल और जन शिक्षा विभाग के सभी कर्मचारियों की छुट्टियां रद्द कर दी गई हैं। ज़िला शिक्षा अधिकारी, स्कूल और जन शिक्षा विभाग की ओर से संबंधित ज़िलों में नोडल अधिकारी के रूप में काम करेंगे।

कानपुर में छठपूजा के दूसरे दिन धूमधाम से किया खरना

- यातायात परिवर्तन के साथ पुलिस बल की भी तैनाती

सुनील बाजपेई

कानपुर। छठ महापर्व के दूसरे दिन आज धूमधाम से खरना मनाया गया। इसके तहत खीर खाने के बाद निर्जला वृत रहकर जमीन पर सोया जाता है। इसके लिए नए चावल, नये गुड़, गन्ने के रस आदि सामग्री से मिट्टी के चूल्हा पर आम की लकड़ी से अन्य सामग्री मिलाकर खीर बनाकर सूर्य भगवान एवं षष्ठी मैया को चढ़ाने के बाद लोगों को प्रसाद रूप में वितरित किया।

आज सूर्य देव की बहन छठ देवी को प्रसन्न करने के लिए भगवान सूर्य की आराधना और उनका धन्यवाद किया गया। खरना पर मां गंगा-यमुना यापवित्र नदी या पोखर (तालाब) के किनारे पूजा की गई।

वहीं आर्मापुर नहर, बर्रा नहर और पनकी आदि में नहरों के किनारे जहां भी छठ पूजा के घाट हैं, वहां लोगों ने पहुंच कर पूजा वेदियों को साफ कर उन्हें रंगा और फिर आकर्षक ढंग से सजा घाटों पर बिजली की झालरों से भी सजावट करवाई है। इस दौरान छठ पूजा वाले क्षेत्रों में यातायात परिवर्तन भी किया गया साथ ही पुलिस बल भी तैनात रहा।

आज धूमधाम से खन्ना मनाने वाले श्रद्धालुओं को यकीन है कि षष्ठी मां यानी कि छठ माता बच्चों की रक्षा करने वाली देवी हैं। इस व्रत को करने से संतान को लंबी आयु का वरदान मिलता है और इसलिए छठ पूजा की जाती है।छठी मैया का पूजा करने से नि:संतान दंपत्तियों को संतान सुख की प्राप्ति होती है। छठी मैया संतान की रक्षा करती हैं और उनके जीवन को खुशहाल रखती हैं। छठी मैया की पूजा से सैकड़ों यज्ञों के फल की प्राप्ति होती है।

पुलिस की कार्यप्रणाली पर ही सवाल

रिपोर्ट अंकित गुप्ता दिल्ली

राजस्थान की भिवाड़ी में एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है. इससे पुलिस की कार्यप्रणाली पर ही सवाल खड़े हो गए हैं. भिवाड़ी में तैनात पुलिसकर्मी अपनी ही पुलिस अधीक्षक यानी जिले की एसपी की लोकेशन ले रहे थे और उन पर नजर रख रहे थे. 15 से ज्यादा बार SP की लोकेशन निकाली गई और मोबाइल पर नजर रखी गई. मामले की जानकारी मिलते ही पुलिस विभाग में हड़कंप मच गया और भिवाड़ी में तैनात एक ऐसा ही समेत 7 पुलिसकर्मियों को सस्पेंड किया गया है. खुद पुलिस विभाग साइबर सेल के अधिकारी और कर्मचारी भिवाड़ी एसपी ज्येष्ठा मैत्रेयी की फोन की लोकेशन ट्रेस करते हैं और एसपी कहां जा रही हैं? क्या कर रही हैं? मामला सामने आते ही एसपी ज्येष्ठा मैत्रेई ने साइबर सेल के इंचार्ज एसआई सहित एक हेड कांस्टेबल और पांच आरक्षकों को तुरंत प्रभाव से निलंबित कर दिया है. इस पूरे मामले को लेकर अब एसपी ज्येष्ठा मैत्रेयी ने पुलिस मुख्यालय को जानकारी दी है. जयपुर रेंज के आईजी अजय पाल लांबा ने कहा कि मामले में एक उच्च स्तरीय जांच चल रही है. इस मामले में सात लोग निलंबित किए गए हैं. इन लोगों ने कई बार पुलिस अधीक्षक की लोकेशन निकाली थी.एसपी ज्येष्ठा मैत्रेयी ने हमारे पत्रकार से फोन कॉल पर बात करते हुए कहा कि वह अपनी पूरी ईमानदारी से काम कर रही हैं. इस बात का विश्वास नहीं था कि उनके विभाग के लोग ही उन पर नजर रख रहे हैं. उनको इस मामले की बिल्कुल भी जानकारी नहीं थी कि उसके पुलिस महकमे के कर्मचारी और अधिकारी ही उनकी लोकेशन ट्रेस कर रहे हैं और उनकी गतिविधियों पर नजर रखी जा रही है. गोपनीय रूप से मामले की जानकारी लगने के बाद जब उन्होंने इस मामले की सत्यता की जांच करवाई तो मामला सही पाया गया।

“डॉ. लॉजिस्टिक्स के साथ जानिए – इन्कोटर्म्स क्या हैं और क्यों हैं जरूरी”

- डॉ. अंकुर शरण

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार (International Trade) में जब कोई सामान एक देश से दूसरे देश जाता है, तो कई सवाल उठते हैं – कौन माल को जहाज़ तक पहुँचाएगा? बीमा कौन करेगा? टैक्स या कस्टम कौन देगा? और अगर रास्ते में माल को कोई नुकसान हो गया तो जिम्मेदार कौन होगा?

इन सारे सवालों के जवाब “Incoterms” (International Commercial Terms) के ज़रिए तय होते हैं।

इन्हें International Chamber of Commerce (ICC) द्वारा बनाया गया है ताकि खरीदार (Buyer) और विक्रेता (Seller) के बीच किसी तरह का भ्रम या विवाद न हो।

Incoterms तय करते हैं कि माल की जिम्मेदारी, खर्च, बीमा और कागज़ात किसकी ज़िम्मेदारी होगी – खरीदार की या विक्रेता की।

आइए, इन्हें आसान भाषा में समझते हैं 👇

◈ 1. EXW – Ex Works (कारखाने से सामान देना)

इसका मतलब है कि विक्रेता (Seller) की ज़िम्मेदारी सिर्फ अपने कारखाने या गोदाम से माल तैयार कर देना है।

बाकी सारा काम – ट्रांसपोर्ट, लोडिंग, बीमा, कस्टम क्लीयरेंस और डिलीवरी – सब कुछ खरीदार (Buyer) को करना पड़ता है।

👉 सरल शब्दों में: “माल मेरे गेट तक, बाकी तुम्हारी जिम्मेदारी।”

◈ 2. FCA – Free Carrier (माल को नामित कैरियर तक पहुँचाना)

इसमें विक्रेता माल को किसी तय जगह या ट्रांसपोर्ट एजेंट (Carrier) तक पहुँचा देता है।

इसके बाद सारी जिम्मेदारी खरीदार की होती है।

👉 सरल शब्दों में: “मैं ट्रक तक पहुँचा दूँगा, उसके बाद तुम्हारा काम।”

◈ 3. FOB – Free On Board (जहाज़ पर माल चढ़ाने तक)

यह समुद्री व्यापार (Sea Shipment) में सबसे ज़्यादा प्रयोग होने वाला टर्म है।

Seller माल को जहाज़ पर चढ़ाने तक जिम्मेदार होता है।

जैसे ही माल जहाज़ पर चढ़ जाता है, जिम्मेदारी Buyer की हो जाती है – बीमा, फ्रेट, डिलीवरी आदि।

👉 सरल शब्दों में: “माल जहाज़ पर चढ़ा दिया, अब तुम्हारी बारी।”

◈ 4. CIF – Cost, Insurance & Freight (लागत + बीमा + भाड़ा)

यह भी समुद्री व्यापार में उपयोग होता है।

इसमें Seller माल को जहाज़ पर चढ़ाता है, बीमा करवाता है और गंतव्य बंदरगाह (Destination Port) तक भाड़ा भरता है।

परंतु कस्टम और डिलीवरी Buyer को करनी होती है।

👉 सरल शब्दों में: “मैं बीमा और भाड़ा दूँगा, पर बंदरगाह से आगे तुम्हारी जिम्मेदारी।”

◈ 5. DDP – Delivered Duty Paid (सारी जिम्मेदारी Seller की)

इसमें विक्रेता सब कुछ करता है – माल तैयार करना, ट्रांसपोर्ट, बीमा, टैक्स, कस्टम और खरीदार के दरवाज़े तक डिलीवरी।

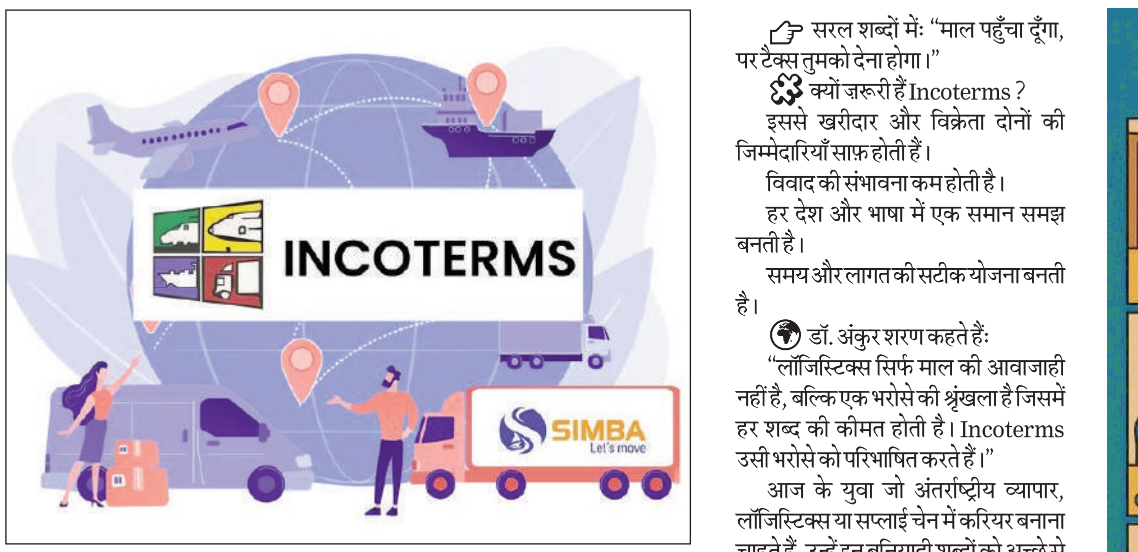

Buyer को बस माल लेना है।

👉 सरल शब्दों में: “तुम बस माल लो, बाकी सब मेरा काम।”

◈ 6. DDU – Delivered Duty Unpaid (टैक्स छोड़कर बाकी सब Seller करेगा)

Seller माल को Buyer के देश तक पहुँचा देता है, लेकिन वहाँ का टैक्स या कस्टम ड्यूटी Buyer को देना पड़ता है।

👉 सरल शब्दों में: “माल पहुँचा दूँगा, पर टैक्स तुमको देना होगा।”

क्यों ज़रूरी हैं Incoterms?

इससे खरीदार और विक्रेता दोनों की जिम्मेदारियाँ साफ़ होती हैं।

विवाद की संभावना कम होती है।

हर देश और भाषा में एक समान समझ बनती है।

समय और लागत की सटीक योजना बनती है।

🌍 डॉ. अंकुर शरण कहते हैं:

“लॉजिस्टिक्स सिर्फ माल की आवाजाही नहीं है, बल्कि एक भरोसे की श्रृंखला है जिसमें हर शब्द की कीमत होती है। Incoterms उसी भरोसे को परिभाषित करते हैं।”

आज के युवा जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, लॉजिस्टिक्स या सप्लाई चेन में करियर बनाना चाहते हैं, उन्हें इन बुनियादी शब्दों को अच्छे से समझना चाहिए।

क्योंकि Incoterms समझना मतलब व्यापार की भाषा समझना है।

लेखक: डॉ. अंकुर शरण (सप्लाई चेन एवं लॉजिस्टिक्स विशेषज्ञ, पर्यावरणविद्)

श्रृंखला: Dr. Logistics – भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ को समझने की दिशा में एक प्रयास

drlogistics.ankur@gmail.com

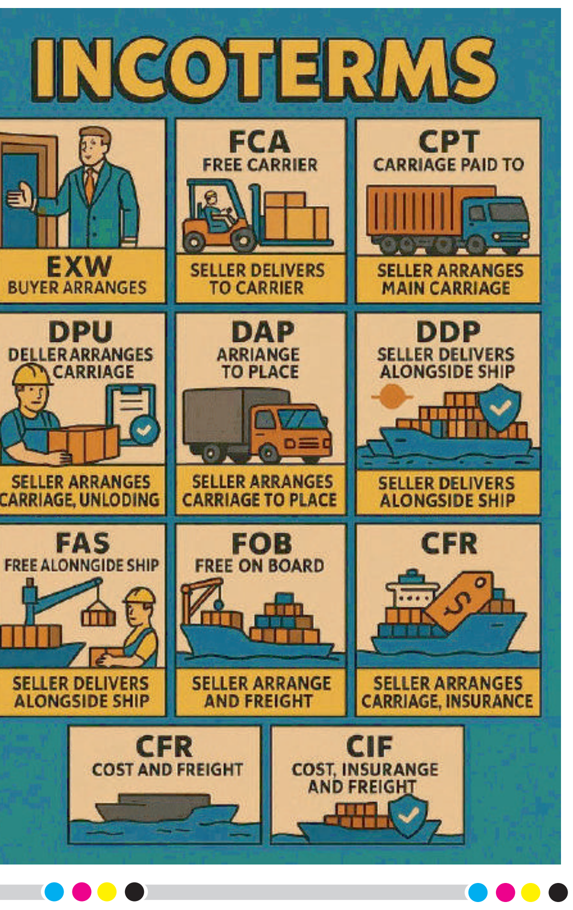

एनसीपी बिहार में जनता की अनकही पीड़ा का संवाहक बनेगी, जीत का परचम लहराने को तैयार उम्मीदवारों का अटूट विश्वास - डॉ राजकुमार यादव

परिवहन विशेष न्यूज

पटना: डॉ. राज कुमार यादव (केंद्रीय पर्यवेक्षक बिहार विधानसभा चुनाव 2025) राष्ट्रवादी कॉंग्रेस पार्टी ने कहा कि बिहार की धरती पर राजनीतिक समीकरणों का जटिल जाल बुनते हुए भी राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) ने अपनी दृढ़ संकल्पशक्ति से एक नई उम्मीद की किरण जला दी है। महागठबंधन और एनडीए के गणितीय दबदबे के बीच एनसीपी न केवल अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रही है, बल्कि जनता की गूंजती आवाज को विधानसभा की चौखट तक पहुंचाने का वादा कर रही है। पार्टी के कई आश्वस्त उम्मीदवारों का मानना है कि वे न केवल जीत का परचम लहराएंगे, बल्कि बिहार की मिट्टी से जुड़े उन लाखों सपनों को साकार करेंगे, जो वर्षों से उपेक्षित पड़े हैं।

विभिन्न राजनीतिक समीकरणों के बीच एनसीपी ने गणनात्मक सूझबूझ के साथ अपनी रणनीति बुनी है। पार्टी ने बिहार की 243 विधानसभा सीटों में से रणनीतिक रूप से चयनित क्षेत्रों में अपनी उम्मीदवारी मजबूत की है, जहां स्थानीय मुद्दों—जैसे बेरोजगारी, किसानों की कर्जमाफी, युवाओं की शिक्षा और महिलाओं की सुरक्षा—पर जनता का गुस्सा चरम पर है। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष सूर्यकान्त सिँह ने कहा, "एनसीपी बिहार की जनता का सच्चा साथी बनेगी। हमारा सिंबल घड़ी न केवल एक चुनाव चिन्ह है, बल्कि उन करोड़ों बिहारियों की भावनाओं का प्रतीक है, जो विकास के नाम पर ठगे गए हैं। हम तीन से चार विधायकों के साथ विधानसभा में प्रवेश करेंगे, लेकिन हमारा असली लक्ष्य है—जनता के हर दर्द को संसद की आवाज बनाना।"

पार्टी के उम्मीदवारों में जोश और उत्साह का संचार है। पटना साहिब से उम्मीदवार ने भावुक स्वर में कहा, "बिहार की बेटियां अब चुप नहीं रहेंगी। एनसीपी हमें वह मंच दे रही है, जहां हम अपनी पीड़ा को न केवल व्यक्त करेंगी, बल्कि समाधान भी लाएंगी। जीत हमारी नहीं, जनता की होगी।" इसी प्रकार, नरकटियागंज से दावेदार डॉ राशिद अजीम ने जोर देकर कहा, "एनडीए-महागठबंधन के दबाव में हम टूटने वाले नहीं। हमारी गणना छोटी हो सकती है, लेकिन हमारी भावना असीम है। जनता के साथ ताल ठोकते हुए हम विधानसभा में प्रवेश करेंगे और उन नीतियों को चुनौती देंगे, जो गरीबों को लूट रही हैं।₹

एनसीपी की यह यात्रा केवल संख्याओं का खेल नहीं, बल्कि भावनाओं का संनादन है। पार्टी ने विभिन्न जातिगत, सामाजिक और क्षेत्रीय समीकरणों को ध्यान में रखते हुए उम्मीदवार चुने हैं, जो न केवल मजबूत संगठनात्मक पृष्ठभूमि रखते हैं, बल्कि जनता के दिलों से जुड़े हुए हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, एनसीपी की यह रणनीति बिहार के ग्रामीण और शहरी दोनों इलाकों में प्रभाव डालेगी, जहां पारंपरिक दलों की थकावट साफ नजर आ रही है। पार्टी का दावा है कि तीन से चार सीटों पर स्पष्ट बढ़त हासिल हो चुकी है, और बाकी क्षेत्रों में भी त्रिकोणीय मुकाबले में एनसीपी निर्णायक भूमिका निभाएगी।

रंजन प्रियदर्शी, अध्यक्ष चुनाव अभियान समिति-बिहार ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, "बिहार की राजनीति अब बदल रही है। एनसीपी वह ताकत है जो जनता को एकजुट करेगी। हमारी जीत केवल विधायकों की संख्या नहीं, बल्कि बिहार के उज्ज्वल भविष्य की शुरुआत होगी। आइए, हम सब मिलकर इस परचम को लहराएं।

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी बिहार के लोगों से अपील करती है कि वे इस बदलाव का हिस्सा बनें।

"तो आइए, इस चुनाव में न केवल वोट दें, बल्कि अपना दिल दें। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी को चुनें, क्योंकि हम वादे नहीं, वचन देते हैं। आपका हर वोट बिहार का भविष्य लिखेगा। जय बिहार! जय हिंद!"

- डॉ यादव

थैलेसीमिया ग्रस्त बच्चे को एचआईबी खून चढ़ाने पर राजधानी से टीम पहुंची चाईबासा

मामले पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन का रुख सख़्त, पश्चिमी सिंहभूम में 515 मरीज हैं एचआईबी संक्रमित

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची। पश्चिमी सिंहभूम जिले में चाईबासा सरकारी अस्पताल में रक्त चढ़ाने के बाद कथित तौर पर पाँच बच्चों के एचआईवी पॉजिटिव होने की घटना की जांच के लिए रांची से एक उच्च-स्तरीय चिकित्सा टीम रांची से चाईबासा पहुंची है। यह घटना राज्य के स्वास्थ्य विभाग में चिंता का विषय है, और झारखंड हाईकोर्ट ने भी इस मामले में स्वास्थ्य विभाग और सिविल सर्जन से रिपोर्ट मांगी है। यह मामला तब सामने आया जब थैलेसीमिया से पीड़ित एक बच्चे के परिवार ने आरोप लगाया कि उसे संक्रमित रक्त चढ़ाया गया था, जिसके बाद अन्य बच्चों के भी एचआईवी पॉजिटिव होने का पता चला। रांची से स्वास्थ्य सेवा निदेशक डॉ. दिनेश कुमार के नेतृत्व में पाँच सदस्यीय मेडिकल टीम को जांच के लिए भेजा गया है।

सनद रहे कि चाईबासा के सदर अस्पताल के ब्लड बैंक मे रक्त चढ़ाने के बाद कम से कम पाँच बच्चे एचआईवी पॉजिटिव पाए गए हैं। एक परिवार ने शिकायत की कि उनके थैलेसीमिया से पीड़ित बच्चे को एचआईवी संक्रमित रक्त चढ़ाया गया था।झारखंड हाईकोर्ट ने इस मामले में राज्य स्वास्थ्य सचिव और जिला सिविल सर्जन से रिपोर्ट मांगी है।

उत्तर समाचार लिखे जाने तक चाईबासा से मिली जानकारी के अनुसार टीम डॉक्टर से बातचीत कर रक्त नमूना को रांची ले गई। बैठक में यह भी आशंका जताई गई की उस वार्ड में 5 और भी बच्चे एडमिट थे। उन बच्चों को भी एचआईवी ग्रसित हो सकता है। टीम ने स्पष्ट किया कि जल्द ही सरकार को विस्तृत रिपोर्ट सौपी जाएगी। झारखंड के स्वास्थ्य सेवा निदेशक डा दिनेश ने बताया कि संबंधित बच्चे को 13 सितंबर 2025 को रक्त चढ़ाया गया था। वही 18 अक्टूबर को उनकी एचआईवी जांच की गई जिसमें बच्चा में एचआईवी पॉजिटिव पाया गया। अब संक्रमण के कारण का पता लगाया जा रहा है। इस दिशा में सिविल सर्जन उपाध्यक्ष और संबंधित अधिकारियों से बातचीत की गई। फिलहाल चाईबासा जिले में 515 मरीज एचआईवी संक्रमित है।

छप्पन वर्षीय रेप के आरोपी को प0 सिंहभूम में पीट-पीटकर मार डाला

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम जिले पुनः एक दिल दहला देने वाला मामला सामने आया है, यहां ग्रामीणों ने एक 56 वर्षीय व्यक्ति को कथित रूप से रेप के आरोप में नंगा घुमाकर बेरहमी से पीट-पीटकर मार डाला. यह घटना शुक्रवार रात सोनुआ थाना क्षेत्र के देवमबीर गांव में हुई. मृतक पर आरोप था कि उसने गांव की एक मानसिक रूप से बीमार महिला के साथ दुष्कर्म किया था.

बताया जाता है कि आरोपी जब शुक्रवार रात शौच के लिए घर से बाहर निकला, तभी गुस्से से भरे ग्रामीणों ने उसे पकड़ लिया. लोगों ने पहले उसे नंगा कर पूरे गांव में चप्पलों की माला पहनाकर घुमाया और फिर एक कमरे में बंद करके लाठियों से इतना पीटा कि उसकी मौके पर ही मौत हो गयी। सनुआ पुलिस ने मिडिया को बताया "गांव के टेपसाई टोला के रहने वाले साइमन तिर्की को कथित तौर पर इलाके में नंगा घुमाया गया और एक कमरे में बंद करके पीटा गया, जिससे उसकी मौत हो गई." उन्होंने कहा कि शव शनिवार सुबह कमरे से बरामद कर लिया गया और पोस्टमॉर्टम के लिए चाईबासा के सदर अस्पताल भेज दिया गया।

चक्रधरपुर के एसडीपीओ शिवम प्रकाश ने भी मिडिया को जानकारी देते हुए कहा है कि पुलिस ने हत्या में शामिल दो महिलाओं को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है. उन्होंने कहा, "मृतक के परिवार की शिकायत पर हत्या का मामला दर्ज किया गया है. वहीं, मानसिक रूप से बीमार महिला के परिजनों ने भी रेप की शिकायत दर्ज कराई है. पुलिस दोनों मामलों की जांच कर रही है." घटना के बाद से गांव में तनाव का माहौल है. पुलिस बल तैनात कर दिया गया है ताकि कोई अप्रिय स्थिति न बने. फिलहाल, पुलिस सभी आरोपों और घटनाक्रम की गहराई से जांच कर रही है।

सनातन सेवा समिति पंजाब के माजा ज़ोन का हुआ शुभारंभ

पंजाब सरकार के गौ सेवा आयोग एवं तीर्थ यात्रा समिति का रहेगा सहयोग!

अमृतसर, 26 अक्टूबर (साहिल बेरी)

धार्मिक एवं सामाजिक मूल्यों को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए आज सनातन सेवा समिति पंजाब के माजा ज़ोन का औपचारिक शुभारंभ किया गया। यह समिति पंजाब सरकार के गौ सेवा आयोग और तीर्थ यात्रा समिति के सहयोग से धर्म, सेवा और संस्कारों के प्रसार के लिए कार्य करेगी।

कार्यक्रम श्री विजय शर्मा (राष्ट्रीय अध्यक्ष, सनातन सेवा समिति) के नेतृत्व में आयोजित हुआ तथा श्री अजय गुप्ता (विधायक, अमृतसर सेंट्रल) मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

इस अवसर पर आयोजित कार्यकारिणी बैठक में श्री प्रणव धवन को माजा ज़ोन इंचार्ज, श्री अशोक कनौजिया — इंचार्ज अमृतसर शहरी, श्री संजीव शर्मा — सचिव अमृतसर शहरी, श्री संजीव खन्ना — वरिष्ठ सचिव अमृतसर शहरी, श्री मनरोप आनंद — इंचार्ज अमृतसर ग्रामीण, श्री अशोक वर्मा — संयोजक अमृतसर शहरी, श्री शरद वशिष्ठ — इंचार्ज अमृतसर सेंट्रल, श्री सुनील छाबड़ा — इंचार्ज अमृतसर नॉर्थ, श्री देव आनंद शर्मा — इंचार्ज अमृतसर साउथ, श्री पंकज शर्मा — इंचार्ज अमृतसर वेस्ट, श्री राहुल कुमार — इंचार्ज अमृतसर अटारी, श्री विजय प्रभाकर — इंचार्ज बटाला, श्री दीपक सूद — इंचार्ज तरनतारन नियुक्त किया गया है।

यह नियुक्ति समिति के संगठनात्मक ढांचे को और सुदृढ़ बनाने तथा धार्मिक व सामाजिक कार्यों को जमीनी स्तर पर अधिक प्रभावी रूप से लागू करने की दिशा में एक अहम पहल है।

कार्यक्रम के दौरान वक्ताओं ने कहा कि सनातन सेवा समिति पंजाब राज्य सरकार की उन योजनाओं का एक सशक्त सहयोगी अंग बनेगी, जो धार्मिक पर्यटन, गौ सेवा, और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण को बढ़ावा देती हैं।

इस अवसर पर श्री विजय शर्मा ने कहा कि समिति के सदस्य पंजाब सरकार के साथ मिलकर समाज के उत्थान, धर्म प्रचार-प्रसार और सेवा कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाएँगे। उन्होंने समिति के आदर्शों —

"सत्य, सेवा और संस्कार — यही सनातन का आधार।"

को समाज के हर वर्ग तक पहुँचाने का संकल्प दोहराया।

कार्यक्रम सौहार्दपूर्ण और गरिमामय वातावरण में सम्पन्न हुआ। सभी उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने नव नियुक्त टीम को शुभकामनाएँ दीं और समिति की इस नई शुरुआत की सराहना की।

मेयर और कमिश्नर ने गुरुद्वारा गुरु के महल क्षेत्र का दौरा किया – गुरु तेग बहादुर जी के 350वें शहीदी दिवस की तैयारियों की समीक्षा

अमृतसर, 27 अक्टूबर (साहिल बेरी)

श्री गुरु तेग बहादुर जी के 350वें शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की तैयारियों के मद्देनज़र, नगर निगम अमृतसर के मेयर श्री जतिंदर सिंह भाटिया और कमिश्नर श्री बिक्रमजीत सिंह शेरगिल ने आज गुरुद्वारा गुरु के महल क्षेत्र का दौरा किया और आसपास चल रहे विकास एवं सौंदर्यीकरण कार्यों की समीक्षा की।

दौरे के दौरान अधिकारियों ने सफाई व्यवस्था, सड़क मरम्मत, प्रकाश व्यवस्था और भवनों के बाहरी स्वरूप को बेहतर बनाने से संबंधित कार्यों का निरीक्षण किया, ताकि सभी व्यवस्थाएँ इस पवित्र अवसर से पहले समयबद्ध तरीके से पूरी की जा सकें।

इस अवसर पर अतिरिक्त कमिश्नर सुरिंदर सिंह तथा निगम के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहे। कमिश्नर ने संबंधित विभागों को निर्देश दिए कि क्षेत्र में स्वच्छता और सौंदर्य बनाए रखा जाए, ताकि श्रद्धालुओं को गुरुपर्व के दौरान किसी प्रकार की असुविधा न हो।

मेयर ने कहा कि सभी कार्य पूर्ण समर्पण और श्रद्धा से किए जाएं, जिससे श्री गुरु तेग बहादुर जी के सर्वोच्च बलिदान की भावना को सच्चे अर्थों में अभिव्यक्त किया जा सके।

डोप टेस्ट सर्टिफिकेट के लिए 15,000 रुपए रिश्वत लेते सुरक्षा गार्ड को विजिलेंस ब्यूरो ने किया गिरफ्तार

चंडीगढ़, 27 अक्टूबर (साहिल बेरी)

पंजाब विजिलेंस ब्यूरो ने सोमवार को सिविल अस्पताल बाबा बकाला साहिब, जिला अमृतसर में तैनात एक सुरक्षा गार्ड जतिंदर सिंह को 15,000 रुपए की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया है।

आज यहां इस बात का खुलासा करते हुए राज्य विजिलेंस ब्यूरो के एक आधिकारिक प्रवक्ता ने बताया कि आरोपी को रेशम सिंह की शिकायत के आधार पर गिरफ्तार किया गया है। शिकायतकर्ता ने विजिलेंस ब्यूरो को दी गई शिकायत में आरोप लगाया था कि उक्त आरोपी ने हथियार लाइसेंस के लिए नेगेटिव डोप टेस्ट सर्टिफिकेट जारी करवाने के बदले 15,000 रुपए की रिश्वत मांगी थी।

प्रवक्ता ने बताया कि शिकायत की प्रारंभिक जांच के बाद विजिलेंस ब्यूरो की फ्लाइंग स्क्वाड टीम ने जाल बिछाया, जिसके दौरान आरोपी को दो सरकारी गवाहों की मौजूदगी में शिकायतकर्ता से 15,000 रुपए रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों पकड़ लिया गया।

इस संबंध में आरोपी के खिलाफ भ्रष्टाचार निरोधक कानून की धारा 7(ए) के तहत मोहाली स्थित विजिलेंस ब्यूरो के फ्लाइंग स्क्वाड थाने में मामला दर्ज किया गया है।

प्रवक्ता ने आगे बताया कि गिरफ्तार आरोपी से पूछताछ जारी है। पूछताछ के दौरान सामने आए तथ्यों के आधार पर अपराध में अन्य आरोपियों की संलिप्तता और कार्यप्रणाली की जांच की जा रही है। आरोपी को कल सक्षम अदालत में पेश किया जाएगा और मामले की आगे जांच जारी है।

ज़िला प्रशासन की कार्रवाई — सदर क्षेत्र में नशा तस्करों की अवैध संपत्ति ढहाई गई

अमृतसर, 27 अक्टूबर (साहिल बेरी)

नशे के खिलाफ राज्य सरकार की ज़ीरो टॉलरेंस नीति के तहत आज अमृतसर ज़िला प्रशासन द्वारा थाना सदर क्षेत्र के अधीन संधू कॉलोनी, 88 फुट रोड में नशीले पदार्थों की तस्करी से जुड़े परिवार की अवैध रूप से बनाई गई संपत्ति को गिरा दिया गया।

यह कार्रवाई ज़िला प्रशासन और अमृतसर पुलिस की संयुक्त मुहिम के तहत की गई, जिसमें कई विभागों के अधिकारी शामिल हुए।

उक्त संपत्ति रणजीत सिंह उर्फ़ राणा पुत्र नरिंदर सिंह और उसके पारिवारिक सदस्यों की थी, जो एनडीपीएस एक्ट के तहत कई मामलों में नामज़द हैं। यह परिवार नशीले पदार्थों की तस्करी और उससे जुड़ी आपराधिक गतिविधियों में सक्रिय रहा है।

दोषियों का विवरण और उनके खिलाफ दर्ज मामले:

1. रणजीत सिंह उर्फ़ राणा, पुत्र नरिंदर सिंह, निवासी नं. 619, गली नं. 4, संधू कॉलोनी, 88 फुट रोड, अमृतसर।
   - कुल मामले: FIR – 05, DDR – 01
2. हरप्रीत सिंह उर्फ़ हरप्रताप सिंह उर्फ़ हैप्पी, पुत्र रणजीत सिंह, वही पता।
   - कुल मामले: FIR – 07, DDR – 03
   - वर्तमान स्थिति: जेल में बंद
3. गुरप्रताप सिंह, पुत्र रणजीत सिंह, निवासी नं. 619, गली नं. 4, संधू कॉलोनी, 88 फुट रोड, अमृतसर।
   - कुल मामले: FIR – 02, DDR – 01
   - वर्तमान स्थिति: जेल में बंद
4. प्रियंका, पत्नी हरप्रताप सिंह उर्फ़ हैप्पी, वही पता।
   - कुल मामले: FIR – 01
   - वर्तमान स्थिति: जेल में बंद

ज़िला प्रशासन की यह कार्रवाई नशा तस्करों के खिलाफ एक कड़ा संदेश देने के लिए की गई है कि नशे से जुड़ा कोई भी व्यक्ति किसी भी प्रकार की राहत का पात्र नहीं होगा।

इस वर्ष अब तक अमृतसर ज़िले में एनडीपीएस एक्ट के तहत 1190 मामले दर्ज कर 2220 व्यक्तियों को गिरफ़्तार किया गया है। अब तक की बरामदगी में 258.707 किलोग्राम हेरोइन, 30.152 किलोग्राम अफीम, 325.577 किलोग्राम अन्य नशीले पदार्थ, ₹2.91 करोड़ की ड्रग मनी और 100 वाहन शामिल हैं।

ज़िला प्रशासन और पुलिस ने दृढ़ संकल्प व्यक्त किया है कि नशे के इस दुष्चक्र को जड़ से समाप्त करने के लिए इस प्रकार की सख़्त कार्रवाइयाँ भविष्य में भी जारी रहेंगी।

छठ का पहला अर्घ्य: आस्था की लहरों में डूबा शहर

डेढ़ दर्जन घाटों पर दो लाख श्रद्धालुओं का अर्घ्य अर्पण

अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य अर्पण करने लगा तांता

समाजिक संगठनों व प्रशासन ने संभाली सेवा व सुविआ की कमान

उदीयमान सूर्य को अर्घ्य के साथ आज छठ का समापन

राउरकेला: सूर्य उपासना और लोक आस्था के महापर्व छठ पूजा का पहला अर्घ्य सोमवार की शाम राउरकेला में श्रद्धा और उल्लास के माहौल में सम्पन्न हुआ। अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य अर्पण करने के लिए शहर और आसपास के क्षेत्रों में डेढ़ दर्जन घाटों और आधा दर्जन तालाबों पर दो लाख से अधिक श्रद्धालु उमड़ पड़े।

ब्राह्मणी, कोयल और शंख नदी के तटों पर, साथ ही बालू घाट, रूपटोला घाट, आदित्य घाट, सेक्टर-16 घाट, वेदव्यास, जमुना ढीपा, गोपबंधुपाली और बंडामुंडा तालाबों पर श्रद्धालुओं की अपार भीड़ रही। व्रतधारी महिलाओं और पुरुषों ने 36 घंटे के कठिन निर्जला उपवास के बाद ठंडे जल में खड़े होकर सूर्य देवता को फल-फूल, सुप, दऊरा और ठेकुआ से अर्घ्य अर्पित किया।

सूर्यास्त के समय 'छठी मैया के जयकारे' और 'सूर्य भगवान की जय' के गगनभेदी नारे से संपूर्ण वातावरण गूंज उठा। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक हर वर्ग के लोगों में भक्ति की अभूतपूर्व भावना दिखाई दी।

राउरकेला महानगर निगम और स्थानीय प्रशासन ने घाटों की स्वच्छता और प्रकाश व्यवस्था सुनिश्चित की, वहीं राउरकेला पुलिस ने सुरक्षा और ट्रैफिक व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया। कई सामाजिक संगठनों ने घाटों पर सेवा केंद्र लगाकर श्रद्धालुओं की सहायता की।

यह पहला अर्घ्य न केवल सूर्य उपासना का प्रारंभ है, बल्कि समृद्धि, स्वास्थ्य और जीवन की पवित्रता की कामना का प्रतीक भी है। मंगलवार की प्रातःकालीन बेला में श्रद्धालु उदीयमान सूर्य को अर्घ्य अर्पित कर 36 घंटे का उपवास पारण करेंगे, जिसके साथ ही चार दिवसीय लोक आस्था का यह महापर्व छठ सम्पन्न होगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023